मई 2024 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 08 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

लोकतंत्र, व्रत और अणुव्रत

अणुविभा

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST 2024

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024

मुख्य विषय

व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण

प्रतियोगिताएं

चित्रकला	गायन (एकल)	भाषण
निबंध	गायन (समूह)	कविता

राष्ट्रीय विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार

स्तर-1 : कक्षा 3-8 ■ स्तर-2 : कक्षा 9-12

सहभागिता

15+ राज्य 200+ शहर/कस्बे 1+ लाख बच्चे

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

https://anuvibha.org/acc acc@anuvibha.org

+91-91166-34514 +91-91166-34517

आयोजक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

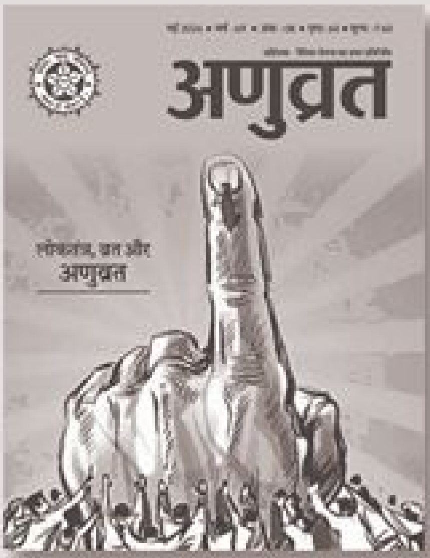

वर्ष 69 • अंक 8 • कुल पृष्ठ 60 • मई, 2024

सम्पादक
संचय जैन

सह-सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट	क्रिएटिव्स	चित्रांकन
मनीष सोनी	**आशुतोष रॉय**	**मनोज त्रिवेदी**

अविनाश नाहर
अध्यक्ष

भीखम सुराणा
महामंत्री

राकेश बरड़िया
कोषाध्यक्ष

सुरेन्द्र नाहटा
संयोजक, पत्रिका प्रसार

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	-	₹ 60
एक वर्षीय	-	₹ 750
त्रैवर्षीय	-	₹ 1800
पंचवर्षीय	-	₹ 3000
दसवर्षीय	-	₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs)	-	₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक

A/c No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::

इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुविभा

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512

■ ■ ■

अणुव्रत आंदोलन असाम्प्रदायिक और सार्वभौम है। यह चाहे जिस नाम से चले, हमें काम से मतलब है और इसका नामकरण चाहे जो भी कर दिया जाए, लाभ वही होगा। इसलिए अपेक्षा यह है कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित नैतिक अभ्युत्थान के इस तथ्य को समझ, परख और सीखकर जीवन में अनुसरण करें।

-लोकनायक
जयप्रकाश नारायण

■ ■ ■

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- निर्वाचन आचार संहिता और मतदान — 06
  आचार्य तुलसी
- लोकतंत्र और अणुव्रत — 08
  आचार्य महाप्रज्ञ
- मैत्री का भाव विश्व में फैले — 11
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- अणुव्रत : एक ईश्वरीय देन — 14
  प्रो. श्रीमन्नारायण
- धर्म और राजनीति का... — 16
  डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
- अणुव्रती कार्यकर्ता की भूमिका — 18
  डॉ. महेन्द्र कर्णावट
- चुनाव प्रचार के बदलते तरीके — 20
  अमरपालसिंह वर्मा
- भ्रष्टाचार का उपचार है जरूरी — 22
  राजेश पाठक
- हमारा परिवार... — 24
  लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

कहानी

- भाग्य — 26
  दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

काव्य

- परहित की हो कामना... — 25
  राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव
- भू को स्वर्ग बनाएं — 29
  तरुण सेठिया

लघुकथा

- मैं गुमशुदा — 17
  राजेश अरोड़ा
- नजरिया और नजारे — 25
  इंजी. आशा शर्मा

- संपादकीय — 05
- परिचर्चा — 30
- डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम — 35
- राजनीति का आकाश और अणुव्रत — 36
- 11वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन : एक रिपोर्ट — 37
- महाराष्ट्र स्तरीय कार्यकर्ता संगोष्ठी — 39
- अणुव्रत चुनावशुद्धि अभियान : एक रिपोर्ट — 40
- अणुव्रत संकल्प यात्रा : एक रिपोर्ट — 44
- अणुव्रत बालोदय शिविर — 47
- पर्यावरण जागरुकता अभियान : एक रिपोर्ट — 48
- अणुव्रत की बात — 52
- अणुव्रत काव्यधारा : एक रिपोर्ट — 53
- पाठक परख — 54
- अणुव्रत समाचार — 56

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

■ सम्पादकीय ■

राजनीति : नीति और अनीति की भूलभुलैया

राजनीति व्यक्ति के जीवन को गहरे तक प्रभावित करती है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो यह कह सके कि वह राजनीति से पूर्णत: अछूता है। कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से राजनीति हमारी चिंतनधारा को और हमारी जीवनशैली को भी प्रभावित करती है। इस प्रभाव से हम कितने भिज्ञ हैं और कितने अनभिज्ञ - यह आत्मचिंतन की बात हो सकती है! विभिन्न देशों में अलग-अलग शासन पद्धति प्रचलन में होती है लेकिन राजनीति से किसी भी देश का नागरिक बच सके, यह संभव नहीं लगता।

हालात बदलते हैं
जज्बात बदलते हैं
कुदरत का नियम है
दिन और रात
हर रोज बदलते हैं।

बदलाव के
इस नियम की आड़ में
कुछ लोग
बहुत कुछ बदल देते हैं
आचार बदलते हैं
विचार बदलते हैं
और मौका देख
शिष्टाचार बदल देते हैं।

किन्तु,
याद रखो मेरे मित्र,
बदलना नियम है
कुदरत का
पर सच यह भी है
कि कुदरत के
नियम नहीं बदलते।
दुनिया में
चाहे कुछ भी बदले,
सही मायने में
इंसान वही है
जिसके
उसूल नहीं बदलते।

हमारे अपने देश में राजनीति आम विमर्श के केंद्र में रहती है। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के ढेरों प्लेटफॉर्म्स अधिकांश समय इसी विमर्श को खाद और ईंधन देते हैं। जनता जनार्दन का यह विमर्श सामान्यत: राजनीतिक दलों या उनके नेताओं को दो ध्रुवों पर रख कर वाद-विवाद प्रतियोगिता की शक्ल अख्तियार कर लेता है और हम जाने-अनजाने अपने पक्ष को सही सिद्ध करने के लिए जी-जान झोंक देते हैं। अपनी ही धुन में मस्त हम राजनीति के उस असली खेल को समझने से कन्नी काट लेते हैं जो सभी राजनीतिक दल और उनके मंजे हुए नेता बड़ी चतुराई के साथ हम नागरिकों के साथ खेलते हैं। जनता बस उनके हाथों की कठपुतली भर बन कर रह जाती है।

मेरा अभिमत यह कतई नहीं है कि राजनीति की चर्चा करना बुरी बात है। राजनीति जनसेवा का एक बड़ा माध्यम है। प्रश्न बस इतना है कि राजनीति में निहित हो गये नीति और अनीति के भेद को हम कितना समझ पा रहे हैं! राजनीति - जिस शब्द में ही नीति शब्द जुड़ा है, उसके लिए अनीति की बात करना विरोधाभासी लग सकता है लेकिन यही आज की सबसे बड़ी विडम्बना है। नागरिकों के हित-चिन्तन की सबसे महत्वपूर्ण विधा - राजनैतिक विधा - जिससे नैतिकता की हर कोई अपेक्षा करता है, आज नैतिकता के आवरण में अनैतिकता के पोषण की सबसे बड़ी विधा बन गयी है।

शासन चलाने वाली राजनीतिक शक्तियाँ जिस धड़ल्ले और बेशर्मी से अनैतिक आचरण को भी तर्कसंगत और न्यायोचित बता कर इठलाती हैं, आश्चर्य नहीं कि आने वाले समय में आम जनता नैतिक और अनैतिक आचरण में फर्क करना ही भूल जाये। शासन व्यवस्था में जिस आचरण को अनैतिक बता कर एक नागरिक को जेल की सलाखों के पीछे भेजा जा सकता है, वैसा ही आचरण स्वयं सरकारें बेखौफ करती नजर आती हैं। पक्ष और विपक्ष की भूलभुलैया में खोया आम नागरिक बस वाद-विवाद प्रतियोगिता में जीतने को ही अपना लक्ष्य बना बैठा है।

देश के लोकतंत्र और आम जनता के व्यापक हित के दृष्टिगत जनता को इस तन्द्रा से बाहर निकलना होगा। किसी दल या नेता के समर्थक के तमगे को उतार फेंक हमें नीति के पीछे छिपे अनीति के खेल को बेनकाब करना होगा। राष्ट्रभक्ति के छद्म एहसास से बाहर निकल हमें निष्पक्ष भाव से देखना होगा कि हमारे अपने निर्वाचित प्रतिनिधि कहीं देश की आत्मा से ही खिलवाड़ तो नहीं कर रहे! यदि यह नहीं कर सके तो राजनीतिक विमर्श हमारे लिए तनाव बढ़ाने वाले एक नकारात्मक टाइमपास से अधिक कुछ नहीं रहेगा जिसमें उलझ कर हम देश का ही नहीं, स्वयं अपना नुकसान कर रहे होंगे।

चुनाव प्रक्रिया को लोकतंत्र की आत्मा कहा जाता है। लेकिन यह एक अर्द्ध सत्य है जिसे राजनीतिक निहितार्थ के चलते बार-बार दोहरा कर जनता को दो चुनावों के मध्यकाल में गहरी नींद में चले जाने को प्रेरित किया जाता है। वास्तविकता यह है कि चुनाव से अधिक महत्वपूर्ण है दो चुनावों के बीच इस बात पर नजर रखना कि जिन्हें हमने शासन की बागडोर सौंपी है, वे लोकतंत्र के प्रहरी हैं या नहीं! जिस देश ने यह जागरुकता खो दी, उसे रूस, चीन या दक्षिण कोरिया में तब्दील होने से कोई नहीं रोक सकता, जहाँ चुनाव तो होते हैं लेकिन लोकतंत्र से उनका दूर-दूर का वास्ता नहीं।

एक जीवन्त प्रगतिशील राष्ट्र के लिए जागरूक नागरिक ही एकमात्र शर्त है। अन्यथा आज एक दल तो कल दूसरा, आज एक नेता तो कल दूसरा, इसी प्रकार जनता के जज्बात के साथ खेलता रहेगा और हमें पता भी नहीं चलेगा कि एक खोखले लोकतंत्र पर गर्व करते-करते हम कब उसकी शवयात्रा में शामिल हो गये हैं।

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

■ आचार्य तुलसी ■

निर्वाचन आचार संहिता और मतदान

मतदान का मानदण्ड होना चाहिए व्यक्ति की योग्यता, निष्काम सेवा-भावना, समूह-चेतना के लिए हितावह प्रवृत्तियां और जनता का सही प्रतिनिधित्व करने की क्षमता। प्रवाहपातिता, व्यक्तिगत स्वार्थ या प्रलोभन आदि से होने वाला मतदान जनतंत्र के उज्ज्वल भविष्य का सूचक नहीं होता।

एकतंत्रीय परम्परा में मतदान का प्रश्न ही नहीं था। उस समय राजा ही सर्वोपरि होता था और उत्तराधिकार का दायित्व वंश-परम्परा के अनुसार मिलता था। भगवान महावीर के समय में गणतंत्र पद्धति का प्रचलन था। उस पद्धति में राजा या सामंत मिलकर शासन चलाते थे। मतदान की परम्परा थी, पर उसका क्षेत्र बहुत सीमित था। कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के बीच में मतदान होता, वह साधारण जनता के लिए मान्य हो जाता था।

व्यापक स्तर पर मतदान का पहला प्रयोग ब्रिटेन में हुआ। उसके बाद धीरे-धीरे सैकड़ों देशों ने जनतंत्रीय शासन पद्धति को अपनाया। आज तो कुछ इने-गिने देशों को छोड़कर विश्व की शासन प्रणाली में जनतंत्रीय सिद्धान्तों की गहरी छाप लग रही है। भारतवर्ष में जनतंत्रीय पद्धति से शासन चल रहा है। यहाँ हर वयस्क को मत देने का अधिकार प्राप्त है। मतदान के व्यापक अधिकार से कुछ कठिनाइयां भी पैदा होती हैं और उन देशों में अधिक कठिनाई है जहाँ जनता शिक्षित नहीं है। गरीबी अधिक है और विचार विकसित नहीं हैं। शिक्षित देशों में मतदान को लेकर कोई गड़बड़ी नहीं होती है, यह बात नहीं, पर वहाँ अज्ञान-जन्य कठिनाइयों से बचाव हो जाता है।

मतदान की पद्धति जब से चली है, उसके इतिहास में प्रलोभन की कड़ी जुड़ी हुई है। प्रारम्भ में इसका रूप बहुत छोटा था, किन्तु समय के साथ इस क्रम में उत्तरोत्तर विकास होता रहा है। मतदान की स्वस्थ परम्परा में विजय-पराजय की बात गौण है। मुख्य बात है व्यक्ति की योग्यता और विशेषता का अंकन कर उसे निर्वाचित करना। किन्तु मतदाता और प्रार्थी अर्थात् उम्मीदवार में भी कुछ दुर्बलताएं होती हैं कि वह गुणों की बात गौण कर दूसरी उलझन में उलझ जाता है। प्रार्थी व्यक्तियों को प्रतिष्ठा और अहं का मोह रहता है। उस स्थिति में प्रलोभन, भय और आतंक की परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं। इन परिस्थितियों के आगे मतदाता भी घुटने टेक देते हैं। अतः हमें मानकर चलना चाहिए कि यह बुराई दोनों पक्षों की ओर से होने वाली है। एक भी पक्ष अपने सिद्धान्त पर अटल रहे तो चुनाव पद्धति इतनी विकृत नहीं हो सकती। चुनाव परम्परा में विकृति नहीं होगी, तो योग्य व्यक्ति अनायास ही प्रकाश में आ जाएगा। न भी आये तो इससे उसकी प्रतिष्ठा भंग नहीं होती बल्कि उसके व्यक्तित्व में चमक आती है। सिद्धान्त की हत्या कर विजयी बनना क्या वास्तविक विजय है? मैं तो मानता हूँ कि प्रलोभन से होने वाला मतदान बहुत बड़ी बुराई है। यहाँ प्रश्न विजय का नहीं, विचार और सिद्धान्त का है, एक

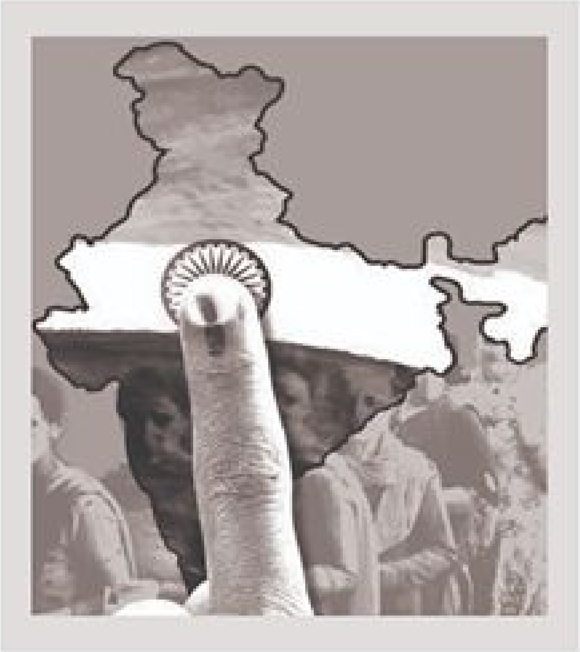

पद्धति के स्वीकार का है। जनतंत्रीय पद्धति स्वीकार करने के बाद पैसे का प्रलोभन देना अनुचित है और जो उस प्रलोभन में आकर मतदान करते हैं, वे अपने विचारों की हत्या करते हैं। वैचारिक मृत्यु व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी पराजय है।

कुछ देशों में मतदान की परम्परा अब भी काफी स्वस्थ है, यद्यपि उसे पूर्णतः निर्दोष मानना कठिन है। अविकसित, अशिक्षित और गरीब देशों में प्रार्थी व्यक्ति जनता की गरीबी और अज्ञान का लाभ उठाकर उसे गुमराह बना देते हैं। यह जनतंत्र के लिए अभिशाप है। आतंक एवं भय की स्थिति तो और अधिक लज्जास्पद है। जनतंत्र की स्वस्थ प्रणाली में विजयी बनने के लिए प्रलोभन, भय या आतंक की स्थिति पैदा करने का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिए।

मतदान, मतदाता और प्रार्थी व्यक्ति के लिए निश्चित मानदण्ड का निर्धारण हो तो कोई भी अवांछनीय स्थिति पैदा नहीं हो सकती, किन्तु मानदण्ड-निर्धारण के साथ उसे व्यावहारिक मूल्य प्राप्त होना जरूरी है। व्यावहारिक मूल्य के अभाव में कोई भी मानदण्ड स्थिर नहीं हो सकता। व्यक्तिगत सम्बन्ध के आधार पर किसी भी दल या व्यक्ति को वोट देना मतदान की स्वस्थ परम्परा नहीं है। मतदान का मानदण्ड होना चाहिए व्यक्ति की योग्यता, निष्काम सेवा-भावना, समूह-चेतना के लिए हितावह प्रवृत्तियां और जनता का सही प्रतिनिधित्व करने की क्षमता। प्रवाहपातिता, व्यक्तिगत स्वार्थ या प्रलोभन आदि से होने वाला मतदान जनतंत्र के उज्ज्वल भविष्य का सूचक नहीं होता।

अणुव्रत हर वर्ग और हर व्यक्ति के लिए प्रशस्त जीवन जीने का मार्गदर्शन देता है। व्यापारी, विद्यार्थी, अध्यापक, कर्मचारी, श्रमिक, नागरिक, कार्यकर्ता, साहित्यकार, मतदाता और उम्मीदवार सबके लिए भिन्न-भिन्न आचार संहिताओं का निर्धारण है। चुनाव सम्बन्धी आचार संहिता यहाँ उद्धृत की जा रही है।

मतदाता के लिए आचार संहिता

- मैं रुपये व अन्य प्रलोभन से मतदान नहीं करूँगा।
- मैं जाति, धर्म आदि के आधार पर मतदान नहीं करूँगा।
- मैं अवैध मतदान नहीं करूँगा।
- मैं चरित्र व गुणों के आधार पर अपने मत का निर्णय करूँगा।
- मैं किसी दल व उम्मीदवार के प्रति अश्लील प्रचार व निराधार आक्षेप नहीं करूँगा।
- मैं किसी चुनाव-सभा या अन्य कार्यक्रमों में अशान्ति या उपद्रव नहीं फैलाऊँगा।

उम्मीदवार के लिए आचार संहिता

- मैं रुपये व अन्य प्रलोभन तथा भय दिखाकर मत ग्रहण नहीं करूँगा।
- मैं जाति, धर्म आदि के आधार पर मत ग्रहण नहीं करूँगा।
- मैं अवैध मत ग्रहण करने का प्रयास नहीं करूँगा।
- मैं सेवा-भाव से रहित केवल व्यवसाय-बुद्धि से उम्मीदवार नहीं बनूँगा।
- मैं अपने प्रतिपक्षी उम्मीदवार या दल के प्रति अश्लील प्रचार व निराधार आक्षेप नहीं करूँगा।
- मैं अपने प्रतिपक्षी उम्मीदवार या दल की चुनाव सभा या अन्य कार्यक्रमों में अशान्ति व अन्य उपद्रव नहीं फैलाऊँगा।
- मैं निर्वाचित होने पर बिना पुनः चुनाव के दल-परिवर्तन नहीं करूँगा।
- निर्वाचित होने पर यदि मेरे चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं का मेरे प्रति अविश्वास या असन्तोष विकसित हुआ और इस सम्बन्ध में लिये गये मतदान का तीन-चौथाई मत मेरे विरुद्ध हो तो मैं अविलम्ब पद-त्याग करूँगा।

उपर्युक्त आचार संहिता मतदान के सम्बन्ध में एक आदर्श है। जो व्यक्ति इस आदर्श को आधार मानकर चलते हैं, वे जनतंत्रीय शासन प्रणाली को स्वस्थ और जीवन्त पद्धति के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं, अन्यथा जनतंत्र के नाम पर स्वार्थतंत्र का पोषण होता है। निर्वाचन के समय जनहित के लिए जो वादे किये जाते हैं, वे टूट जाते हैं। नारों की गूँज विलीन हो जाती है और शेष रहता है - असहाय, अत्राण, कराहता हुआ जनमानस। भविष्य की जिन मधुर कल्पनाओं में डूबकर वह अपने प्रतिनिधि का निर्वाचन करता है, वे व्यथा में डूब जाती हैं और उनके साथ अतीत का व्यथामय अध्याय जुड़कर वर्तमान को भी व्यथित बना देता है। इस व्यथा का अंत करने के लिए मतदान की स्वस्थ परम्परा और दायित्व-निर्वाह के लिए प्रामाणिकता की बहुत बड़ी अपेक्षा है।

■ आचार्य महाप्रज्ञ ■

लोकतंत्र और अणुव्रत

जहाँ आत्मानुशासन नहीं होता, वहाँ अणुव्रत नहीं होता। जहाँ अपना शासन नहीं होता, वहाँ सफल लोकतंत्र नहीं होता। लोकतंत्र की सफलता का आधार है आत्मानुशासन। जिस राष्ट्र की जनता आत्मानुशासी होती है, अपने आप पर नियंत्रण रखना जानती है, वहाँ सफल लोकतंत्र होता है और जहाँ ऐसा नहीं होता, वहाँ लोकतंत्र दंड-तंत्र के रूप में बदल जाता है।

यौगलिक युग से लेकर आज तक शासन की अनेक प्रणालियां सामने आयीं। सबसे पहले कुल की व्यवस्था आयी और कुल को शासित करने वाला एक कुलकर। कुलकर की व्यवस्था चली, फिर राजतंत्र आया। राजतंत्र के भी अनेक रूप आये। सबसे अंत में शासन का निखरा हुआ रूप आया लोकतंत्र।

लोकतंत्र भी परिपूर्ण पद्धति है, यह नहीं कहा जा सकता। उसमें भी काफी खामियां हैं, कमियां हैं, सुधार के लिए काफी अवकाश है, फिर भी आज तक शासन की जितनी प्रणालियां आयीं, उन सबमें यह श्रेष्ठ प्रणाली है - यह कहने में संकोच नहीं होता। इसका कारण है कि मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है स्वतंत्रता। यह दीर्घकालीन आकांक्षा रही है, आज भी है। हर व्यक्ति स्वतंत्र रहना चाहता है। मनुस्मृति में सुख-दु:ख की परिभाषा की गयी - "सर्वं स्ववशं सुखम्, सर्वं परवशं दु:खम्।" अपने आपमें होना सुख है और पराधीन होना दु:ख है। स्वतंत्र रहना व्यक्ति की एक सहज आकांक्षा है, किंतु स्वतंत्रता उसके भाग्य में नहीं, नियति में नहीं, इसलिए कि वह अपने आप पर नियंत्रण करना नहीं जानता। अगर हर व्यक्ति आत्मानुशासी होता, अपने आप पर नियंत्रण करना जानता तो कोई किसी को परतंत्र बनाता ही नहीं, किंतु अपने आप पर नियंत्रण नहीं है तो दूसरा उसके अस्तित्व पर आता है, दूसरा उसको अधीन बनाता है। हम मान लें कि परतंत्रता मनुष्य की एक नियति है, उसका एक भाग्य है, उसे टाला नहीं जा सकता।

लोकतंत्र का मूल्य

आदमी को परतंत्र होना है, किसी दूसरे के द्वारा शासित होना है, वहाँ यह लोकतंत्र की प्रणाली अधिक मान्य हुई है। जहाँ वर्षों तक जिस रूप में एकाधिपत्य था, अधिनायकवाद था, वहाँ भी लोकतंत्र की किरणें फूटी हैं। एक द्वंद्व था कि पूंजीवाद या साम्यवाद? लोकतंत्र या अधिनायकवाद? कौन रहेगा? दोनों एक साथ नहीं रह सकते। लंबे समय तक यह संघर्ष चला। यह सिद्ध हो गया कि लोकतंत्र आखिर विजयी होता है और लोगों की आकांक्षा उसके साथ जुड़ी हुई है।

संबंध लोकतंत्र और अणुव्रत में

लोकतंत्र और अणुव्रत दोनों का संबंध क्या है? दोनों में मेल क्या है? एक है अध्यात्म का प्रकाश, दूसरा है शासन का एक तंत्र, दूसरों को शासित करने की एक विधि। अध्यात्म व्यक्तिवादी धारणा है और लोकतंत्र सामाजिक धारणा। दोनों के बीच में संबंध

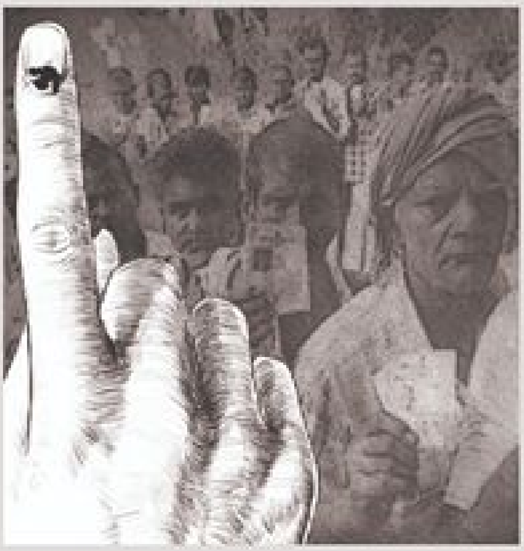

अणुव्रत का एक नियम है कि मैं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्ति में भाग नहीं लूँगा। यह नियम अणुव्रत का कहूं या लोकतंत्र का। अच्छा लोकतंत्र वह होता है, जहाँ तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियां नहीं होतीं। विरोध करना जरूरी है क्योंकि विरोध सामने नहीं आएगा तो सरकार को, शासन को सोचने का मौका नहीं मिलेगा।

खोजना जरा कठिन-सा लगता है, पर अनेकांत का एक सूत्र है, सापेक्षवाद का एक दर्शन है कि दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं, जो सर्वथा भिन्न हो या सर्वथा अभिन्न। दूसरे के साथ कोई समानता न हो, सर्वथा असमानता ही हो या समानता ही हो, असमानता न हो - ऐसा कुछ भी नहीं है। जिसको हम अभिन्न कहते हैं, वह भिन्न भी है, जिसको हम भिन्न कहते हैं, वह अभिन्न भी है। जब सापेक्ष दृष्टि से मीमांसा करते हैं, तब यह कहने में भी संकोच नहीं होना चाहिए कि लोकतंत्र और अणुव्रत में गहरा संबंध भी है।

लोकतंत्र की परिभाषा

लोकतंत्र की परिभाषा क्या है? अमेरिकी राष्ट्रपति ने लोकतंत्र की एक परिभाषा की थी - "जनता का शासन, जनता के लिए और जनता के द्वारा।" अणुव्रत की परिभाषा क्या है? अपना शासन, अपने लिए और अपने द्वारा - अपने से अपना अनुशासन अणुव्रत की परिभाषा। ऐसा लगता है कि जनता के स्थान पर अपना शब्द जोड़ दिया और अपना के स्थान पर जनता शब्द बिठा दिया। 'जनता' शब्द को बिठाओ तो लोकतंत्र की परिभाषा बन जाएगी और 'अपना' शब्द को बिठाओ तो अणुव्रत की परिभाषा बन जाएगी। दोनों की परिभाषा में कितना गहरा संबंध है।

जहाँ आत्मानुशासन नहीं होता, वहाँ अणुव्रत नहीं होता। जहाँ अपना शासन नहीं होता, वहाँ सफल लोकतंत्र नहीं होता। लोकतंत्र की सफलता का आधार है आत्मानुशासन। जिस राष्ट्र की जनता आत्मानुशासी होती है, अपने आप पर नियंत्रण रखना जानती है, वहाँ सफल लोकतंत्र होता है और जहाँ ऐसा नहीं होता, वहाँ लोकतंत्र दंड-तंत्र के रूप में बदल जाता है। लोकतंत्र में गोलियां चलें, पुलिस का शासन चले, अश्रु गैस छोड़ी जाये, जनता को डंडों से हांका जाये या कारावास में डाला जाये - बड़ी अजीब-सी बात लगती है। यह कैसा लोकतंत्र?

लोकतंत्र का नागरिक तो इतना अनुशासित और प्रशिक्षित होना चाहिए कि वह स्वयं अपने आप पर नियंत्रण करे। अगर लोकतंत्र में ऐसा नहीं हो तो उसे तानाशाही, अधिनायकवाद या पुलिस राज्य का दूसरा पर्याय मानना चाहिए। या यह मानना चाहिए कि लोकतंत्र का नागरिक अपना अधिकार पाने में अपनी अर्हता को प्रकट नहीं कर रहा है, अपने आपको उपयुक्त प्रमाणित नहीं कर रहा है। अवश्य कहीं न कहीं कमी है। लोकतंत्र में विरोध करना तो स्वाभाविक हो सकता है, पर तोड़-फोड़ करना, हिंसा करना कहाँ तक सार्थक हो सकता है।

विरोध का स्वस्थ तरीका

अणुव्रत का एक नियम है कि मैं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्ति में भाग नहीं लूँगा। यह नियम अणुव्रत का कहूं या लोकतंत्र का। अच्छा लोकतंत्र वह होता है, जहाँ तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियां नहीं होतीं। विरोध करना जरूरी है क्योंकि विरोध सामने नहीं आएगा तो सरकार को, शासन को सोचने का मौका नहीं मिलेगा। विरोध आवश्यक है, किंतु विरोध का यह तरीका अच्छा नहीं है कि बसें जला दीं, ऑफिसें जला दीं, मकान जला दिये, बम विस्फोट किये, बहुत सारी राष्ट्रीय संपत्ति को नष्ट कर दिया। उधर डंडे चलें, गोलियां चलें, आँसू गैस के गोले छोड़े जाएं। यह लोकतंत्र की विडंबना जैसी होती है। जापान में कोई हड़ताल करता है, विरोध करता है तो हाथ पर काली पट्टी बाँध लेता है, पर राष्ट्र को हानि नहीं पहुँचाता, संपदा को नुकसान नहीं पहुँचाता।

अपना विरोध प्रकट करने का सही तरीका उत्पादन नष्ट करना, उत्पादित वस्तुएं नष्ट करना नहीं है। विनाश ही विनाश हो तो यह कोई स्वस्थ प्रणाली नहीं है। लोकतंत्र में अहिंसा के लिए सबसे अधिक अवकाश है। अहिंसा, सापेक्षता, समझौता - ये लोकतंत्र के मूल प्राण हैं। इनकी उपेक्षा होती है तो अच्छी कल्पना नहीं की जा सकती।

लोकतंत्र और व्रत

लोकतंत्र और व्रतों में गहरा संबंध है। अणुव्रतों को छोड़कर हम लोकतंत्र की सुंदर कल्पना नहीं कर सकते और लोकतंत्र के बिना अणुव्रत की कल्पना करना भी कठिन है। अणुव्रत की सफलता लोकतंत्र में अधिक संभावित है। ऐसा लगता है कि लोकतंत्र के साथ अणुव्रत तो आ गया, पर उसके साथ व्रतों का जो प्रशिक्षण होना चाहिए, वह अभी नहीं हो सका है। मैं मानता हूँ कि लोकतंत्र के प्रशिक्षण का अर्थ है अणुव्रतों का प्रशिक्षण। अगर लोकतंत्र के साथ-साथ अणुव्रतों का प्रशिक्षण होता तो आज

अधिक सफलता मिलती। ऐसा हुआ नहीं। अगर जीवन में व्रत आता है, संयम आता है तो सफलता अपने आप आती है।

व्रत का प्रभाव

जैन परंपरा में एक संत हुए हैं - योगी आनंदघनजी। उनकी योग सिद्धियां बहुत विश्रुत थीं। एक बार राजस्थान के मेड़ता नगर के आस-पास उनकी यात्रा चल रही थी। लोगों को पता चला कि आनंदघनजी आये हुए हैं और उनके पास सोना बनाने की विद्या है। हजारों आदमी इकट्ठे हो गये और प्रार्थना करने लगे - "गुरुदेव ! हमें आप स्वर्ण सिद्धि की विद्या सिखलाएं।" आनंदघनजी ने सोचा - "यह बड़ी मुसीबत है, मैं किस -किसको सोना बनाना सिखाऊं?" वे गाँव छोड़कर जंगल की ओर चले गये।

जिनके पास ऐसी चामत्कारिक विद्या है, वे कहीं चले जाएं, जंगल में भी मंगल हो जाता है। लोगों की भीड़ लग जाती है। राजा को भी पता चला कि आनंदघनजी अनेक अद्‌भुत विद्याएं जानते हैं। वह जंगल में पहुँच गया। एकांत में निवेदन किया- "महाराज! मेरे पास सब कुछ है, पर पुत्र नहीं है। आप कृपा करें और मुझे पुत्र का दान दें।" आनंदघनजी ने सोचा - "यह विचित्र बात है। मैं संन्यासी हूँ, जैन मुनि हूँ। मैं किसको पुत्र दूं और किसको सोने की विद्या सिखलाऊं।"

आनंदघनजी ने इस बात को टालना चाहा, बहुत टाला, पर राजा अड़कर बैठ गया, बोला- "महाराज ! आपको देना ही है।" आखिरकार आनंदघनजी ने एक कागज मँगाया और उस पर कुछ लिख दिया। कागज को समेटकर राजा को दे दिया और कहा - "इसे महारानी के हाथ पर बाँध दो। तुम्हारी कामना पूरी हो जाएगी, पर एक शर्त है कि तुम आज से झूठ नहीं बोल सकोगे, शाकाहारी रहोगे, शिकार नहीं करोगे, प्रजा का शोषण नहीं कर सकोगे, कर अधिक नहीं ले सकोगे।" ये पाँच व्रत उसके साथ जोड़ दिये। यानी कामना के साथ जैसे अणुव्रत को जोड़ दिया।

राजा ने सब व्रत स्वीकार कर लिये। आनंदघनजी अपनी यात्रा में लग गये। समय बीता। कोई योग-संयोग ऐसा बना कि राजा के पुत्र हो गया। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ, सोचा - अब फिर आनंदघनजी के पास जाऊं, कृतज्ञता प्रकट करूं, प्रसन्नता प्रकट करूं और फिर आशीर्वाद प्राप्त करूं।

राजा, रानी, पुत्र सब आनंदघनजी के पास आये, प्रणाम किया। राजा बोला- "महाराज! आपने बड़ी कृपा की, बड़ा अनुग्रह किया और मेरी कामना आपने पूरी कर दी, बड़ा अच्छा हुआ।" लोग भी सुन रहे थे। आनन्दघनजी ने तत्काल कहा - "राजन्! वह कागज कहाँ है जो मैंने लिखकर दिया था?"

"महाराज! वह कागज की चिट तो महारानी के हाथ पर बँधी हुई है।" आनंदघनजी ने कागज की वह चिट ली, खोली। उसमें लिखा था - "राजा की रानी के पुत्र हो तो आनन्दघन को क्या? और राजा की रानी के पुत्र न हो तो आनन्दघन को क्या?" सब लोग सुनते रह गये। यह क्या? आनन्दघनजी बोले - "राजन् ! मैंने तुझे और कुछ नहीं दिया, केवल व्रत दिये हैं। तूने व्रतों की ठीक पालना की, आराधना की, इसलिए तेरी कामना पूरी हुई है। यह व्रतों का प्रासंगिक फल है। यह व्रत की महिमा है, मेरी कुछ भी नहीं है।"

यह एक ऐतिहासिक घटना है। इसके आधार पर हम मूल्यांकन करें कि जिस व्यक्ति के जीवन में संयम आता है, व्रत आते हैं तो साथ-साथ कामनाएं पूरी होने लगती हैं, सफलता मिलती है। बहुत लोग सफलता तो चाहते हैं, किंतु जीवन में व्रतों को नहीं चाहते। वे इस सच्चाई को भूल जाते हैं कि संयम, व्रत और आत्मानुशासन के बिना जीवन में कभी सफलता नहीं मिलती।

किसी भी राष्ट्र को, किसी भी समाज को या किसी भी व्यक्ति को सफलता मिली है तो उसका रहस्य यही है कि उसने अपने आपको संवारा है, अपने आपको संयत किया है, अपने आपको व्रती बनाया है। अणुव्रतों का मूल्य स्पष्ट है। यदि लोकतंत्र के नागरिक अणुव्रतों को स्वीकार करते हैं तो वे लोकतंत्र को सफल बनाते हैं। लोकतंत्र की सफलता की शर्त है - व्रतों का पालन, आत्मानुशासन का विकास।

किसे चुनेंगे आप?

आप स्वयं सोचें इस संदर्भ में कि मैं लोकतंत्र और अणुव्रत दोनों के संबंध की व्याख्या करूं या न करूं। स्वाभाविक है कि यदि मुझे अणुव्रत की बात कहनी है तो लोकतंत्र की बात कहनी होगी और यदि लोकतंत्र की बात कहनी है तो अणुव्रत की बात कहनी होगी। दोनों में आपसी संबंध है और गहरा संबंध है। यद्यपि बहुत सारे लोग अणुव्रतों का मूल्य नहीं आँक रहे हैं, इसीलिए भ्रष्टाचार पनप रहा है। प्रायः सब असंतुष्ट हैं और सबके मन में शिकायत है। शायद ही ऐसा व्यक्ति मिले, जिसके मन में शिकायत न हो। जनता की शिकायत है सरकार के प्रति और सरकार की शिकायत है जनता के प्रति। बाजार की शिकायत है ऑफिसर के प्रति, ऑफिसर की शिकायत है बाजार के प्रति। एक-दूसरे के प्रति शिकायत है, पर अपने प्रति अपनी शिकायत किसी को नहीं। जब तक यह नहीं होगी, तब तक न भ्रष्टाचार मिटेगा, न रिश्वत मिटेगी और न मिलावट मिटेगी। यह सारा चक्का ऐसे ही तेजी के साथ घूमता रहेगा।

जहाँ एक ओर शिकायत है, वहाँ दूसरी ओर अणुव्रत का अस्वीकार है। अगर आप अणुव्रत को नहीं चाहते हैं तो फिर भ्रष्टाचार को क्यों न पसंद करें? आपको क्या कठिनाई है? आप यह मान लें कि यह तो हमारी स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह चला है, चलता आया है और चलता रहेगा। कभी इसे रोका नहीं जा सकेगा। यदि आपको भ्रष्टाचार पसंद नहीं है तो अणुव्रत का रास्ता अपनाना पड़ेगा, नैतिकता का रास्ता अपनाना पड़ेगा, सदाचार का रास्ता अपनाना पड़ेगा। दोनों में से आप एक चुन सकते हैं, दोनों को आप एक साथ नहीं अपना सकते। यह निर्णय करें तो मैं मानता हूँ कि लोकतंत्र और अणुव्रत का सह-अस्तित्व है। अच्छा लोकतंत्र, इसका मतलब अणुव्रत की अनिवार्यता। जहाँ अणुव्रत की अनिवार्यता है, वहाँ अच्छा लोकतंत्र अपने आप होगा।

■ आचार्य महाश्रमण ■

मैत्री का भाव विश्व में फैले

"मित्ति मे सव्व भूएसु" सब प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, "वैरं मज्झ न केनई..." किसी के साथ मेरा वैर नहीं है, यह मैत्री का भाव विश्व में फैले और जहाँ कहीं युद्ध की बात है, वहाँ भी मैत्री का शंखनाद हो और पारस्परिक वार्तालाप से युद्ध को विराम मिले, हिंसा को विराम मिले।

आदमी के भीतर हिंसा का संस्कार भी होता है और अहिंसा का संस्कार भी होता है। आदमी के भीतर सत् का संस्कार भी होता है तो उसके भीतर असत् का संस्कार भी विद्यमान होता है। आदमी में अच्छाई का संस्कार होता है तो बुराई का संस्कार भी उपलब्ध हो सकता है। अपेक्षा इस बात की है कि हिंसा का संस्कार, असत् का संस्कार और बुराई का संस्कार कमजोर बने और क्षीणता की ओर आगे बढ़े तथा अहिंसा का संस्कार, सत् संस्कार और अच्छाई का संस्कार पुष्ट बने।

एक भौतिकतावाद है, मैटेरियलिज्म, और दूसरा आध्यात्मिकतावाद है, स्पिरिच्युलिज्म। आध्यात्मिकता में ऐसी शक्ति है कि आदमी के भीतर का हिंसा का संस्कार, असत् का संस्कार और बुराई का संस्कार कमजोर पड़ सकता है। मेडिटेशन, ध्यान, चिंतन, मनन और अच्छे लोगों की संगति, इनसे आदमी में अहिंसा, सत् और अच्छाई का संस्कार पुष्ट हो सकता है। दुनिया में युद्ध भी होता है। समरांगण में भी युद्ध हो सकता है, परन्तु समरांगण में युद्ध बाद में होता है, पहले आदमी के दिमाग में युद्ध का मनोभाव पुष्ट होता है, बाद में समरांगण आदि में युद्ध होता है।

दुनिया में शांति रहे। वार्तालाप के द्वारा, मैत्री भाव के द्वारा तथा कुछ अपने स्वार्थ के परित्याग के द्वारा शांति को उपलब्ध किया जा सकता है और युद्ध की बात को विराम भी दिया जा सकता है। आदमी का साध्य शुद्ध हो कि शांति एक साध्य है, अच्छाई की उपलब्धि एक साध्य है तो साध्य की प्राप्ति के लिए जो साधन है, साध्य शुद्ध है तो साधन को भी जितना शुद्ध रखा जा सके, वैसा प्रयास होना चाहिए। साधन शुद्ध होने का मैं अर्थ करता हूँ या बता रहा हूँ कि साधन में अहिंसा को जोड़ा जाये, कि साधन जितना सम्भव हो सके ज्यादा से ज्यादा अहिंसापूर्ण हो और जितना सम्भव हो सके, उसमें संयम हो। सेल्फ-डिसिप्लीन हो, सेल्फ-कंट्रोल हो। नॉनवायलेंस और सेल्फ-कंट्रोल, ये दो चीजें साधन में ज्यादा से ज्यादा हों, यह प्रयास होना चाहिए। इस प्रकार साधन के साथ शुद्धि को जोड़ा जा सकता है।

परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी जो बीसवीं सदी के एक संत पुरुष थे और एक सम्प्रदाय के अनुशास्ता आचार्य भी थे, जैन आचार्य थे, जैन धर्म में एक सम्प्रदाय के आचार्य थे। उन्होंने अणुव्रत के नाम से एक मूवमेन्ट, आन्दोलन, अभियान शुरू किया। अणु यानी छोटा, व्रत यानी नियम, छोटे-छोटे अच्छे नियम, संकल्प आदमी ग्रहण कर ले, उनके अनुसार आदमी चले, तो अहिंसा और संयम की चेतना को सम्पोषण मिल सकता है, जीवन में अहिंसा और संयम कुछ अंशों में आ सकते हैं।

हमें जो मानव जीवन प्राप्त हुआ है, इस मानव जीवन को कैसे अच्छा जीया जा सके! इस जीवन को अहिंसा और संयम की शैली से जीया जाये तो हमें शांति प्राप्त हो सकती है। इस जीवन के बाद भी शांति रहने की, सुख प्राप्त होने की सम्भावना की जा सकती है।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, अणुविभा है, जो अणुव्रत के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्था है। शांति, अहिंसा से सन्दर्भित अनेक सम्मेलन अतीत में हो चुके हैं और वर्तमान में भी यह जो शांति सम्मेलन का प्रसंग है, यह शांति दुनिया में हो, और आदमी-आदमी के भीतर भी शांति हो, हर आदमी के भीतर में शांति हो, आदमी पीस ऑफ माइण्ड को प्राप्त करे, और जीवन पीस ऑफ माइण्ड की अवस्था में जीये। यह हमें जो मानव जीवन प्राप्त हुआ है, इस मानव जीवन को कैसे अच्छा जीया जा सके! इस जीवन को अहिंसा और संयम की शैली से जीया जाये तो हमें शांति प्राप्त हो सकती है और जो अध्यात्मवाद का सिद्धान्त है, पुनर्जन्म का विश्वास है कि आत्मा शाश्वत है, आत्मा कभी नहीं मरती, शरीर भले ही नष्ट हो जाये, होता भी है, आत्मा कभी नष्ट नहीं होती - तो यह स्पिरिच्युलिज्म और अध्यात्मवाद का जो सिद्धान्त है कि आत्मा शाश्वत है, तो अहिंसा और संयम जीवन में है, तो यहाँ भी शांति, इस जीवन के बाद भी शांति रहने की, सुख प्राप्त होने की सम्भावना की जा सकती है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ध्यान, योग की बात बताते, ध्यान का प्रयोग भी कराते, प्रेक्षा मेडिटेशन। ध्यान, योग, अहिंसा – ये ऐसे तत्त्व हैं जो हमारे चित्त को शांति उपलब्ध करा सकते हैं। दुनिया में जो युद्ध की भी बात है, अब युद्ध को विराम मिले, ऐसा रास्ता निकले। परस्पर वार्तालाप से कि युद्ध को विराम मिले, और जहाँ कहीं जो युद्ध की स्थिति है, वो युद्ध समाप्त हो। जैसे जो महापुरुष हुए हैं, महावीर, बुद्ध आदि महापुरुष हुए हैं, और उन्होंने अहिंसा का जो रास्ता दिखाया है, तो हम सब आदमी हैं, इंसान हैं, कहीं कोई बात है, तो ज्यादा से ज्यादा प्रयास यह हो कि अहिंसा के द्वारा और संयम के द्वारा, कोई समाधान निकाला जाये, और जो जैन शास्त्र में कहा गया, "मित्ति मे सव्व भूएसु" सब प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, "वैरं मज्झ न केनई..." किसी के साथ मेरा वैर नहीं है, यह मैत्री का भाव विश्व में फैले और जहाँ कहीं युद्ध की बात है, वहाँ भी कोई मैत्री का शंखनाद हो, और पारस्परिक वार्तालाप से युद्ध को विराम मिले, हिंसा को विराम मिले, अहिंसा फैले, अहिंसा व्याप्त हो जाये। ऐसे जो सम्मेलन शांति और अहिंसा के सन्दर्भ में होते हैं, उनसे कुछ प्रेरणा मिल सकती है, अहिंसा का भाव उभर सकता है और कोई समाधान भी मिले तो मिल सकता है।

अणुव्रत विश्व भारती का शांति सम्मेलन भले ऑनलाइन हो, वर्तमान में ऑनलाइन, वर्चुअल रूप में भी कार्यक्रम करने की विधा दुनिया में चलती है, और यह कुछ आसान भी हो सकती है, तो किसी भी रूप में अहिंसा शांति की वार्ता हो, यह अहिंसा शांति की वार्ता व्यापक बने, फैले और सबमें शांति रहे। मैं यह मंगल कामना करता हूँ कि शांति फैले, और यह सम्मेलन भी सफल बने, निष्पत्तियुक्त बने, शुभाशंसा।

('शांति एवं अहिंसक उपक्रम' पर अणुविभा द्वारा आयोजित 11वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हेतु व्यक्त अणुव्रत अनुशास्ता के उद्गार)

प्रेरक दृष्टांत

दु:ख में सुख

दो मित्र कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक मित्र की जेब कट गयी। दूसरे मित्र ने दु:ख प्रकट करते हुए कहा - "अनर्थ हो गया।" जिस मित्र की जेब कटी थी वह बोला - "अनर्थ होते-होते बच गया। आज का दिन मेरे लिए बहुत शुभ है। चलो, किसी होटल में चलें और इस खुशी में चाय पीएं।" मित्र स्तब्ध रह गया। जेब कटने पर खुशी मनाने वाला उसे कोई भी नहीं मिला था। मित्र की समझ पर तरस खाते हुए उसने कहा - "आज तेरे दिमाग पर क्या जुनून सवार हो गया है? कहीं पीकर तो नहीं आये हो? तुम्हारी इस खुशी का राज क्या है?" जिसकी जेब कटी थी, उसने खुशी का राज खोलते हुए कहा - "मेरी जो जेब कटी है, उसमें तो मात्र दस रुपये थे और दूसरी जेब में हजार रुपये हैं। जेबकतरा उसके बदले यह जेब काट लेता तो... ? बोलो, मैं जीत में रहा या नहीं?"

जो व्यक्ति दु:ख में से सुख निकालना जानता है, उसे कोई दु:खी नहीं कर सकता।

(आचार्य श्री तुलसी की पुस्तक 'बूँद भी : लहर भी' से)

जय जय ज्योतिचरण जय जय महाश्रमण
ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस
लाईफ इंश्योरेंस
कैशलेस मेडीक्लेम
हमारे विशेषज्ञों द्वारा अपनी पुरानी ज्वेलर्स ब्लॉक पॉलिसी या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें ।
नो रुम कैटगरी वाली कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें और इसे केवल 2600/- की मामूली राशि से सुपर टॉप अप पॉलिसी के साथ जोड़ें
इंश्योरेंस टिप्स
अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी नंबर के साथ शेयर करें, हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना की सलाह देंगे ।
यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है और आपको किसी सहायता या सलाह की आवश्यकता होती है, तो हम मदद के लिए तैयार है ।
Legacy of 39 Years
25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD
11000 Claims Solved
300 National & International Awards
वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.
Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A
NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !
हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.
Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A
Contact Details :
A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A.Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | Inter Com : 5050
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222

■ प्रो. श्रीमन्नारायण ■

समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आंदोलन की सफलता का सूत्र है उसकी उपादेयता, प्रासंगिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधारवादी आंदोलन की उपादेयता और प्रासंगिकता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर लेते हैं तो आमजन भी उस आंदोलन के दर्शन का अनुसरण करने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक काल से ही तात्कालिक समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। प्रस्तुत हैं योजना आयोग के तत्कालीन सदस्य प्रो. श्रीमन्नारायण के उद्गार :

अणुव्रत एक ईश्वरीय देन

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। नाम तो उसका अणुव्रत है, अर्थात् छोटे व्रतों को लेना। हमें याद रखना चाहिए कि छोटे-छोटे कामों के करने से ही अन्त में बड़े से बड़े काम सरलतापूर्वक किये जा सकते हैं। जब तक हम छोटी बातों की ओर ध्यान नहीं देंगे, तब तक महान कार्यों में सफल नहीं हो सकेंगे।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद देश के समस्त वर्गों का कार्य एवं व्यवहार हमारी संस्कृति के अनुरूप नहीं रहा है। किसी न किसी रूप में वहां बुराई घुस गयी है। प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति त्याग और संयम की द्योतक रही है। लोगों ने सच्चे दृष्टिकोण से चिन्तन करना छोड़, भोग और विलास के पथ पर अग्रसर होना आरम्भ कर दिया है। मैं यह मानता हूँ, जन-जन में फैली हुई इस अमानवीय भावना के परिवर्तन में अणुव्रत आन्दोलन एक सफल प्रयास है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज के जमाने में बड़ी-बड़ी बातें बनाने वाले तो बहुत होते हैं, परन्तु उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य बहुत हीन और छोटे होते हैं। आज अणु-शक्ति का युग है। संसार के बड़े-बड़े राष्ट्र व नेतृ-वर्ग मानवमात्र को शान्ति और सुख का मार्ग प्रदर्शित करने में प्रयत्नशील हैं। परन्तु लोगों को सच्चे अर्थों में सुख या शान्ति प्राप्त होगी या नहीं; यह एक सन्देहयुक्त बात है। आचार्य श्री तुलसी ने जीवन की छोटी, पर महत्वपूर्ण बातों के लिए व्रतों की भाषा में हमारा ध्यान उस ओर आकर्षित किया है। ये व्रत यद्यपि सरसरी तौर पर देखने से सूक्ष्म मालूम पड़ते हैं, परन्तु इनमें व्यक्ति-व्यक्ति की भावना को बदल डालने की भारी शक्ति छिपी हुई है। यह समझने की चीज है। सब व्रतों को छोड़कर अगर एक भी व्रत को जीवन में उतार लें तो बहुत कुछ हो सकता है।

हमारे देश के और विदेशों के मूलभूत सिद्धान्तों में बड़ा अन्तर है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के कथनानुसार, हमारे देश का मजदूर दिनभर कार्य करने के बाद रात को भजन-कीर्तन करता है; वहीं एक विदेशी मजदूर दिन भर कार्य करने के बाद रात को शराब पीता है, टेलीविजन देखता है।"

आज भारतवर्ष में ऐसे भी सन्त पाद-विहार करते हैं, जो देश के विभिन्न भागों और वर्गों में घूम-घूम कर आत्म-चिन्तन एवं त्याग की भावना प्रस्फुटित करते हैं और जन-जन को अपने

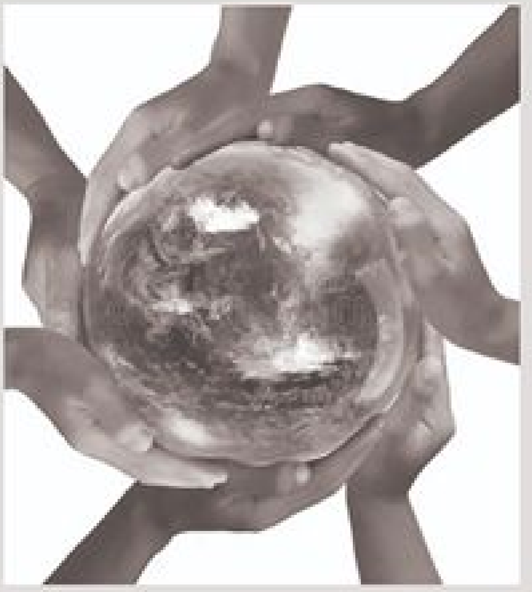

आत्मविश्वास व सच्चाई के साथ नैतिक नियमों का पालन करने वाले मुट्ठी भर व्यक्ति भी सामाजिक वातावरण को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकते। कार्य की शुद्धता के कारण प्रकाश अवश्य ही फैलेगा और जन-जन का जीवन इतना प्रकाशमान हो उठेगा कि विश्वभर को इसकी अनुभूति हुए बिना नहीं रहेगी।

नैतिक पुनरुत्थान के लिए आह्वान करते हैं। यह हमारे लिए गौरवास्पद बात है।

हमें यह निःसन्देह मानना पड़ेगा कि लोग त्यागमय जीवन को अपनाने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। जैसा कि मैंने प्रत्यक्ष देखा, किस प्रकार लोग अपने आप अणुव्रती जीवन को अंगीकार करते हैं। देश के नेताओं ने त्याग किया और उसके फलस्वरूप हमें आजादी मिली। त्याग का फल सदा मीठा होता है, यह भी हमने देखा। परन्तु स्वराज्य-प्राप्ति के बाद हमारे पास त्याग का कोई कार्यक्रम नहीं रहा। मेरा खयाल है कि देश के भावी नेताओं को यदि अभी से त्याग की प्रेरणा दी जाये तो भारत का भावी चित्र कैसा होगा, यह अभी अत्यन्त सुस्पष्ट दिखायी दे सकता है।

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है। नाम तो उसका अणुव्रत है, अर्थात् छोटे व्रतों को लेना, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि छोटे-छोटे कामों के करने से ही अन्त में बड़े से बड़े काम सरलतापूर्वक किये जा सकते हैं। वर्तमान समाज में ऐसी कई बुराइयां हैं, जिनके कारण देश में दूषित वातावरण फैल गया है। चोरबाजारी, रिश्वतखोरी, अदालतों में झूठी गवाही देना, सगे-सम्बन्धियों के लिए पक्षपात करना आदि बुराइयों से भारत का मस्तक आज नीचा हो गया है। इस कलंक को मिटाने के लिए सिर्फ भाषण देने, लेख लिखने व प्रस्ताव पास करने से काम नहीं चलेगा। इसके लिए यह जरूरी है कि जनता के बीच रचनात्मक कार्य किया जाये और लोगों का चरित्र ऊँचा उठाने की कोशिश की जाये। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपना रचनात्मक कार्यक्रम देश के सामने इसी दृष्टि से रखा था। इन दिनों आचार्य विनोबा भावे का भूदान तथा सम्पत्ति दान आन्दोलन सामाजिक और आर्थिक दृष्टि के अलावा एक बड़ा नैतिक और आध्यात्मिक आन्दोलन भी है। आचार्य श्री तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन को भी मैं इसी दृष्टि से देखता हूँ। मैं इस आन्दोलन से बहुत प्रभावित रहा हूँ, क्योंकि यह जीवन की छोटी से छोटी आवश्यक बातों पर जोर देता है। साधारणतया जीवन के छोटे कार्यों के प्रति हम अपने-अपने उत्तरदायित्व को भूल जाते हैं और बड़े-बड़े कार्यों में ही बड़ी दिलचस्पी दिखाते हैं। तथ्य यह है कि जब तक हम अपने जीवन की छोटी बातों की ओर ध्यान नहीं देंगे, तब तक महान कार्यों में सफल नहीं हो सकेंगे।

अणुव्रत आन्दोलन में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति व्रत लेते हैं। ये व्रत उनके दैनिक जीवन के व्यावहारिक पहलुओं को छूते हैं। साथ ही साथ वे सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य के पालन की भी शपथ लेते हैं। इन प्रतिज्ञाओं में घूस, भ्रष्टाचार, अस्पृश्यता और आर्थिक शोषण से बचने के नियम भी सम्मिलित हैं। जनता का नैतिक स्तर ऊँचा उठाने के लिए इन सामाजिक व आर्थिक बुराइयों के प्रति हमारा ध्यान अधिक केन्द्रित होना चाहिए।

आज हम हमारे राष्ट्र के आर्थिक जीवन के निर्माण में जुटे हुए हैं, लेकिन हमें यह समझ लेना चाहिए कि नैतिक योजनाओं के बिना सिर्फ आर्थिक योजनाएं प्रभावशाली नहीं बन सकतीं। मैं अणुव्रत आन्दोलन को नैतिक संयोजन का एक क्रान्तिकारी कदम मानता हूँ। नैतिक विकास की योजनाओं के बिना हमारी आर्थिक योजनाओं के स्रोत सूख जाएंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

अणुव्रत जैसे आन्दोलन में संख्या की अपेक्षा गुण-विकास पर ध्यान रखना आवश्यक है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अणुव्रत आन्दोलन का दृष्टिकोण ऐसा ही है। आत्मविश्वास व सच्चाई के साथ नैतिक नियमों का पालन करने वाले मुट्ठी भर व्यक्ति भी सामाजिक वातावरण को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकते। कार्य की शुद्धता के कारण प्रकाश अवश्य ही फैलेगा और जन-जन का जीवन इतना प्रकाशमान हो उठेगा कि विश्वभर को इसकी अनुभूति हुए बिना नहीं रहेगी। इस आन्दोलन का पूरा परिचय आज भले ही अधिक लोगों को न हो, परन्तु अगर देश में थोड़े भी सुदृढ़ अणुव्रती हुए तो देश की उन्नति अवश्यम्भावी है। अणुव्रत आन्दोलन मानव-मस्तिष्क की उपज नहीं है, बल्कि यह ईश्वरीय देन है।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि अणुव्रत आन्दोलन लोगों के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने में सफल होगा और ठोस नींव पर समाजवादी समाज-व्यवस्था की रचना में सहायक बन सकेगा। मैं आशा करता हूँ कि यह आन्दोलन दिन प्रतिदिन तेजी पकड़ता जाएगा।

■ डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ■

धर्म और राजनीति का उभयपक्षी सम्बन्ध

जब धर्म और राजनीति दोनों के अर्थ ही बदल गये हैं तो यह बहुत मुश्किल हो गया है कि उनके पारस्परिक रिश्तों की बात की जाये! अब तो असल में दोनों एक-दूसरे का इस्तेमाल कर रहे हैं और यह इस्तेमाल किसी व्यापक कल्याण की भावना से प्रेरित नहीं है। यहाँ दोनों एक-दूसरे का अपने-अपने हित और स्वार्थ में उपयोग कर रहे हैं।

धर्म और राजनीति का अन्तर्सम्बन्ध अत्यन्त ही महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि यह सामाजिक ताने-बाने पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। युगों-युगों से इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा होती आयी है। इस विषय पर बात करने से पहले हमें यह विचार करना होगा कि धर्म से क्या आशय है? फिर, हो सकता है इस बात पर भी विचार करना पड़े कि राजनीति से क्या आशय है? जब ये दोनों चीजें साफ हो जाएंगी, तब सवाल इनके गठजोड़ के उचित या अनुचित होने का उठेगा।

जहाँ तक धर्म का प्रश्न है, विद्वज्जन का कहना है कि धर्म का अर्थ है धारण करना। अतः धर्म का मूल अर्थ है जो धारण किया जाये अथवा जो व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को धारण करता है, वह धार्मिक है। धर्म सामान्य रूप से पदार्थ मात्र का वह प्राकृतिक तथा मूल गुण है, जो उसमें शाश्वत रूप से विद्यमान रहता है। किसी वस्तु का वस्तुत्व ही उसका धर्म कहा जाता है। अगर आपको लग रहा है कि यह तो कुछ ज्यादा ही गंभीर जवाब हो गया तो चलिए एक सरल जवाब देता हूँ : ईश्वरीय श्रद्धा व पूजा-पाठ, ईश्वरीय उपासना, आराधना आदि को धर्म कह सकते हैं। ऐसी अन्य अनेक परिभाषाएं हो सकती हैं, लेकिन व्यक्तिगत रूप से मुझे महाकवि तुलसीदास की बात सबसे अधिक सही लगती है। उन्होंने रामचरितमानस में क्या खूब कहा है : "परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।" मुझे धर्म की यह सबसे अधिक स्वीकार्य और तर्कपूर्ण परिभाषा लगती है।

अब राजनीति की बात भी कर लें। राजनीति अर्थात् राज्य करने या उसका संचालन करने की नीति। इसमें 'नीति' विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। यहाँ केवल नीति की बात है, अनीति की नहीं। वर्तमान राजनीति की चर्चा करते हुए इस बात का ध्यान रखना बहुत आवश्यक होगा।

तो, तस्वीर थोड़ी-सी साफ होती नजर आ रही है। राजनीति का संचालन वह सोच करे जो सब के कल्याण की बात सोचता हो। याद कीजिए, कभी महात्मा गांधी ने क्या कहा था ! उन्होंने कहा था - "मैं तुम्हें एक जंतर देता हूँ, जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहं तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ। जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा? क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों

आज धर्म का अर्थ स्नेह-सद्भाव और करुणा के बजाय कटुता-घृणा और हिंसा हो गया है। और ऐसा ही कुछ राजनीति के मामले में भी हुआ है। आज राजनीति का अर्थ बदल कर यह हो गया है कि सत्ता पर कैसे काबिज हुआ जाये, कैसे उस पर चिपका रहा जाये तथा कैसे उसका अधिक से अधिक दोहन किया जाये।

लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है? तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहं समाप्त होता जा रहा है।"

अब जरा धर्म के उस दूसरे रूप की चर्चा कर लें जिसने आज धर्म के उस रूप को लगभग विस्थापित कर रखा है जिस रूप की बात हम अभी कर रहे थे। आज धर्म का अर्थ वह नहीं रहा जो तुलसीदास हमें सुझा रहे थे या जो हमारे शास्त्रों में बताया गया है। आज धर्म का अर्थ बहुत बदल गया है। आज धर्म का अर्थ स्नेह-सद्भाव और करुणा के बजाय कटुता-घृणा और हिंसा हो गया है। मैं अपने धर्म से प्यार करता हूँ इसका और बड़ा अर्थ यह हो गया है कि मैं औरों के धर्म से नफरत करता हूँ।

हाल के वर्षों में भारत में, और दुनिया के अन्यान्य देशों में भी धर्म के नाम पर जितना खून-खराबा हुआ है, वह इस बात की पुष्टि करता है कि अब हमने धर्म को नये और भिन्न अर्थों में लेना शुरू कर दिया है। विभिन्न तथाकथित धार्मिक संगठन अपने-अपने देवताओं की स्नेहिल और वत्सल छवि को हटाकर उनकी उग्र और आक्रामक छवि स्थापित करने में जुटे हैं। उनके अनुयायी भी उसी तरह हथियार लहराते और डराते-आतंकित करते नजर आने लगे हैं।

और ऐसा ही कुछ राजनीति के मामले में भी हुआ है। आज राजनीति का अर्थ बदल कर यह हो गया है कि सत्ता पर कैसे काबिज हुआ जाये, कैसे उस पर चिपका रहा जाये तथा कैसे उसका अधिक से अधिक दोहन किया जाये। नीति यहाँ सिरे से गायब है। सारा जोर 'जैसे भी हो' पर आ गया है। लगभग सारी की सारी राजनीति उस पुराने कथन को साकार करने में जुटी है जिसके अनुसार राजनीति धूर्तों की अंतिम शरणगाह होती है। तो जब धर्म और राजनीति दोनों के अर्थ ही बदल गये हैं तो यह बहुत मुश्किल हो गया है कि उनके पारस्परिक रिश्तों की बात की जाये! अब तो असल में दोनों एक-दूसरे का इस्तेमाल कर रहे हैं और यह इस्तेमाल किसी व्यापक कल्याण की भावना से प्रेरित नहीं है। यहाँ दोनों एक-दूसरे का अपने-अपने हित और स्वार्थ में उपयोग कर रहे हैं। आज धर्म और राजनीति का बहुत मजबूत गठजोड़ देखने को मिल रहा है, लेकिन यह गठजोड़ स्वागत योग्य नहीं है। इसलिए नहीं है कि इसमें जन कल्याण का सोच सिरे से नदारद है।

असल में धर्म बहुत निजी और वैयक्तिक मामला है, लेकिन राजनीति के अपवित्र गठजोड़ ने उसे प्रदर्शन और दबाव बनाने का पर्याय बनाकर रख दिया है। अधिकांश जो लोग धर्म के शीर्ष पर हैं या स्वयं को उसका नियंत्रक मानते हैं, उन्हें इस बात से तनिक भी आपत्ति नहीं है। बल्कि वे राजनीति का सहयोग पाकर अपने वर्चस्व को बढ़ा हुआ देख मगन हैं। और ऐसा ही राजनीति की दुनिया में भी हो रहा है। वहाँ वे लोग धर्म का अपने हित में लज्जाहीन प्रयोग कर रहे हैं। जब हालात इतने विकट हों तो यही कहा जा सकता है कि जैसा आज नजर आ रहा है, धर्म और राजनीति का वैसा गठजोड़ तनिक भी उचित नहीं है। ■

✍ जयपुर निवासी डॉ. अग्रवाल सुपरिचित लेखक, आलोचक, स्तंभकार और शिक्षाविद् हैं।

लघुकथा

मैं गुमशुदा

■ राजेश अरोड़ा - श्रीगंगानगर ■

मैंने अनुभव किया- मेरे जीवन का स्वरूप है - प्रेम। मेरा हृदय प्रेम का उद्‌गम स्रोत है। मेरे जीवन में प्रेम विकसित हो रहा है। मैं प्रेम सोच रहा हूँ। प्रेम बोल रहा हूँ। प्रेम बाँट रहा हूँ, न सिर्फ उन्हें जो मुझसे प्रेम करते हैं, उनको भी जो मुझसे घृणा करते हैं। मेरे रोम-रोम में प्रेम है। प्रेम-विशुद्ध प्रेम, जो आत्मिक है, जिसमें रत्ती भर भी शारीरिक गंध नहीं।

मुझे लगा- इस अपवित्र शरीर से अलग मैं एक शुद्ध आत्मा हो गया हूँ। दुर्भाव, दुर्विचार, दुराचार, दुर्गुण आदि मेरी वृत्तियां प्रेम-नदी में डूबकर नष्ट हो गयी हैं। मेरा मन निर्मल हो गया है। एक अलौकिक दिव्यता मेरे भीतर प्रकट हो गयी है। घरवाले मुझे ढूंढ रहे हैं। मैं गुम हो गया हूँ।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अणुव्रती कार्यकर्ता की भूमिका

अब समय आ गया है कि हमारी कथनी और करनी का अंतर मिटे और समाज में से सैकड़ों ऐसे व्यक्तित्व निखर कर सामने आएं जिनका जीवन संयम का पर्याय हो। जिनके रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार, व्यापार में प्रामाणिकता, सादगी और संयम झलकता हो। तभी 'संयम ही जीवन है' का दर्शन समाज में प्रतिष्ठापित हो पाएगा।

'संयम ही जीवन है' के उद्घोष के साथ अणुव्रत की यात्रा 1 मार्च, 1949 को प्रारंभ हुई। इन 75 वर्षों में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण के आध्यात्मिक नेतृत्व में 900 से अधिक साधु-साध्वियों एवं सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने देशव्यापी यात्राएं कर नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का भगीरथ प्रयास किया। इसी का परिणाम है कि आज देश में हजारों व्यक्ति अणुव्रत के आदर्शों पर अपना जीवन व्यतीत करते हुए वर्तमान परिस्थितियों और व्यवस्थाओं से संघर्ष कर रहे हैं।

समाज संबंधों का जाल है, जिसकी बुनावट व्यक्ति के हाथों होती है। व्यक्ति की स्वस्थ मानसिकता से स्वस्थ समाज-संरचना की संभावना बनती है। यदि व्यक्ति अस्वस्थ है तो अस्वस्थ समाज का निर्माण होता है। आज यही स्थिति है। हम बीमार हैं - मन से भी और तन से भी। हमारी जीवनशैली हमें प्रतिक्षण रुग्णता की ओर धकेल रही है।

प्रश्न है, हम और हमारा समाज रुग्ण क्यों हैं? दरअसल हमने प्राकृतिक नियमों को जो चुनौती दी है, वही हमारी अस्वस्थता का मूल बिन्दु है। आपाधापी और विलासिता का यह बढ़ता दौर न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य को बिगाड़ रहा है वरन् समाज एवं राष्ट्र के स्वास्थ्य को भी दीमक की तरह चट कर रहा है। इसी का परिणाम है कि चरित्रनिष्ठ नागरिकों के अभाव में विपुल सुख-सुविधाओं के बावजूद समूचा भौतिक विकास बेमानी हो गया है। राष्ट्रीय चरित्र एवं राजनैतिक इच्छाशक्ति के अभाव में भारतीय लोकतंत्र खंड-खंड होता नजर आ रहा है। हमारे अंदर भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, जातीयता, आतंकवाद पर प्रहार करने की प्रबल इच्छाशक्ति ही नहीं रही। सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि यदि गरीबी, साम्प्रदायिकता, जातीयता, भ्रष्टाचार जैसे नासूर समाप्त हो गये तो चुनाव किसके सहारे होंगे? इसलिए सभी इन्हें मिटाने की चर्चा मात्र करते हैं, मिटाने के गंभीर प्रयास नहीं करते। इसीलिए तो पूरा समाज-राष्ट्र बीमार है जिसके मूल में व्यक्ति है।

हम अपने चारों तरफ दृष्टि डालते हैं तो लगता है 'संयम ही जीवन है' का उद्घोष बेमानी हो चला है। परिवार, समाज, धर्म और राजनीति - सभी तरफ वैभव और आडंबर का बोलबाला है। औद्योगिक क्रांति और पाश्चात्य जीवनशैली के अंधानुकरण की वजह से भारतीय जन-जीवन में यह परिवर्तन आया है। आज संपन्न परिवार के मापदंड हैं - बड़े टी.वी., फ्रिज, कूलर, ए.सी., फर्नीचर, कार एवं अन्य भौतिक सुविधाएं। इसी वजह से आज व्यक्ति भौतिक संसाधन जुटाने के लिए अनैतिक तरीकों से

भोग और असंयम के इस बढ़ते दौर में एक अणुव्रत कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है - सोचने की शक्ति, समर्पित भाव, सादगी, श्रमनिष्ठा, सहिष्णुता, आत्मविश्वास, संयम, पढ़ने-सीखने की ललक के साथ वक्तव्य देने की कला तथा सभा को संचालित करने की क्षमता।

उपार्जन करने में जुटा रहता है। पारिवारिक आयोजनों की कौन कहे, राजनैतिक एवं धार्मिक आयोजनों में भी वैभव का प्रचुर प्रदर्शन हो रहा है। हम सभी असंयम एवं भोग की तरफ बढ़ रहे हैं। अर्थ का प्रभाव हमारे जीवन एवं समाज पर बढ़ता जा रहा है जो न सिर्फ असंयम का हेतु है वरन् हिंसा का भी जनक है।

असंयम का यह बढ़ता दौर अणुव्रती कार्यकर्ताओं के लिए चुनौती है। अब समय आ गया है कि हमारी कथनी और करनी का अंतर मिटे और समाज में से सैकड़ों ऐसे व्यक्तित्व निखर कर सामने आएं जिनका जीवन संयम का पर्याय हो। अणुव्रत समाज की एक ऐसी टीम बननी चाहिए जिनके रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार, व्यापार में प्रामाणिकता, सादगी और संयम झलकता हो। संयमित जीवन वाले सैकड़ों-सैकड़ों परिवार निकलेंगे, तभी 'संयम ही जीवन है' का दर्शन समाज में प्रतिष्ठापित हो पाएगा।

भोग और असंयम के इस बढ़ते दौर में एक अणुव्रत कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है - सोचने की शक्ति, समर्पित भाव, सादगी, श्रमनिष्ठा, सहिष्णुता, आत्मविश्वास, संयम, पढ़ने-सीखने की ललक के साथ वक्तव्य देने की कला तथा सभा को संचालित करने की क्षमता। अग्रलिखित बिंदुओं पर चिंतन-मनन और अनुपालन करके अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार में हम सक्रिय सहभागिता निभा सकते हैं -

➡ देश और समाज की समस्याओं के संदर्भ में श्रमनिष्ठा, त्याग, संयम और सादगी का वातावरण बनाकर स्वनियंत्रण तथा परिग्रही मर्यादा का विकास करके।

➡ समाज-परिवर्तन के लिए अणुव्रत का व्यावहारिक अहिंसक विकल्प प्रस्तुत करके।

➡ संस्कारित परिवार, अणुव्रत ग्राम तथा अणुव्रत विद्यालय का निर्माण करके।

➡ सत्याग्रही बन अंगुली निर्देश करने की क्षमता विकसित करके यानी स्वयं की प्रतिरोधात्मक शक्ति जमा करके।

➡ संस्कार विहीनता, घरेलू हिंसा, पर्यावरण प्रदूषण और नशे के विरुद्ध योजनाबद्ध ढंग से रचनात्मक कार्य करके।

➡ स्थानीय स्तर पर आपसी विचार-विमर्श के क्रम को आगे बढ़ाकर, छोटे-छोटे कार्यकर्ता सम्मेलन तथा प्रशिक्षण शिविर लगाकर।

➡ कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों को चारित्रिक विकास की पद्धतियों का प्रशिक्षण देकर।

➡ अणुवत आंदोलन सम्प्रदायातीत है। अतः तेरापंथी कार्यकर्ताओं के अनुपात में दूसरे कार्यकर्ताओं का अधिक होना अपेक्षित है। इस दृष्टि से स्थानीय स्तर पर सक्रिय प्रयास करके।

➡ आदर्श अणुव्रतियों को समाज में प्रतिष्ठापित करके।

➡ अणुव्रत दर्शन के प्रभावी प्रवक्ता बनकर।

कथनी-करनी का अंतर मिटे

नैतिक आचरण हमारे दैनिक जीवन का अंग बने। बात-बात में हम असत्य प्रवंचना बंद करें, पारिवारिक सदस्यों के साथ क्रूर व्यवहार नहीं करें, पर्यावरण के प्रति जागरूक रहें, पानी-अन्न-वनस्पति का संयमित उपयोग करें, अपने कार्य करवाने के लिए रिश्वत का सहारा न लें, अपने कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनें तो अनैतिकता का जो गहन अंधेरा छाया हुआ है, उसे दूर करने में हम सहभागी बन सकते हैं। आज हम सभी की आदत-सी बन गयी है कि नैतिक मूल्यों के पक्ष में बोलते हैं, उनकी चर्चा करते हैं, उनकी पुनर्प्रतिष्ठा की आवश्यकता जताते हैं, पर स्वयं के जीवन में नैतिक मूल्यों को धारण करने से कतराते हैं। जब तक यह स्थिति नहीं बदलेगी, हमारी कथनी और करनी का अंतर नहीं मिटेगा, तब तक नैतिकता को लौटाना संभव नहीं होगा। नैतिकता हमारे स्वयं के लिए नहीं, दूसरों के लिए है, इस अवधारणा को बदलना होगा।

अणुव्रत, चरित्र निर्माण का आंदोलन है - जीवन शुद्धि का आंदोलन है, व्यवहार शुद्धि का आंदोलन है, आत्मदर्शन का आंदोलन है। यह आंदोलन पिछले 75 वर्षों से गतिशील है, यही इस आंदोलन की सफलता है। हम अपने पराक्रम को जगाएं, मनोबल को मजबूत बनाएं और अकेले ही अणुव्रत के पथ पर बढ़ चलें। सफलता निश्चित ही हमारे पास आएगी। ■

✍ अणुव्रत गौरव अलंकरण से सम्मानित लेखक अणुव्रत दर्शन और इतिहास के गहन ज्ञाता हैं। डॉ. कर्णावट वर्षों तक अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष एवं अणुव्रत पत्रिका के सम्पादक रहे हैं।

■ अमरपाल सिंह वर्मा ■

चुनाव प्रचार के बदलते तरीके

हमारे देश में चुनावों का सिलसिला कभी नहीं थमता। शेषन द्वारा किये गये सुधारों का असर हम हर चुनाव में आसानी से देख पाते हैं। प्रचार से लेकर मतदान तक नजर आने वाली बहुत-सी बुराइयां, खामियां अब खत्म हो गयी हैं लेकिन इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है।

वर्ष 1952 में हुए पहले चुनाव के बाद समय-समय पर चुनाव होते रहे हैं। हमारे देश में चुनावों का सिलसिला कभी नहीं थमता। कभी लोकसभा चुनाव आ जाते हैं तो कभी राज्य विधानसभाओं के चुनाव। कभी शहरी निकायों के चुनाव होते हैं तो कभी पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव की गहमागहमी रहती है। पिछले सात दशकों में चुनाव में प्रचार के तौर-तरीके बदल गये हैं। किसी जमाने में बैलगाड़ी के जरिए होने वाला चुनाव प्रचार अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तक पहुँच गया है।

बुजुर्गों से जो कहानियां सुनते हैं, उनके मुताबिक वर्ष 1952 के बाद दो-तीन दशकों तक चुनावों पर सादगी की छाया रही। तब मतदाताओं तक पहुँचने के लिए उम्मीदवार और राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता गाँव-देहात की धूल भरी गलियों को पैदल ही नापा करते थे। चुनाव के शुरुआती दौर में आवागमन के लिए केवल बैलगाड़ियों का सहारा था, बाद में साइकिलें आ गयीं। जीप सरीखे वाहन तो विरले ही प्रत्याशी इस्तेमाल कर पाते थे। नुक्कड़ सभाओं में उसी जीप पर लगे लाउड स्पीकर से भाषण होते। 1980 का दशक आते-आते प्रचार में जीपों और कारों का चलन बहुतायत में होने लग गया। पहले इक्के-दुक्के झंडे ही प्रचार में दिखते थे, अब झंडों के साथ-साथ बैनर, बैज, पोस्टर, पर्चे, टोपी, साफे, गले में पहनने वाले पटके, दीवारों पर नारा लेखन का चलन हो गया। जीपों एवं रिक्शा पर लाउड स्पीकर लगाकर प्रचार को प्रमुखता दी जाने लगी। जब यह प्रचार कानफाड़ू शोर में तब्दील हो जाता तो लोगों की नींद हराम हो जाती।

अस्सी से नब्बे के दशक की शुरुआत तक चुनाव प्रचार के चरम पर पहुँचने का वह दौर सबने देखा है, जब राजनीतिक दलों की झंडियों से गली-मोहल्ले और बाजारों को विवाह के मौके की तरह सजा दिया जाता। हर घर की दीवारों पर पेंटर 'वोट दीजिए' की अपील पेंट कर जाते। चुनाव कार्यालयों में किसी अमीर के घर होने वाली शादी में परोसे जाने वाले व्यंजनों से होड़ करने वाले पकवानों की खुशबू फैली रहती। दर्जनों दर्जी चुनावी दफ्तरों में झंडे, बैनर सिलने में व्यस्त नजर आते। प्रिंटिंग प्रेस वालों को चुनावी सामग्री छापने से फुरसत न मिलती। महानगरों से लेकर हर छोटे-बड़े शहर-कस्बे में चुनावी झंडे, पोस्टर, बैज की बिक्री की दुकानें खुल जातीं। यह वह दौर था, जब चुनाव प्रचार पर भारी-भरकम खर्च होता था। आदर्श आचार संहिता तब भी लगती थी लेकिन उसका कौन और कितना पालन करता था, यह जगजाहिर है।

इसके बाद चुनाव में राजनीतिक दलों और नेताओं की मनमानी पर अंकुश लगाने के लिए टी. एन. शेषन का उदय हुआ। शेषन 12 दिसंबर 1990 से 11 दिसंबर 1996 तक भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त के पद पर रहे।

इस दौरान उन्होंने चुनावों को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने के लिए कई कदम उठाये। उन्होंने मतदाता पहचान पत्र की शुरुआत कर फर्जी मतदान रोकने की दिशा में बड़ा कदम उठाया। शेषन ने मतदाताओं को प्रलोभन देने, वोटों की खरीद रोकने, पोलिंग बूथों पर केन्द्रीय सुरक्षा बलों को तैनात करने जैसे सख्त कदम उठाये तो मनमाने चुनाव प्रचार को भी नियंत्रित किया।

शेषन की सख्ती से चुनाव से हजारों झंडे-झंडियां, विशाल बैनर, पोस्टर, वॉल पेंटिंग आदि गायब हो गये। अब हर चुनाव में नाम मात्र के झंडे, बैनर ही नजर आते हैं। नारे, वोट की अपील लिखकर सार्वजनिक स्थानों और किसी के घर के दर-ओ-दीवार काले करने की तो अब कोई सोच भी नहीं सकता। इसके बाद बड़ी सभाओं और नुक्कड़ सभाओं का सिलसिला जारी रहा। अखबारों के जरिए प्रचार भी चलता रहा। दो दशक पहले शुरू हुई मोबाइल क्रांति ने चुनाव में एसएमएस एवं एमएमएस के जरिए बल्क मैसेज भेजने की राह खोल दी। खबरिया चैनल भी प्रचार का माध्यम बन गये।

आज सोशल मीडिया के दौर में चुनाव प्रचार नये ही दौर में जा चुका है। अब हर हाथ में स्मार्ट फोन है तो राजनीतिक दल क्यों पीछे रहते? उन्होंने इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर (नया नाम एक्स), व्हाट्सएप समेत तमाम प्लेटफॉर्मों का इस्तेमाल प्रचार के लिए शुरू कर दिया। वे मनचाही ऑडियंस तक अपना रिकॉर्डेड वॉयस एवं वीडियो मैसेज पहुँचा रहे हैं। पलक झपकते ही यह मैसेज लाखों-करोड़ों मतदाताओं के मोबाइल फोन तक पहुँच जाता है। कोई भी वेबसाइट खोल लें, वहाँ चुनावी विज्ञापन जरूर दिखेंगे। पारंपरिक चुनावी सभाएं अब भी आयोजित की जा रही हैं लेकिन जो लोग सभा में नहीं पहुँच पाते, उन तक टीवी लाइव कवरेज और सोशल मीडिया पर लाइव स्ट्रीमिंग के जरिए नेताओं का भाषण पहुँच रहा है। अब तो चुनाव प्रचार के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जैसा अत्यंत प्रभावी माध्यम मिल गया है। एआई चैट जीपीटी से स्वयं ही जानकारी लेकर चुनाव के लिए कंटेंट, फोटो एवं वीडियो तैयार कर देता है।

समय के साथ चुनाव प्रचार में बदलाव आ गया है। अब दर्जी झंडे सिलते नहीं दिखते। जिन प्रिंटिंग प्रेस वालों को कभी फुरसत नहीं मिलती थी, वे अब इंतजार करते हैं कि कोई चुनावी पर्चे-पोस्टर छपवाने वाला आ जाये। कानफोड़ू शोर से निजात मिल चुकी है। लाउड स्पीकर लगी जीपें, ऑटो एवं हाथ रिक्शा नजर नहीं आते। बाजारों में चुनावी प्रचार सामग्री से अटी दुकानें नहीं दिखतीं। अब ऑनलाइन कंटेंट का जमाना है। आईटी कंपनियां हर चुनाव में करोड़ों-अरबों का कारोबार करती हैं। बदले परिवेश में प्रचार समेत पूरी चुनावी मुहिम ही आईटी कंपनियों के हाथों में आ गयी है। अब तो चुनाव पूर्व सर्वे पर ही करोड़ों खर्च हो जाते हैं।

शेषन द्वारा किये गये सुधारों के बाद प्रचार से लेकर मतदान तक नजर आने वाली बहुत-सी बुराइयां, खामियां अब खत्म हो गयी हैं लेकिन इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। चुनाव में खर्च की जाने वाली राशि की सीमा तय है लेकिन असल में कितना खर्च होता है, यह हम सभी जानते हैं। चुनाव लड़ने के लिए अथाह धनराशि की जरूरत पड़ती है। इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिए राजनीतिक दलों को मिले चंदे के आंकड़ों से सब कुछ सामने आ चुका है। अगर वास्तव में चुनावों को निष्पक्ष एवं पारदर्शी बनाना है तो इसके लिए समुचित उपाय करने ही होंगे। राजनीतिक दलों पर इसकी जिम्मेदारी सर्वाधिक है। चुनावों में खर्चीले हवाई दौरों और सभाओं व रैलियों का विकल्प मतदाताओं के ऑनलाइन रूबरू के रूप में खोजा जाना चाहिए। ऐसा होने पर लाखों लोगों को ढोकर सभाओं में लाने-वापस छोड़ने और उनके खाने-पीने पर होने वाला खर्च बचाना संभव है। ऐसे ही मतदान से पहले शराब, राशन, कपड़े, नकदी आदि बाँटने से तौबा करके भी अपव्यय को घटाने में योगदान दिया जा सकता है। पूरे पाँच साल और फिर चुनावों से कुछ महीने पहले विज्ञापनों पर सरकारी खजाने का अरबों का खर्च भी अपव्यय ही है, इसे खत्म करने या घटाने पर विचार किया जाना चाहिए। चुनाव में सैकड़ों वाहनों की रैलियों से 'शक्ति प्रदर्शन' करने की आदत छोड़कर जहाँ हम पैसा बचा सकते हैं, वहीं पर्यावरण पर भी बड़ा उपकार करेंगे। ■

करीब तीन दशक तक प्रिंट मीडिया में कार्य करने वाले संगरिया (हनुमानगढ़) निवासी लेखक उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। आपके आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

■ राजेश पाठक ■

भ्रष्टाचार का उपचार है जरूरी

भ्रष्टाचार के निवारण हेतु कुछ ढांचागत परिवर्तन एवं प्रयोग की आवश्यकता है। इसके लिए विभिन्न विभागों द्वारा जनता को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की समय-सीमा का निर्धारण एवं उसका उल्लंघन होने पर संबंधित कर्मियों पर कठोर कार्रवाई का प्रावधान करना होगा।

भ्रष्टाचार का संबंध आचरण से है। इस कुप्रथा को महज कानून-निर्माण करके रोका या नियंत्रित नहीं किया जा सकता। लोगों की सोच में आवश्यक बदलाव लाकर ही इस दुष्प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जा सकता है। देश की आजादी के बाद इस कुप्रथा के उन्मूलन के लिए अनेक नियमों एवं कानूनों का निर्माण हुआ। प्रशासनिक सुधार आयोग गठित हुए, समितियां बनीं एवं भ्रष्टाचार निरोधक दस्तों का गठन हुआ। फिर भी भ्रष्टाचार का ग्राफ नीचे न गिरकर ऊँचा ही उठता चला गया और आज यह समाज, राज्य एवं देश की स्थापित व्यवस्था का अभिन्न अंग बन गया है।

भ्रष्टाचार के निवारण हेतु जहाँ सरकारी क्रियाकलापों में वैज्ञानिक सोच व प्रबंधन का प्रयोग जरूरी है, वहीं समय के अनुरूप सरकार के अभिकरणों में कुछ ढांचागत परिवर्तन एवं प्रयोग की भी आवश्यकता है। इसके लिए सरकार के सेवा प्रदायी तंत्र को विकसित करना होगा। विभिन्न विभागों द्वारा जनता को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की समय-सीमा का निर्धारण एवं उसका उल्लंघन होने पर संबंधित कर्मियों की जिम्मेदारी तय कर उनके खिलाफ कठोर अनुशासनात्मक एवं अन्य आवश्यक कार्रवाई का प्रावधान करना होगा। ज्ञातव्य है कि अनेक राज्यों में विभिन्न विभागों को राइट टू सर्विसेज एक्ट के दायरे में ले आया गया है तथापि इस दिशा में और भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

वहीं, जिन लोगों को निर्धारित समय सीमा के बहुत पहले अपने कार्यों के निष्पादन की आकांक्षा एवं आवश्यकता हो, उनके लिए ऐसी व्यवस्था की जाये कि वे अतिरिक्त शुल्क प्रदान कर सेवाएं प्राप्त कर सकें। इस हेतु कानूनों के निर्माण में इस सीमा तक सतर्कता बरतनी होगी जिसमें सरकारी सेवकों को स्वविवेकाधिकार का कम-से-कम प्रयोग करना पड़े। नियम व कानून सुस्पष्ट एवं कम-से-कम चुनौती योग्य हों। यह व्यवस्था जहाँ भ्रष्टाचार पनपने में अवरोध का काम करेगी, वहीं सरकार की आय में यथोचित वृद्धि हो सकेगी जिसे वह जनोपयोगी कार्यों में खर्च कर सकती है।

इतना ही नहीं, भर्ती प्रणाली भी दोषपूर्ण है जो किसी न किसी रूप में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि राज्य लोकसेवा आयोगों के अध्यक्ष एवं सदस्यों का चयन उच्च छवि वाले व्यक्तियों के बीच से किया जाये जिनका अतीत विवादास्पद नहीं रहा हो। भर्ती प्रणाली को समय-समय पर आवश्यकतानुसार संशोधित किया जाये ताकि संवेदनशील, कर्मठ एवं क्रियाशील व्यक्तियों का चयन हो सके। भर्ती परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में नैतिक आचरण, उच्च मनोबल, मानवीय संवेदना, जीवन दर्शन आदि से संबंधित विषयों का भी समावेश हो। प्रायः देखा जाता है कि 15 अगस्त, 26 जनवरी या ऐतिहासिक महत्व के अन्य अवसरों पर सरकारी कर्मियों को

जिस प्रकार सरकार 'आदर्श ग्राम' की संकल्पना को कार्य रूप देने की बात करती है, उसी प्रकार हर राज्य प्रत्येक वर्ष एक जिला, जिला प्रत्येक वर्ष एक प्रखंड एवं प्रखंड प्रत्येक वर्ष एक ग्राम पंचायत कार्यालय को 'फ्री फ्रॉम करप्शन' जैसे लक्ष्य को हासिल करने की कोशिश करे एवं इस दिशा में ईमानदारी से प्रयासरत रहे तो बातें बनती नजर आएंगी।

उत्कृष्ट कार्यों के लिए सरकार द्वारा सम्मान प्रदान किया जाता है। इन अवसरों पर निकृष्ट कार्य करने वालों को भी सबसे निकृष्ट पदाधिकारी/कर्मचारी का तमगा सरकार द्वारा सार्वजनिक तौर पर दिया जाना चाहिए। इसकी घोषणा मात्र से ही सरकारी कर्मियों में खलबली मच जाएगी और वे हरसंभव प्रयास करेंगे कि कार्यों के निष्पादन के दौरान उनके आचरण में कोई गिरावट न आने पाये।

जिस प्रकार सरकार 'आदर्श ग्राम' की संकल्पना को कार्य रूप देने की बात करती है, उसी प्रकार हर राज्य प्रत्येक वर्ष एक जिला, जिला प्रत्येक वर्ष एक प्रखंड एवं प्रखंड प्रत्येक वर्ष एक ग्राम पंचायत कार्यालय को 'फ्री फ्रॉम करप्शन' जैसे लक्ष्य को हासिल करने की कोशिश करे एवं इस दिशा में ईमानदारी से प्रयासरत रहे तो बातें बनती नजर आएंगी। सरकार को इस दिशा में भी प्रयास करना चाहिए कि एक ऐसा सर्वमान्य पदाधिकारी ढूंढ़ा जा सके जो भ्रष्ट आचरण से सर्वदा मुक्त रहा हो एवं अन्य लोगों को भ्रष्ट बनने से रोक सका हो ताकि उसे 'भ्रष्टाचार मुक्त कार्यालय का ब्रांड एम्बेसडर' घोषित किया जा सके। इन कदमों के उठाये जाने से धीरे-धीरे ही, सही परंतु भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक जमीन तैयार हो सकेगी जो भ्रष्ट कर्मियों के जमीर को सद्गुणों से भर देगी और जैसे-जैसे वे अनैतिक आचरणों से दूर होते जाएंगे, वैसे-वैसे वे स्वयमेव मानवीय मूल्यों एवं राष्ट्रीयता की सोच के नजदीक होते चले जाएंगे।

सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति तथा कर्मचारियों में ईमानदारी व कर्त्तव्यपरायणता की भावना हो तो भ्रष्टाचार पर काबू पाया जा सकता है। सरकारी कार्य के दौरान मेरे समक्ष अनेक अवसर आये जब मैं भ्रष्टाचार की उफनती नदी में अपने को बहाते हुए आर्थिक साम्राज्य के समंदर में जा मिलता परंतु शिक्षक पिता से विरासत में मिले नैतिक संबल ने सदैव ही मुझे यह सब करने से रोका।

लगभग दस वर्ष हुए। एक उद्योग के लिए बिजली के तार खींचे जाने थे। तार लगभग बीस रैयतों की जमीन से होकर गुजरने थे। रैयतों व उद्योगपति के बीच मुआवजों को लेकर बहुत दिनों से गतिरोध कायम था। इस कार्य के शांतिपूर्ण व समुचित समाधान हेतु मुझे दंडाधिकारी के रूप में प्रतिनियुक्त किया गया। वैचारिक व सद्भावनापूर्ण माहौल में दोनों पक्षों के बीच मैंने सुलह कराया। दो दिन बाद उसी उद्योगपति का मेरे पास फोन आया। वे मेरे आवास पर चाय पीना चाहते थे।

सामाजिक समरसता को भांपते हुए मैंने शाम सात बजे का समय दे दिया। आधा घंटे तक ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक सरोकार, उद्योगों में श्रमिकों की भागीदारी पर चर्चाएं हुई। बातचीत के दरम्यान मुझे भान हो चला था कि वे अपने कार्य के बदले मुझे उपकृत करने आये थे। मैं यह सोच-समझ ही रहा था कि उन्होंने अपनी जेब से पांच सौ रुपये का एक बंडल टेबल पर रख अनुरोध पूर्वक स्वीकार कर लेने को कहा।

मैंने विनम्रतापूर्वक उसे वापस उठा लेने को कहा। साथ ही नियमों का हवाला भी दिया कि सिर्फ लेना ही नहीं, रिश्वत देना भी अपराध की श्रेणी में आता है। फिर भी वे नहीं मान रहे थे। अकस्मात् मेरे मन में एक विचार कौंधा। मैंने उस बंडल से पाँच सौ का एक नोट निकाला और शेष उनकी जेब में जबरन रख दिया। वे हतप्रभ थे। लौटते समय वे जब अपनी गाड़ी की ओर बढ़ रहे थे, मैं भी साथ-साथ चलकर उनकी गाड़ी के पास पहुँचा और पाँच सौ का वह नोट उन्हीं के ड्राइवर को मिठाई खाने के लिए दे दिया। उस घटना ने मुझे भ्रष्टाचार के विरुद्ध जमीन तैयार करने की अतिशय ताकत दी।

इतना ही नहीं, सरकार द्वारा सर्दी के मौसम में गरीबों व असहायों के बीच बाँटे जाने वाले कंबलों पर कोई निशान या लोगो नहीं रहने के कारण अनियमितता की आशंका बनी रहती थी। मेरे सुझाव पर झारखंड सरकार ने वर्ष 2016 से कंबलों पर लोगो लगाना शुरू किया। ■

गिरिडीह निवासी लेखक झारखंड सरकार में जिला सांख्यिकी पदाधिकारी के दायित्व निर्वहन के साथ ही साहित्य सृजन में संलग्न हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव-बस्ती

हमारा परिवार, खुशियों का संसार

परिवार के सही मार्गदर्शन से व्यक्ति सफलता के उच्च शिखर को प्राप्त करता है। परिवार से भावनात्मक सहारा मिलता है। परिवार से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। अच्छे व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों से सभ्य समाज की संकल्पना साकार होती है।

कहने में 'परिवार' बहुत ही साधारण शब्द लगता है, परन्तु हमारे जीवन की सभी प्रक्रियाएं 'परिवार' के इर्द-गिर्द ही चलती रहती हैं। संस्कार, व्यवहार, चरित्र, शिक्षा, रहन-सहन ये सभी परिवार से जुड़े होते हैं। परिवार आनंद, उल्लास, समाधान, निर्वाह, सहयोग जैसी सुखद संवेदनाओं एवं परिस्थितियों का भरा-पूरा गुलदस्ता है। व्यक्तियों से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र और फिर विश्व का निर्माण होता है। परिवार समाज की एक छोटी इकाई है, जहाँ पर हमारे बचपन की नींव खड़ी होती है। हमारा पालन-पोषण परिवार के द्वारा ही होता है। परिवार हमारी प्रथम पाठशाला मानी जाती है। हम परिवार से ही शिक्षा, संस्कार, संस्कृति सीखते हैं और बड़े होकर इस योग्य बनते हैं कि इन सबकी रक्षा कर सकें।

परिवार से सुरक्षा, सुविधा, सहायता जैसी चीजें मिलती हैं। परिवार के सही मार्गदर्शन से व्यक्ति सफलता के उच्च शिखर को प्राप्त करता है। परिवार से भावनात्मक सहारा मिलता है। परिवार से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। अच्छे व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों से सभ्य समाज की संकल्पना साकार होती है। संयुक्त परिवार में रिश्तों की महक अलग ही नजर आती थी। इस परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची आदि साथ में रहते थे। गाँव में अधिकतर संयुक्त परिवार ही होते थे। संयुक्त परिवार में आर्थिक, सामाजिक या निजी परेशानी या समस्या होने पर सभी सदस्य मिल-जुलकर उसे हल करते थे। बच्चे जब दादी-दादी तथा बड़ों से किस्से-कहानियां सुनते थे तो सद्गुण और संस्कार की बातें सीखते। पूरा गाँव एक परिवार की तरह ही रहता था। किसी के यहाँ कोई रिश्तेदार आ जाता तो पूरा गाँव उसका आदर-सत्कार करता था। गाँव में किसी के यहाँ कोई सुख-दुःख होता तो उसे सब अपना मानकर सहभागिता निभाते।

एकल परिवार और संयुक्त परिवार दोनों में अच्छाइयां हैं तो कुछ बुराइयां भी हैं, पर यह तो निश्चित है कि एकल परिवार की परिकल्पना में संस्कार और संस्कृति का क्षरण हुआ है। एकल परिवार में हमें स्वेच्छा से जीने की स्वतंत्रता मिलती है, घूमने-फिरने आदि की आजादी रहती है। संयुक्त परिवार में अपेक्षाकृत कम स्वतंत्रता रहती है। कहीं न कहीं इसी मानसिकता के चलते संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ है। हमें अपने परिवार से बहुत कुछ मिलता है, परिवार के प्रति हमारी जिम्मेदारी और कुछ कर्त्तव्य हैं, जिन्हें हमें तन-मन-धन से निभाना चाहिए जिससे परिवार में खुशियाँ आएं और हम आनंद, उल्लास और उमंग से जीवन जीएं।

नजरिया और नजारे

इंजी. आशा शर्मा-बीकानेर

राम प्रसाद को वृद्धाश्रम के मुख्य दरवाजे से भीतर घुसते देखा तो जगजीवन का कलेजा मुँह को आ गया। नयी पीढ़ी के संस्कारों को कोसता जगजीवन उधर लपका लेकिन कुछ सोचकर रुक गया। वह दोस्त को शर्मिंदा नहीं करना चाहता था। झिझकते हुए फोन लगाया तो राम प्रसाद का चहकता हुआ "हेलो" सुनकर चौंक गया।

"क्या बात है, बहुत खुश लग रहे हो? कोई लॉटरी लगी है क्या?" जगजीवन ने पूछा। वह वृद्धाश्रम वाली बात जान-बूझकर टाल गया।

"लॉटरी ही समझो।" राम प्रसाद ने बात को घुमाते हुए कहा।

"ऐसा क्या हुआ है?" जगजीवन ने उसे कुरेदा।

"अरे यार, क्या बताऊं? दो महीने पहले किसी काम से वृद्धाश्रम में आया था। देखा तो यहाँ सब लोग बुझे-बुझे से थे। अपनों से दूर जो थे। फिर खयाल आया कि क्यों न आधा खाली दिखने वाले गिलास को आधा भरा हुआ दिखाया जाये। तो बस! मैं भी यहाँ आ गया। प्रयोग बहुत सफल रहा और आज इस वृद्धाश्रम में ठहाके गूँजते हैं, जहाँ कभी मनहूसियत पसरी रहती थी।" राम प्रसाद ने उत्साह से बताया।

"लेकिन तुमने ऐसा किया क्या?" जगजीवन की जिज्ञासा चरम पर थी।

"कुछ खास नहीं, बस यही बात सबके दिमाग में बिठाने की कोशिश की कि इसे वृद्धाश्रम नहीं बल्कि कॉलेज का हॉस्टल समझो और वैसे ही जीओ जैसे कॉलेज के दिनों में जिया करते थे - बेफिक्र और बिंदास। कुछ दिन सबको अटपटा लगा लेकिन धीरे-धीरे सब इस थ्योरी को अपना रहे हैं।" राम प्रसाद ने उत्साह से बताया।

"सही कहा तुमने। नजरिया बदलते ही नजारे भी बदल जाते हैं दोस्त।" जगजीवन ने कहा। आज उसे भी जिंदगी का गिलास आधा भरा हुआ दिखायी दे रहा था।

परहित की हो कामना...

राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव - विदिशा

सहज-भाव सह लीजिए, दु:ख पीड़ा अपमान।
यही आत्म-उत्कर्ष के, बनते हैं सोपान।।

परिचित या अनजान हो, दाता हो या दीन।
सबसे सम व्यवहार हो, सौम्य सहज शालीन।।

नीति-रीति की बात को, कहिए सीना तान।
पक्षपात से दूर ही, रहते चतुर सुजान।।

दिन को दिन कह दीजिए, और रात को रात।
हित-अनहित मत सोचिए, कहिए सच्ची बात।।

जीवन के मैदान में, हार मिले या जीत।
होठों पर मुस्कान हो, मन में सच्ची प्रीत।।

मन में मत पालें कभी, लेशमात्र अभिमान।
सहज भाव से बाँटिए, नेह और मुस्कान।।

नियमित पाठन-पठन का, जिनको है अभ्यास।
उनका ही जीवन सफल, होता लिये सुवास।।

जिसमें नहीं सुगंध हो, उसे कहें क्यों 'इत्र'।
विपदा में जो छोड़ दे, उसे कहो मत 'मित्र'।।

मानवता का मान्यवर, जान लीजिए मर्म।
परहित से बढ़कर नहीं, दूजा कोई धर्म।।

परहित की हो कामना, हरें परायी पीर।
यश-परिमल स्वयमेव ही, बिखरे चारों तीर।।

कहानी

भाग्य

■ दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' ■

"बाबूजी,आप इस उम्र में दूर-दराज के इलाके के कार्यक्रमों में सम्मानित होते हैं। जिले और गाँव का नाम रोशन कर रहे हैं। कितने भाग्यवान हैं आप!" शिवनारायण एक बार तो स्तब्ध रह गये...फिर धीरे-धीरे उनके मन में खुशियों भरा एक एहसास जगमगाने लगा-नृपेन्द्र ने सच कहा, वास्तव में मैं भाग्यवान हूँ।

शिमला की वह ठंडी रात शिवनारायण के लिए भारी पड़ गयी थी। उन्होंने कई करवटें बदलीं, आँखें मूँदकर लेटे रहे कि अब नींद आ जाये, पर कोई हिकमत काम नहीं आयी। वे यहाँ एक साहित्यिक कार्यक्रम में आये थे। कड़ाके की ठंड देखते हुए उन्होंने अपने कंबल के ऊपर गेस्ट हाउस की रजाई भी खींच ली थी। फिर तो मिनटों में ऐसी गर्माहट आ गयी कि आँखें मूँदने लगीं...मगर तभी मोबाइल बज उठा। पत्नी का फोन था। झल्लाहट के साथ पूछा, "अब क्या हो गया? अभी शाम को तो बात हुई थी।" "हाँ, तब याद नहीं पड़ा। आज रमाकांत की बरखी है। उनके बेटे नृपेन्द्र ने पहली बार कोई आयोजन किया है, मगर संयोग देखो कि आज अपने चारों घर में कोई उनके यहाँ जाने वाला ही नहीं है!" पत्नी ने बताया।

"नहीं है तो न सही। आज के भाग-दौड़ वाले समय में यह कोई बड़ी बात नहीं है।" पत्नी की बात काटते हुए शिवनारायण ने कहा, "सुबह नृपेन्द्र से बात करके मैं स्थिति स्पष्ट कर दूँगा। अब शांति से सो जाओ।"

उन्होंने फोन काट दिया था। उन्होंने दोबारा सोने के लिए आँखें मूँद तो लीं, लेकिन नींद की जगह आँखों में पुराने दिनों की छवियाँ उमड़ने-घुमड़ने लगीं...रमाकांत उनके ही मोहल्ले का था। शिवनारायण उससे एक साल बड़े थे, पर दोनों साथ पढ़ते थे।

शिवनारायण की भाभी की बड़ी बहन रमाकांत के भाई से ब्याही थीं। इसलिए बचपन से ही उस परिवार के साथ नजदीकी थी। तब शिवनारायण उनके यहाँ भेंटस्वरूप आम, मटरफली, शकरकन्द वगैरह देने जाते थे। असल में उन दिनों वे लोग गरीब थे, जबकि शिवनारायण का परिवार खुशहाल था।

तीन साल पहले रमाकांत गंभीर बीमारी की चपेट में आ गया था। इसके बाद शिवनारायण उनके यहाँ कुछ अधिक ही जाने लगे थे। तब उनकी पत्नी से मिलने पर रमाकांत की पत्नी ने कहा था, "अपने कुल-परिवार वालों में वक्त-जरूरत कौन उनके पास नहीं पहुँचता था? वह चुपचाप पैसा निकाल कर दे देते थे। लोग पंद्रह-सोलह लाख लेकर बैठे हैं। जबसे सुने हैं कि कैंसर हुआ है, झाँकने भी नहीं आते। यही भैया अकेले हैं जो दसवें-पंद्रहवें दिन एक चक्कर...।"

उन्होंने अकुलाहट के साथ करवट बदली। सारे विचारों को झटककर आँखें मूँद लीं, किन्तु पता नहीं कैसे उसका मन उस प्रकरण से जुड़ गया...। रमाकांत उन दिनों रिटायर होकर गाँव में रहने लगा था। हालाँकि लखनऊ से जिला मुख्यालय तक उसके फ्लैट और मकान थे, मगर उसे गाँव की रिहाइश अधिक जमती थी। चार एकड़ जमीन उसने गाँव में भी खरीद रखी थी। पुरखों वाली जमीन का उसका शेयर था ही। उस रोज शिवनारायण घर के सामने गुमसुम-सा खड़ा था। रमाकांत ने कार रोक दी थी। " नमस्ते भाई, क्या बात है?"

"नमस्कार, कुछ खास नहीं। वैसे ही...आप कहाँ...? शिवनारायण ने पूछा।

"अभी ससुराल के लिए निकला हूँ। शाम तक वापसी करनी है।"

"पाँच मिनट रुको तो कपड़ा बदल कर आ जाऊँ। मुझे चौराहे पर छोड़ देना। कोई दिक्कत तो नहीं!" उसने रमाकांत की तरफ देखा।

"आ जाओ, मेरा तो फायदा ही है। चौराहे तक एक बुद्धिजीवी का साथ मिल जाएगा।" रमाकांत ने जवाब दिया।

दस मिनट बाद वे आकर कार में बैठ गये। गाड़ी चकरोड से आगे प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना से तैयार चिकनी रोड पर आ गयी थी। तभी रमाकांत ने पूछा, "भाई, आप तो पढ़ने-लिखने वाले व्यक्ति हो। मुझे बताओ, जिन्दगी में सबसे महत्वपूर्ण क्या होता है?"

शिवनारायण का मन सुबह से ही भारी था। यह बासठ-तिरसठ साल की उम्र होती ही ऐसी है कि आदमी न चाहते हुए भी महीने में एक-दो बार अतीत में जरूर चला जाता है। ऐसे मौके जब भी आते हैं, उनको लगता है भाग्य के मामले में वे औरों के मुकाबले में काफी कमजोर रहे हैं। रमाकांत के आने के पूर्व वे अपने भाग्य को ही कोस रहे थे। तभी इस सवाल पर तल्ख हो उठे, "जीवन में सबसे बड़ा भाग्य होता है, जिसकी आप मिसाल हैं।"

यहीं तक होता तब भी गनीमत थी। शिवनारायण ने अपनी कुंठा उगलते हुए पूरा इतिहास उधेड़ कर रख दिया था। चौराहे तक पहुँचते-पहुँचते रमाकांत के भरे-भरे गेहुंए चेहरे पर अपमानबोध की गहरी स्याही पुत गयी थी।

नींद के लिए बेचैन शिवनारायण इस घटना की स्मृति से बेहद आहत हो उठे...वे चारपाई पर बैठ गये। मोबाइल में समय देखा। बारह बजने वाले थे। एक बार फिर पुरानी यादों में डूबते-उतराते रहे।

रमाकांत शुरू में मिचमिची आँखों वाला रोगी जैसा कमजोर लड़का था, जबकि शिवनारायण स्वस्थ और चटक थे। कक्षा पाँच का रिजल्ट आया तो पाँच मेधावी बच्चों की लिस्ट में वे तीसरे नम्बर पर थे, जबकि रमाकांत साधारण नम्बरों से पास हुआ था। दसवीं में तो हालत और भी खराब थी, वे छप्पन प्रतिशत के साथ गुड सेकंड क्लास में पास हुए और रमाकांत तीन नम्बर कृपांक के साथ प्रोन्नत हो पाया था।

इसके बाद एक टर्निंग प्वाइंट आया। रमाकांत की शादी हो गयी। पत्नी उम्र में ढाई-तीन साल बड़ी थी। रंग भी साफ नहीं था, लेकिन नाक-नक्श ठीक थे। सबसे बड़ी बात यह कि वह नयी-नयी मास्टरनी लगी थी और सम्पन्न परिवार से थी, जबकि शिवनारायण के परिवार में एक-एक कर दुश्वारियां आती गयीं। पहले खेती-किसानी देखने वाले बड़े बाबूजी के लड़के नहीं रहे, चार-पाँच महीने पहले बंगाल में पिताजी का नया ट्रक पलटकर खाई में चला गया। ड्राइवर-खलासी दोनों मारे गये थे और ट्रक चकनाचूर हो गया था। ट्रक का अभी बीमा भी नहीं हुआ था। इसके बाद काका के कोल डिपो में आग लग गयी। इसी के साथ परिवार की सारी खुशियां भी खाक हो गयीं और वे लोग कंगाली की चपेट में आ गये थे।

बड़ी मुश्किल से इंटरमीडिएट तक उनकी शिक्षा हो पायी थी। इस परीक्षा में भी उनके अंक रमाकांत से अच्छे थे। अच्छी मेरिट की वजह से बीटीसी की ट्रेनिंग में उनका चयन हुआ और वे मास्टर हो गये। फिर भी शादी के लिए कोई ढंग का रिश्ता नहीं आया। वे सत्ताईस साल के हो गये थे, तब एक विधवा मास्टरनी से रिश्ता बन पाया।

उधर, रमाकांत की पढ़ाई जारी रही। इसके साथ ही उसके मरियल-से व्यक्तित्व में निखार आता चला गया। पत्नी की कमाई तो थी ही। समय-समय पर ससुराल वाले भी उसकी मदद करते रहे। उसने पढ़ाई में मेहनत भी की, अन्यथा एमएससी एजी में कॉलेज का टॉपर न बन पाता। इस आखिरी रिजल्ट की धमक ऐसी थी कि उसने जिस पद के लिए भी आवेदन किया, वहीं से बुलावा पत्र आया। अंततः उसने बीडीओ का मलाईदार पद ज्वाइन किया। उसके बच्चे भी पढ़ाई-लिखाई में ठीक निकले। एक ही लड़का नृपेन्द्र है। उसने एमबीए किया था। आज वह सफल बिजनेसमैन है। एक लड़की ने बीटेक किया था। रमाकांत ने एक सम्पन्न परिवार के इंजीनियर लड़के से उसकी शादी कर दी। आजकल

दोनों एक ही फर्म में लगे हैं। दूसरी लड़की एमएड थी, वह ससुराल में अपना स्कूल सम्भालती है। रमाकांत जिला विकास अधिकारी के पद से रिटायर हुआ था। चेहरे पर रहने वाली सदाबहार प्रसन्नता और आत्मविश्वास से भरा उसका व्यक्तित्व गरिमामय प्रतीत होता था।

शिवनारायण इस बीच चेहरे से कुंठित लगने लगे। बात-बात में चिढ़ जाना उनका स्वभाव बन गया। हालाँकि उनकी स्थिति भी खराब नहीं है। संयुक्त परिवार में भाइयों के बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर और अफसर हैं। लड़कियां अच्छे परिवार में ब्याही हैं। उनका दामाद पुलिस इंस्पेक्टर है, बेटा उभरता हुआ वकील है। सबसे छोटे भाई की लड़की मोबाइल कंपनी में रीजनल मैनेजर है। वे स्वयं हेडमास्टर के पद से रिटायर हैं। अच्छी-खासी पेंशन उठाते हैं। पत्नी अभी नौकरी कर रही हैं। भाइयों के बच्चे उन्हें मान-सम्मान देते हैं, मगर अपने विषय में सोचते हुए वे इन बातों पर ध्यान ही नहीं देते। उनका सारा फोकस तो इस पर रहता है कि उन्होंने बच्चों को पढ़ाना चाहा तो वे मन माफिक प्रदर्शन न कर सके। उनको राष्ट्रपति पुरस्कार मिलने की बात आयी तो इंटरव्यू के समय तीस प्रतिशत जिन्दगी और सत्तर प्रतिशत मौत के बीच झूलते हुए ऑपरेशन थिएटर में पड़े थे। आखिर बार-बार उनके साथ ही क्यों होता है ऐसा? उन्हें जो बीमारी थी, उसमें ज्यादातर लोग तो मर जाते हैं। जो बचते हैं, उनमें अधिकतर के साथ कुछ मानसिक या शारीरिक विकृति बची रह जाती है, जबकि वह एकदम दुरुस्त हैं। कहानी-लेख लिखते हैं। लम्बी यात्राएं कर लेते हैं। गौर इन बातों पर करना चाहिए, किन्तु अपने दुर्भाग्य पर कुढ़ना उनका स्थायी भाव बन चुका है। यही कारण था, जिससे वे रमाकांत के सीधे-से सवाल पर अंट-शंट बोल गये थे। बाद में जब रमाकांत की बीमारी का पता चला तो वे अपराधबोध से भर उठे थे...और फिर पन्द्रह-बीस दिन में उससे मिलने जाने लगे थे...।

इन्हीं सब बातों में उलझे हुए शिवनारायण पता नहीं कब नींद के आगोश में चले गये...। सुबह जब जागे तो साढ़े सात बज रहे थे। जल्दी से मंजन करके गेस्ट हाउस के बाहर सड़क पर आये और चाय की दुकान में बैठ गये। उन्होंने चाय का गिलास उठा लिया और अखबार के पन्ने पलटते हुए समाचारों के शीर्षक भी देखते रहे। दस मिनट बाद चाय वाले को पैसे देकर वे सीधे रूम में आ गये। नहाने और तैयार होने के बाद ऊनी कुर्ता, सदरी और सफेद पैंट में सजे-धजे रूम से बाहर आये तो गेस्ट हाउस का मौन इंगित कर रहा था कि लोग कार्यक्रम स्थल की तरफ जा चुके हैं। वे फाइल बगल में दबाये थोड़ा तेज चलकर इधर आ गये। लोग नाश्ता करने में जुटे थे। उन्होंने एक प्लेट उठायी और दो ब्रेड पकौड़ों पर टोमैटो सॉस डालकर एक किनारे आ गये। पकौड़े समाप्त करके उन्होंने कॉफी ली।

आज शिवनारायण का सम्मान होना था। वे धूप में बैठे नयी उम्र के कवि निर्मल कुमार के पास पहुँच गये। बोले- "निर्मल जी, मेरे सम्मानित होने के अवसर की कुछ फोटो लेनी होंगी। क्या आप?"

"बिल्कुल सर, मुझे खुशी होगी।"

उन्होंने अपना स्मार्टफोन उसकी तरफ बढ़ाया और कुछ कहते, इसके पूर्व ही निर्मल ने कहा, "सर, आप अपना नम्बर दे दीजिए, मैं आपको व्हाट्सएप कर दूँगा।"

तभी दो-चार और साहित्यकार आ गये। उनसे बतियाते हुए वे सभागार में आ गये। यहाँ अभी कम ही लोग आये थे। एक बार मन हुआ कि नृपेन्द्र को फोन लगाकर अपनी स्थिति स्पष्ट कर दें, लेकिन तभी दिमाग में आया, अभी तो वह टेंट और कैटरिंग वालों के हिसाब-किताब में उलझा होगा। तभी मंच पर साहित्य मंडप के प्रमुख प्रशांतजी दिखे। उनके पीछे सिद्धार्थ शाह भी पहुँच गये। प्रशांतजी ने माइक सम्भाला - "साथियो, न चाहते हुए भी हम आधा घंटा लेट हो चुके हैं...और उन्होंने माइक सिद्धार्थ शाह की तरफ बढ़ा दिया। सिद्धार्थ शाह ने स्थानीय वयोवृद्ध साहित्यकार नरेंद्र बोहरा को अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया।

तनसुखलालजी को विशिष्ट एवं कमल सैनी को मुख्य अतिथि के दायित्व निर्वहन के लिए मंच पर आहूत किया। सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया। इसके पश्चात् शिवनारायण, सुषमा संतोष और मनन मनोहर को क्रमशः मंच पर आमंत्रित करते हुए सिद्धार्थ शाह ने इनके साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डाला। सम्मान के अंतर्गत मोतियों की माला, श्रीफल, शॉल, प्रमाण पत्र और लिफाफा अलग-अलग गणमान्य अतिथियों द्वारा सबको प्रदान कराया गया। मंचासीन विद्वानों ने विचार व्यक्त किये।

एक बजे सत्रावसान हुआ। लोग भोजन के पांडाल में आ गये। शिवनारायण ने पहले सम्मान में मिला सामान कमरे में रखा, फिर पांडाल में आये। भोजन की प्लेट लिये निर्मल सामने आ गया। बोला- "सर, देखिएगा...मैंने हर स्टेप को कवर किया है।"

"धन्यवाद भाई! भोजन के बाद कमरा नम्बर पंद्रह में आएं।" कहते हुए वे प्लेट लेकर भोजन के लिए चले गये और शीघ्र ही भोजन समाप्त करके अपने कमरे में आ गये। उनके पीछे निर्मल भी आ गया। फोटो शूट करने में उसने कमाल कर दिया था। शिवनारायण ने सारे स्नैप अपने मोबाइल में तो लिये ही, लगे हाथों नृपेन्द्र का नम्बर देखकर उसे भी व्हाट्सएप से भेज दिये। निर्मल के जाने पर शिवनारायण ने नृपेन्द्र को फोन लगाया। दो-तीन रिंग के बाद फोन उठ गया- "बाबूजी प्रणाम!"

"खुश रहो बेटा।" आशीर्वाद के बाद वे रमाकांत की बरखी में न शामिल हो पाने की बात करने वाले थे, तभी नृपेन्द्र कहने लगा- "बाबूजी, आपके सम्मानित होने की फोटोज अभी मेरे व्हाट्सएप पर आयी हैं। आप इस उम्र में दूर-दराज के इलाके के कार्यक्रमों में सम्मानित होते हैं। जिले और गाँव का नाम रोशन कर रहे हैं। कितने भाग्यवान हैं आप ! मैं आपके भाग्य की सराहना करता हूँ। बधाई और शुभकामनाएं!" शिवनारायण एक बार तो स्तब्ध रह गये...फिर धीरे-धीरे उनके मन में खुशियों भरा एक एहसास जगमगाने लगा-नृपेन्द्र ने सच कहा, वास्तव में मैं भाग्यवान हूँ। ■

लेखक सेवानिवृत्त अध्यापक तथा बाल साहित्यकार हैं। बच्चों से जुड़े विषयों पर लेखन। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से अमृत लाल नागर बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित। जासापारा (सुल्तानपुर) में रहते हैं।

भू को स्वर्ग बनाएं

■ तरुण सेठिया, कोलकाता ■

पर्यावरण सुरक्षा का पावन दायित्व हमारा,
रहे संतुलित धरती अम्बर अरु सरिता की धारा।

अंधाधुंध वृक्ष कटते हैं उजड़ रहे हैं जंगल,
हरियाली कम होगी जग का कैसे होगा मंगल।

शुद्ध श्वास के लिए पेड़-पौधे हैं स्रोत हमारा,
वायुशुद्धि के लिए वृक्ष रक्षा हो अपना नारा।

वनवासी पशु-पक्षी की संख्या जैसे कम होती,
लुप्त हो रही हैं प्रजातियां भू निज वैभव खोती।

हम प्रकृति का दोहन करते वह निज कोप दिखाती,
भूमिकंप जैसे तांडव कर हमको नाच नचाती।

ग्लोबल वार्मिंग जैसा बढ़ता खतरा सर मंडराता,
ठंडे देशों में भी गर्मी से जन-जन अकुलाता।

जीवन का आधार हमारा जल का स्रोत सिमटना,
मूल्य चुकाएंगे पानी का भावी कल की घटना।

अगली पीढ़ी के भविष्य की कुंजी हाथ हमारे,
क्षरण न हो ओजोन परत संकल्प सदा स्वीकारें।

जो आवरण सुरक्षा देता क्यों हम उसको तोड़ें,
अब तो जागरूक बनकर अपने कदमों को मोड़ें।

अणुव्रत सन्देश अहिंसा मैत्री को अपनाएं,
प्राणिमात्र को अभयदान दे भू को स्वर्ग बनाएं।

परिचर्चा

"राजनीति और धर्म का गठजोड़ : कितना उचित, कितना अनुचित?"

फरवरी अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

राजनीति और धर्म : एक हृदयस्पर्शी मर्म

राजनीति और धर्म का समन्वित स्वरूप एक हृदयस्पर्शी मर्म है जो विविधताओं में भी एकता के दर्शन कराता है तथा मानवीय एकता की संभावना को किंचित मात्र भी नहीं नकारता। राजनीति का शब्द विन्यास करें तो राज की भी कोई न कोई नीति होती ही है, पर नीति वही श्रेष्ठतम स्वीकारी जा सकती है जिससे उस राज का नागरिक सुख, संतोष व शान्ति का अनुभव करे तथा आनन्दप्रद जीवन जी सके। राजा विक्रमादित्य के शासन का इतिहास आज भी गवाह है। उस समय की राजनीति जनता के हितार्थ व कल्याणकारी थी। उसमें कहीं न कहीं धर्म का समावेश था। वर्तमान दौर में भी उचित तो यही प्रतीत होता है कि राजनीति के साथ धर्म का गठजोड़ हो तभी शिक्षा, सेवा, स्वास्थ्य व अन्यान्य कार्य हेतु परमार्थ के लक्ष्य को साधा जा सकेगा। वैसे धर्म का सही मायने में अर्थ कार्य या प्रवृत्ति होती है। जो भी कार्य या प्रवृत्ति हो, वह राष्ट्रीय उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में खरा उतर सके तो राजनीति में धर्म के औचित्य का दर्शन हो जाता है। जब-जब धर्म की जगह राजनीति में मात्र धन को महत्व दिया गया, तब-तब इंसान अपने मानवीय पथ से विचलित होता गया और अपने मूल को ही खो बैठा। अतः राजनीति में धर्म अपेक्षित है।

भारत में विविध धर्मों की उपासना व पालना की जाती है। अलग-अलग धर्म की अलग-अलग नीतियाँ हैं। उनके आधार पर भारत की राजनीति में धर्म का गठजोड़ प्रायः कम सम्भव लगता है, किंतु मानव में मानवीयता प्रतिष्ठापन का सिद्धान्त सभी धर्मों में सर्वमान्य है। उस दृष्टि से आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत एक ऐसा सर्वमान्य धर्म है जिससे राजनेता व आम नागरिक में समता, समन्वय व सह अस्तित्व की अमृत धारा प्रवाहित की जा सकती है। अपने-अपने धर्म की आँख से राजनीति को देखना छोड़ें और राष्ट्रीयता के नाम पर साफ, शुद्ध, निर्वैर, निष्पक्ष व शान्त भावों से एक अच्छे नागरिक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करें। स्वयं सुधरने का संकल्प स्वीकार करें ताकि राजनीति के दर्पण में नागरिक या राजनेता अपने स्वरूप को निहार सकें।

-धर्मचन्द जैन 'अनजाना', पनवेल

राजनीति और धर्म अलग-अलग नहीं हो सकते

राजनीति कभी धर्म से अलग नहीं रही है। एक व्यक्ति जिन आदर्शों को धारण करता है, जिन मूल्यों को जीता है; वही उसका धर्म कहलाता है। त्रेता युग में राम के समय की राजनीति उस समय स्थापित जीवन मूल्यों अर्थात् धर्म के अनुरूप थी। लोगों के जीवन में परमार्थ की प्रधानता थी। सब सुखी थे। कालान्तर में जीवन मूल्यों का ह्रास हुआ। द्वापर युग में कृष्ण के काल में स्वार्थ प्रबल हो गया। तदनुरूप राजनीति का रंग भी बदल गया। स्वार्थी लोगों के समाज में सुख विलुप्तप्राय हो गया। पुनः देश-काल-परिस्थिति बदली। व्यक्ति के जीवन में नैतिक मूल्यों का बहुत ह्रास हुआ। येन केन प्रकारेण स्वार्थ साधन ही सामाजिक धर्म बन गया। उसी के अनुरूप राजनीति बन गयी। वर्तमान समय में राजनीति समकालीन समाज में मनुष्यों द्वारा धारण किये जाने वाले धर्म के अनुरूप ही है। अतः सारांशतः राजनीति और धर्म अलग-अलग नहीं हो सकते। फिर इनके गठजोड़ के उचित-अनुचित होने का प्रश्न ही नहीं है।

-विनय कुमार मिश्र, बाजितपुर (वैशाली)

आचरण में हो धर्म, राजनीति में नहीं

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि धर्म क्या है? धर्म वह है जो व्यक्ति को सही राह पर चलना सिखाये, सत्कर्म करना सिखाये, कर्त्तव्य बोध कराये, गलत-सही का फर्क सिखाये, राग-द्वेष से बचना सिखाये, जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति का

मार्ग दिखाये, जो सहिष्णुता सिखाये, वही धर्म है। इन सबके विपरीत जो असहिष्णुता फैलाये, दूसरे को नीचा बताये, वैमनस्य पैदा करे, वह धर्म नहीं हो सकता है। धर्म को धारण किये बिना यह व्यक्ति की पहचान मात्र रह जाता है। धर्म आचरण का विषय है। राजनीति से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। न तो धर्म को राजनीति पर आधारित होना चाहिए और न ही राजनीति धर्म आधारित होनी चाहिए। हाँ, शासन व्यवस्था अवश्य धर्मानुसार ही होनी चाहिए, परंतु यहाँ धर्म का आशय पंथ या संप्रदाय से नहीं, मानवता से है क्योंकि मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। धर्म व्यक्तिगत के साथ ही सामाजिक विषय भी है, पर राजनीति कदापि नहीं, राजनीतिक लाभ-अलाभ के लिए धर्म का प्रयोग अनैतिक ही नहीं, घातक भी है।

-शुभकरण बैद, लाडनूं

पंथनिरपेक्ष हो राजनीति

पृथ्वी के समस्त चर-अचर प्राणियों के अस्तित्व का जो चिंतन करे, वह धर्म है। धर्म मानव जीवन की आत्मा है। वहीं, समाज के ढांचे को बनाये रखने के लिए जिसकी आवश्यकता होती है, उसे राजनीति कहते हैं। राजनीति में अर्थ भी आ जाता है, शिक्षा भी आ जाती है। यही नहीं, जीवन के सारे अंतर्संबंध राजनीति के प्रभाव क्षेत्र में आते हैं। हमारे देश में पौराणिक काल से लेकर जब तक नीति नियंता धर्म के अनुशासन को स्वीकार करके उस पर अमल करते रहे, भारत सुख-शांति-समृद्धि से परिपूर्ण सोने की चिड़िया बना रहा।

बीतते हुए समय के साथ धर्म ने राजनीति से मुँह फेर लिया, विरक्ति ले ली। लाखों संन्यासी, धर्मगुरु, मठाधीश, प्रज्ञा पुरुष अपनी एकांतिक साधना में संलग्न रहने लगे। यज्ञ, हवन, अनुष्ठान करते रहे। राजनीति के शिखर पर बुरे लोग आ बैठे और पूरा मुल्क सदियों तक गुलामी के दंश झेलता रहा। अगर इतने विचारशील व्यक्ति सामूहिक रूप से सक्रिय होते तो ऐसी विचार क्रांति का सूत्रपात होता कि गुलामी की बेड़ियां कब की टूट जातीं, लेकिन भारत की यह धार्मिक प्रतिभा धर्मनिरपेक्ष रही।

कालांतर में गांधीजी जैसे धार्मिक विचारशील लोगों ने एक वैचारिक आंदोलन चलाया। देश स्वतंत्र हो गया। उसके बाद महात्मा गांधी, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण सरीखे धर्मचेता राजनीति से उपराम (विलग) हो गये और सत्ता शुद्ध राजनीतिज्ञों के हाथ में चली गयी।

धर्मचेता सोचते रहे - "कोउ नृप होय हमैं का हानी।" अच्छे लोग उपदेश मात्र देते रहे तथा सत्ता बुरे लोगों के हाथों में केंद्रित हो गयी। अगर सत्ता अधार्मिक लोगों के हाथों में बनी रही तो यह सुंदर ग्रह पृथ्वी एक दिन मृत ग्रह हो जाएगी। धर्म आत्मा है, राजनीति शरीर। धर्म आकाश है और राजनीति जमीन। न हम आकाश के बिना रह सकते हैं न ही पृथ्वी के बिना अस्तित्व संभव है। इसलिए राजनीति धर्म सापेक्ष होनी ही चाहिए। लेकिन धर्म का अर्थ हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी, जैन, बौद्ध से नहीं है। ये धर्म नहीं, पंथ मात्र हैं। अतः अनिवार्य रूप से राजनीति को पंथनिरपेक्ष होना चाहिए।

-सुशील तिवारी, बहराइच

बीच का रास्ता तलाशना होगा

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ जीवन के हर आयाम में धर्म ताकत से खड़ा होता है। गांधीजी धर्म को एक सशक्त माध्यम के रूप में इस्तेमाल करते थे। उन्होंने देश-समाज को जोड़ने में धर्म का प्रयोग किया। मौजूदा दौर में राजनीति विज्ञान की हमारी समझ पश्चिमी अवधारणाओं पर आधारित है, जिसमें राजनीति और धर्म को अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। राजनीति विज्ञान को यदि हम सिर्फ पश्चिमी अवधारणाओं पर समझेंगे तो लगेगा कि धर्म और राजनीति को अलग-अलग रखना चाहिए क्योंकि धर्मनिरपेक्षता की संकल्पना पश्चिम की उपज है। वहीं भारतीय अवधारणा में धर्म जीवन के हर आयाम में जुड़ा हुआ है। पश्चिम की अवधारणाओं का अंधानुकरण कहीं से भी उपयुक्त नहीं है। हर देश की अपने मूल्य, अपनी संस्कृति होती है। हमें बीच का रास्ता तलाश करना होगा जिससे समन्वय की संस्कृति को साथ रखते हुए सभी धर्मों और उनके मूल्यों को साथ रखते हुए एक सशक्त भारत का निर्माण करें।

-नवलेश कुमार, वारिसलीगंज

विशुद्ध राजनीति और अनाग्रही धर्म का सामंजस्य हो

राजनीति उस व्यवस्था, विधि, पद्धति अथवा सूत्रों के समूह का नाम है जिनके आधार पर शासन संचालित किया जा सके। धर्म का आशय कर्त्तव्य, स्वभाव, आत्मशुद्धि के साधन के रूप में जाना जाता है। उपरोक्त दोनों तत्त्व समाज व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं। जब तक ये दोनों तत्त्व अपने स्वस्थ स्वरूप में बने रहते हैं, समाज को ऊर्ध्वमुखी बनाये रख सकते हैं। जब राजनीति स्वार्थों से ग्रसित होकर अपने घिनौने रूप में प्रस्तुत होती है तो वह समाज में हिंसा, घृणा, विवाद और विषाद का कारण बनकर उभरती है। धर्म में जब दुराग्रह, कट्टरपन और ईर्ष्या का प्रवेश होता है तो वह अफीम बन जाता है। अतः विशुद्ध राजनीति और अनाग्रही धर्म का सामंजस्य समाज, देश और राष्ट्र के लिए सुखद और आवश्यक है। राजनीति के सारथियों अर्थात् राजनीतिज्ञों को धर्म धारकों, गुरुओं और आचार्यों का परम निदर्शन प्राप्त रहे, ऐसी व्यवस्था अपेक्षित है।

-भीकमचन्द कोठारी 'भ्रमर', टाडगढ़

धर्म और पंथ के अंतर को समझना होगा

धर्म एक पवित्र आस्था है जिसे आज पंथ के रूप में सीमित कर विकृत रूप में प्रसारित किया जा रहा है, प्रयोग किया जा रहा है। इसी से लोग भ्रमित हो जाते हैं और पंथ को ही धर्म मान बैठते हैं। दरअसल पंथ देश, काल एवं आवश्यकता की सीमा से बँधा है जो परिवर्तित होता रहता है परन्तु धर्म शाश्वत है, सनातन है, देश, काल की सीमा से परे है। धर्म में 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का सन्देश समाहित है। पंथ प्रेरित राजनीति जहाँ घृणा, स्वार्थपरता, ईर्ष्या आदि विष के बीज बोकर किसी भी राष्ट्र में कलह, अशान्ति एवं रक्तपात के फलस्वरूप राष्ट्र को संकट में डाल देती है, वहीं धर्म अनुप्राणित राजनीति परस्पर विश्वास, सहयोग और प्रेम का अमृतमय सम्बल देकर राष्ट्र को सुख-समृद्धि एवं निरन्तर गतिशीलता की राह पर अग्रसर कर देता है। अत: धर्म अनुप्राणित राजनीति होनी ही चाहिए।

-पंकज कुमार, इटानगर

राजनीति में धर्म का होना आवश्यक

राजनीति को स्वच्छ, जन कल्याणकारी और राष्ट्रीय भावों से ओतप्रोत करने के लिए हमेशा से धर्म की आवश्यकता रही है। शासक को अनुशासन में रखने और कर्त्तव्य बोध कराते रहने के लिए धर्म प्रहरी का काम करता रहा है। सामान्य तौर पर धर्म का अर्थ कर्मकांड और पूजा के प्रकारों से लगाया जाता है और यही अवधारणा समस्या का कारण बनती है। जिस प्रकार विज्ञान का बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयोग मानव जीवन के लिए वरदान बनता रहा है, उसी प्रकार राजनीति में धर्म का होना शासक, शासित और राजनीति के लिए वरदान बन सकता है। राजनीति का उद्देश्य अच्छा शासन उपलब्ध कराना और लोगों के भौतिक व भावनात्मक सुख में वृद्धि करना है। वहीं धर्म का उद्देश्य राजनीति में अच्छे, चरित्रवान और आध्यात्मिक लोगों को भेजना है ताकि समाज को भ्रष्टाचार तथा भ्रष्ट और शासन से बचाया जा सके। अत: राजनीति में धर्म का होना आवश्यक है।

-अवधेश कुमार दूबे, रक्सौल

आगामी अंक का विषय

परिचर्चा

सरकार का दायित्व और नागरिकों का कर्त्तव्य

भारत के नागरिक नयी सरकार चुनने की कवायद में जुटे हैं। राजनीतिक दल नये-नये ख्वाब दिखाकर शासक की गद्दी पर बैठने की जुगाड़ में उलझे हैं। 4 जून 2024 को जनता का फैसला सार्वजनिक हो जाएगा कि सत्ता की बागडोर उसने किसको सौंपी है! सामान्यत: जनता को लगता है कि उसने मतदान कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली है और जनता की इस मानसिकता के चलते शासन की बागडोर सम्भालने वाले राजनीतिक दल और नेता भी जनता से किये गये अपने वादों को विस्मृत कर देते हैं।

भारत जैसे विविधताओं से भरे विशाल लोकतांत्रिक देश के लिए क्या यह उचित है? कैसे सरकार अपने वादों के प्रति वचनबद्ध रहे? कैसे देश के नागरिक अपनी जवाबदेही के प्रति जागरूक रहें? सरकारें मनमानी न कर सकें और अपने दायित्वों का ईमानदारी के साथ निर्वहन करें, इसमें जनता की क्या भूमिका हो? लोकतंत्र और संविधान की रक्षा का दायित्व सरकारों और राजनैतिक दलों पर ही छोड़ देना कितना उचित है? जनता की इसमें क्या भूमिका हो सकती है और उसका निर्वहन वह कैसे करे? इन्हीं ज्वलंत मुद्दों पर अपनी राय लिख भेजिए।

'अणुव्रत' पत्रिका के **जुलाई 2024 अंक** में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम **200 शब्दों में हमें 10 जून 2024 तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।**

अणुव्रत समाचार

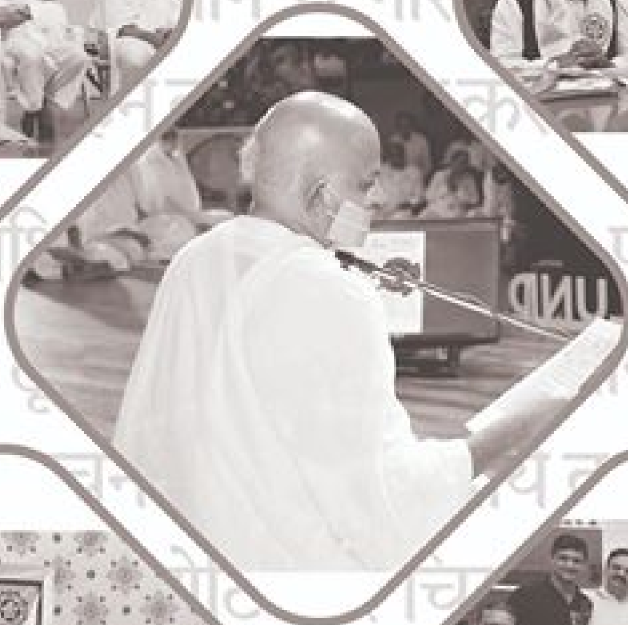

www.anuvibha.org

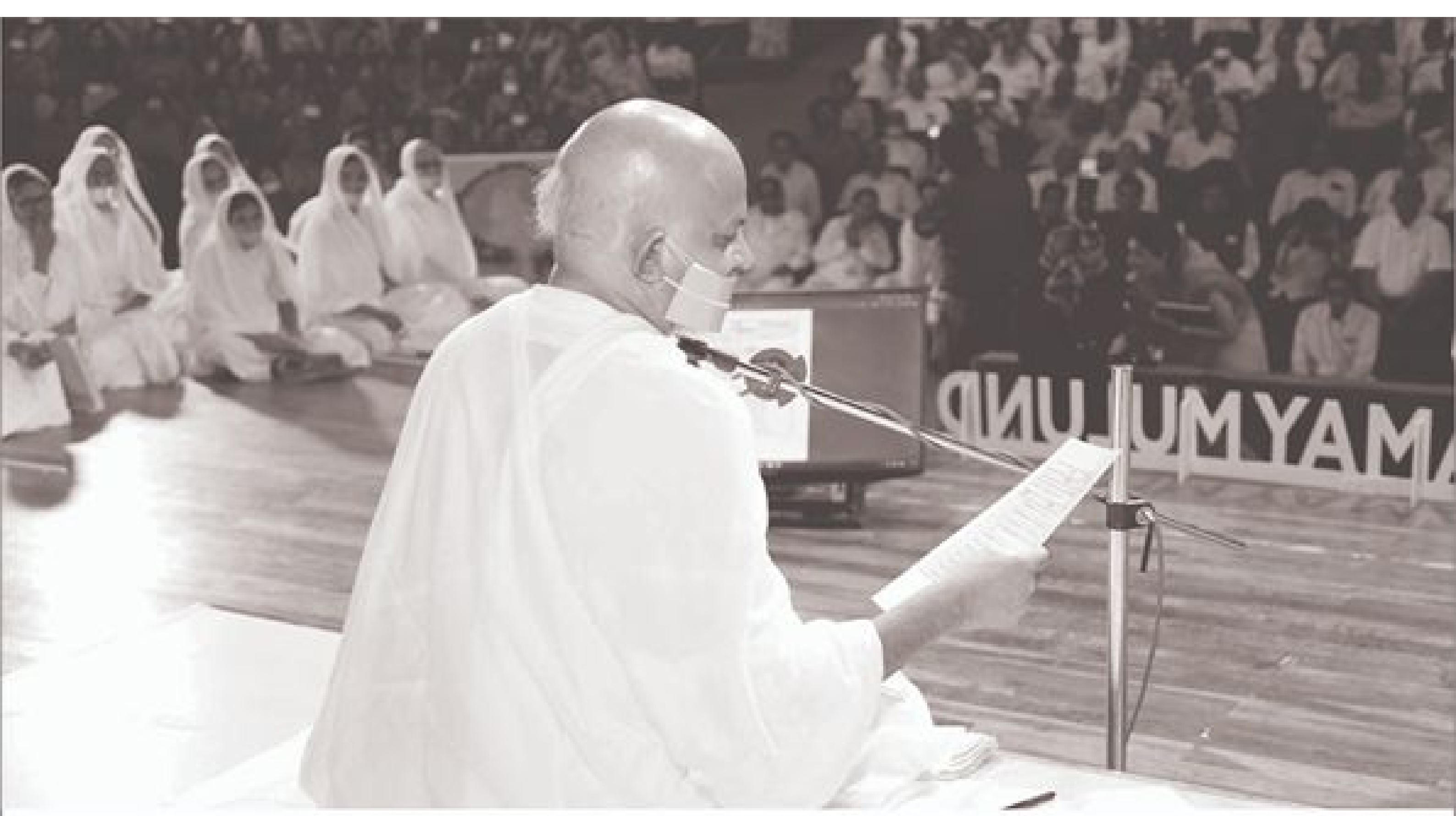

एलिवेट, डिजिटल डिटॉक्स और 'नो टू ड्रग्स' पर सेमिनार

मुलुंड। प्रिन्स आफ मुंबई से अलंकृत सांस्कृतिक और धर्म नगरी मुलुंड में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में विद्यार्थियों के लिए एलिवेट : द रियल हाइट्स, डिजिटल डिटॉक्स और "नो टू ड्रग्स" पर सेमिनार का आयोजन हुआ। महाकवि कालिदास नाट्य मंदिर सभागार में आयोजित सेमिनार में ग्यारह स्कूलों एवं कॉलेजों के लगभग एक हजार छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। अणुव्रत अनुशास्ता ने संदेश देते हुए कहा कि डिजिटल डिटॉक्स एवं नशामुक्ति से जीवन शांति से जीया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार, मुनिश्री अभिजीत कुमार, मुनिश्री गौरव कुमार और मुनिश्री जागृत कुमार ने विद्यार्थियों को आधुनिक खतरों से बचने की प्रेरणा दी तथा अध्यात्म योग से गौरवान्वित महसूस कराते हुए किसी भी नशे से बचे रहने का संकल्प करवाया।

विशेष अतिथि पुलिस कमिश्नर पुरुषोत्तम कराड ने विद्यार्थियों से फेस टू फेस बात कर ड्रग्स और डिजिटल डिटॉक्स, एआई के खतरों से बचने के उपाय बताये तथा उनकी जिज्ञासाओं का भी समाधान दिया। मोटिवेटर चिराग पामेचा के संयोजन में स्वेता लोढ़ा, विवेक संघवी, डॉ. सोनल जैन और रेणुका कोठारी ने विद्यार्थियों को रुचिपूर्ण ढंग से खेल-खेल में चार अलग-अलग विषयों पर जानकारी उपलब्ध करायी।

सेमिनार में मुलुंड पुलिस थाने इंचार्ज कांतिलाल कोथिम्बीरे, सीनियर पुलिस अधिकारी जाधव साहब, हेमलता गाला प्राचार्य नूतन विद्यालय, संजय दुबे ट्रस्टी राजीव गांधी विद्यालय, पुष्पा पाण्डेय प्रिंसिपल नूतन सरस्वती विद्यालय के साथ ही विभिन्न स्कूल और कॉलेज के शिक्षक व अभिभावक उपस्थित थे। विशेष अतिथियों का सम्मान सभा अध्यक्ष चुन्नीलाल सिंघवी एवं स्पीक आउट न्यूज के उत्तम कुमार पीपाड़ा ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में गजेन्द्र पीपाड़ा, विजय पटावरी, रवि पटावरी, राकेश सिंघवी, कपिल बागरेचा, भरत कोठारी आदि का श्रम योगभूत रहा।

'राजनीति का आकाश और अणुव्रत' विषयक सांसद संगोष्ठी

नयी दिल्ली। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत संसदीय मंच द्वारा पुराने संसद भवन में 8 फरवरी को 'राजनीति का आकाश और अणुव्रत' विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री अणिमाश्री ने कहा कि संयम आत्मानुशासन से ही संभव है। आपने सांसदों का आह्वान किया कि जनप्रतिनिधियों की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वे स्वयं के साथ समाज में नैतिकता और चारित्रिक उन्नयन तथा नैतिकता को पुनर्जीवित करने का प्रयास करें तो बुराइयों, नैतिक ह्रास एवं पतन को रोका जा सकेगा। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने स्वागत भाषण में अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी देने के साथ ही सांसदों से सक्रिय सहयोग की अपेक्षा जतायी।

केंद्रीय कानून, संसदीय कार्य और संस्कृति राज्यमंत्री एवं अणुव्रत संसदीय मंच के संयोजक अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने अपनी दूरदर्शी सोच से वर्षों पूर्व प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से न केवल नेताओं बल्कि आम व्यक्ति के लिए सटीक आचार संहिता बना दी थी जो आज भी सर्वाधिक प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि यह सुखद संयोग ही है कि देश की आजादी के साथ ही यह वर्ष अणुव्रत आंदोलन का भी अमृत वर्ष है।

इंदौर के शंकरलाल लालवानी, जम्मू-कश्मीर के जुगल किशोर, वडोदरा की रंजना भट्ट, जयपुर के राम चरण बोहरा, सिरसा की सुनीता दुग्गल, मेरठ के राजेन्द्र अग्रवाल, कर्नाटक के लहर सिंह सिरोया, मेहसाणा की शांता बहन आदि सांसदों ने संयम, अपरिग्रह, नैतिकता, सत्य, अहिंसा के मूल मंत्रों को अंगीकार करने के साथ ही युवा पीढ़ी में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए सामूहिक प्रयासों पर बल दिया। आभार ज्ञापन अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया ने किया।

संगोष्ठी में केंद्रीय राज्यमंत्री प्रतिभा भौमिक, सांसद राहुल कस्वां, रतन सिंह, गीता बेन रतवा, मितेश भाई पटेल के साथ ही अणुविभा के ट्रस्टी तेजकरण जैन, सलाहकार कैलाशचंद्र जैन, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुव्रत इतिहास के संयोजक प्रमोद घोड़ावत, अणुव्रत आर्बिट्रेटर बोर्ड के सदस्य शांतिलाल जैन, जनप्रतिनिधि सम्मेलन के संयोजक बाबूलाल दुगड़, बीकानेर संभाग के प्रभारी विनोद कुमार बच्छावत, पदमचंद दफ्तरी, अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष मनोज कुमार जैन, सचिव राजेश कुमार जैन, अणुविभा के सलाहकार सुरेश राज जैन, कानूनी सलाहकार नवनीत दुगड़, नवीन शर्मा और अणुव्रत समिति दिल्ली के शांतिलाल पटावरी भी मौजूद थे।

'शांति एवं अहिंसक उपक्रम' पर 11वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने की सहभागिता

भारत सहित 14 देशों के 50 से अधिक विद्वानों के प्रभावी वक्तव्य

अंतरराष्ट्रीय समन्वयक डॉ. सोहनलाल गांधी की रिपोर्ट

मुख्य वक्ता

Ambassador Anwarul K. Chowdhury
Former Under-Secretary-General
and High Representative
United Nations.

Alison Van Dyk
Executive Director
Temple of Understanding

Nitin AJMERA
Chair of the Board
Parliament of the World's Religions

Dr. Thomas Daffern
Director
International Institute of
Peace Studies and Global Philosophy

Felipe Queipo
Communication Officer
United Nations Department of
Global Communications Civil Society Unit

जयपुर। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से 'शांति एवं अहिंसक उपक्रम' पर 11वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 13 फरवरी से 16 फरवरी तक आयोजित किया गया। 13 फरवरी को अणुव्रत गीत से प्रारम्भ हुए इस ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी का उद्बोधन प्रसारित किया गया। उनके उद्बोधन का सार था - "शांति और अशांति के बीज हमारे भीतर विद्यमान हैं। आवश्यक है आरम्भ से बच्चों को अहिंसा में संस्कारित किया जाये। जब तक व्यक्ति भीतर से शांत नहीं होगा, स्थायी शांति असंभव है।"

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में सम्मिलित होने वाले विद्वानों एवं संभागियों का स्वागत किया और आशा जतायी कि हिंसा एवं घृणा के इस दौर में वक्तागण विश्व में शांति की स्थापना के लिए सार्थक सुझाव देंगे। आयोजन समिति के अध्यक्ष टी. के. जैन ने कहा कि सम्मेलन में भाग ले रहे विद्वानगण स्थायी शांति एवं वहनीयता के प्रभावी सूत्र खोजें।

उद्घाटन सत्र के मोडरेटर डॉ. सोहनलाल गांधी ने सत्र के वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय देने के बाद सम्मेलन के विचारणीय विषय की अवधारणात्मक प्रस्तुति दी। संयुक्त राष्ट्र यूएनडीजीसी-सीएसयू के प्रतिनिधि फेलिपे कुइपो ने अपने प्रारम्भिक वक्तव्य में विश्व की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त की। संयुक्त राष्ट्र से जुड़े एक अन्य प्रतिष्ठित अधिकारी पूर्व अंडर सेक्रेटरी जनरल उच्च प्रतिनिधि अम्बेसेडर अनवरूल चौधरी इस सत्र के विशिष्ट वक्ता थे। रात्रि 8 बजे से 10.30 बजे तक आयोजित इस सत्र में शामिल अन्य विद्वान थे - फ्रांस के इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पीस स्टडीज एवं ग्लोबल फिलोसॉफी के निदेशक तथा ग्लोबल ग्रीन यूनिवर्सिटी के रेक्टर डॉ. टॉमस डाफर्न, इंस्टीट्यूट ऑफ गांधियन स्टडीज के अध्यक्ष एवं भारत के सुप्रसिद्ध गांधीवादी, चिंतक, प्रोफेसर एन. राधाकृष्णन् एवं अमेरिका के ट्वेल्व गेट्स फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं न्यूयार्क से प्रकाशित होने वाली प्रतिष्ठित पत्रिका 'अलायंस एण्ड डायलॉग' के पूर्व संपादक डॉ. फ्रेंक कॉफम।

सम्मेलन का प्रथम सत्र 14 फरवरी को प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक आयोजित किया गया। इस सत्र की मोडरेटर थीं महारानी कॉलेज की भूतपूर्व प्राचार्या एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के गांधी अध्ययन केन्द्र की पूर्व निदेशक प्रोफेसर विद्या जैन। इस सत्र का विचारणीय विषय था - **"अहिंसा और उसके नाना रूप।"** सत्र के मुख्य वक्ता थे आनन्द मार्ग के आचार्य दादा गुणमुक्तानंद। अन्य विशिष्ट वक्ताओं पूर्व एपिस्कोपल बिशप तथा सेजेज ऑफ न्यू मूवमेन्ट के संस्थापक डॉ. रविकुमार स्टीफन, सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक एवं लेखक डॉ. अनिल दत्त मिश्रा, पोलैण्ड की

'नेवर अगेन एसोसिएशन' के सह-संस्थापक प्रोफसर रफाल पेंकोवस्की और अमेरिकन गांधी के नाम से विख्यात अहिंसक योद्धा बर्नी मेयर ने प्रेरक प्रस्तुतियां दीं।

14 फरवरी की रात्रि 8 बजे से 10.30 बजे तक आयोजित द्वितीय सत्र का विचारणीय विषय था - **"अहिंसा एवं भावी वहनीयता में अंतर्संयोजनात्मकता"** और मोडरेटर थे प्रोफेसर पंकज जैन, अध्यक्ष भारतीय केन्द्र, फ्लेम यूनिवर्सिटी, अमेरिका। सत्र की मुख्य वक्ता थीं अमेरिका के एक चैरिटेबल वैश्विक मानवीय विकास संगठन, अमेरिका लाइट मिलेनियम की संस्थापक अध्यक्ष टर्की की जुझारू शांतिकर्मी बिर्जा अनवर। इनके अतिरिक्त सत्र में शामिल अन्य विद्वान थे स्लोवेनिया की उपासना संस्था के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय शांतिकर्मी मार्को हरेन, कृषि वैज्ञानिक डॉ. नारायण हेगड़े, मुख्य ट्रस्टी, निशागोपचर ग्राम सुधार ट्रस्ट इण्डिया, डॉ. नीलम जैन, संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी सेमुनो शिक्षा एवं शोध संस्थान जोन तथा जुलियाना डी लियोनार्डो, ऐन्थ्रोपोलिजिस्ट तथा वाइल्ड लाइफ रिहेबिलिटेटर, लॉग आइलैंड अमेरिका तथा बांग्लादेश के फ्रांसिस हेल्डर, सेवानिवृत्त पारिस्थितिकीविद् तथा चटगांव की 'सामंजस्य द्वारा शांति स्थापना' नामक संस्था से जुड़े एक कार्यकर्ता। यह सत्र कई दृष्टियों से दिलचस्प रहा।

15 फरवरी को प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक आयोजित तृतीय सत्र का विचारणीय विषय था - **"शिक्षा एवं कला द्वारा अहिंसा का पोषण।"** इस सत्र के मोडरेटर थे सुप्रसिद्ध वरिष्ठ शिक्षाविद्, पूर्व कुलपति तथा जैन यूनिवर्सिटी बेंगलुरु की कानून संकाय के निदेशक प्रोफेसर गुरुदथ चिलकुण्डा तथा मुख्य वक्ता थे भाभा रिसर्च सेन्टर मुम्बई के पूर्व वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, रेडियो बायोलॉजी डॉ. कौशल प्रसाद मिश्रा। इस सत्र के अन्य वक्तागण भी अपने क्षेत्र में काम करने वाली विश्व की प्रसिद्ध हस्तियां थीं। इनमें एलिसन वान डाइक, टेम्पल ऑफ अण्डरस्टैंडिंग, अमेरिका की वर्तमान में कार्यकारी निदेशक हैं जो अत्यन्त ही प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संस्था है और गत 40 वर्षों से विभिन्न धर्म-समुदायों में सौहार्द और सामंजस्य बैठाने के लिये काम कर रही है।

बेल्जियम निवासी पेट पेटफुर्ट विश्व की वरिष्ठतम अहिंसा की प्रशिक्षक हैं जो अणुविभा द्वारा 1991 में अहिंसा प्रशिक्षण पर आयोजित दूसरे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता थीं। एक अन्य ख्यातिप्राप्त वक्ता थीं अमेरिका की डॉ. सेरपिल टंसर। वे एक प्रसिद्ध भाषाविद् हैं तथा वर्तमान में दरूफास्का सोसाइटी की बोर्ड सदस्य हैं। चौथे वक्ता थे प्रसिद्ध अहिंसा कला मर्मज्ञ इगनेशियस जेवियर जो कला द्वारा अपने देश और दुनिया में अहिंसा का प्रचार कर रहे हैं। अन्य वक्ताओं में थे जैन विश्वविद्यालय बेंगलुरु के डॉ. अविनाश केटे जो अंतरराष्ट्रीय शिक्षक एवं कला मर्मज्ञ हैं। यह सत्र भी अहिंसा पर मौलिक प्रस्तुतियों के कारण श्रेष्ठ रहा।

15 फरवरी को रात्रि 8 बजे से 10.30 बजे तक आयोजित चतुर्थ सत्र का विचारणीय विषय था - **"राजनैतिक सिद्धान्त एवं व्यवहार में अहिंसा।"** इस सत्र के मोडरेटर थे जैन फेडरेशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका (जैना) के पूर्व सचिव एवं संयुक्त राष्ट्र में अणुविभा के सन् 1998 से मुख्य प्रतिनिधि अरविन्द वोरा। वे कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। इस सत्र के मुख्य वक्ता थे - प्रोफेसर जेरेमी सेलिगसन जो मूलतः अमेरिकी नागरिक हैं तथा हेंकक यूनिवर्सिटी, सोल साउथ कोरिया के पूर्व प्रोफेसर तथा चिल्ड्रन'स पीस ट्रेन के संस्थापक हैं। अन्य वक्ता थे डॉ. मकिओस फिरी जो प्रसिद्ध संस्था इंटरनेशनल फेलोशिप ऑफ रिकंसिलिएशन के अफ्रीकी प्रतिनिधि तथा जिम्बॉब्वे के सुप्रसिद्ध अहिंसा प्रशिक्षक हैं, डॉ. वालेंटिन बार्टोलुची जो यूनिवर्सिटी ऑफ पिसा, इटली के व्याख्याता हैं, इंगलैण्ड के डॉ. ग्राहम पेबल्स जो स्वतंत्र लेखक एवं चैरिटी वर्कर हैं, पोलैण्ड की नटालिया सिनिवा जो शांति एवं अहिंसा को समर्पित संस्था 'नेवर अगेन' की प्रायोजना समन्वयक हैं।

16 फरवरी को प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक आयोजित पंचम सत्र का विचारणीय विषय था - **"समय-समय पर दुनिया में घटित होने वाली हिंसक घटनाएं तथा अहिंसक समाधान।"** इस सत्र के मोडरेटर थे जागरण लेकसेटी यूनिवर्सिटी, भोपाल के संस्थापक कुलपति प्रोफेसर अनुप स्वरूप जो वर्तमान में होनोलुलु सेंटर फॉर ग्लोबल नॉनकिलिंग के अध्यक्ष हैं। इसके मुख्य वक्ता थे नितिन अजमेरा, जो अमेरिका के वरिष्ठ प्रबन्धन विशेषज्ञ तथा ड्रेक्सल यूनिवर्सिटी अमेरिका के पूर्व प्राध्यापक हैं और वर्तमान में प्रतिष्ठित इंटरफेथ संस्था पार्लियामेंट ऑफ वल्र्ड्स रिलिजन्स के बोर्ड के अध्यक्ष हैं। अन्य वक्ताओं में शामिल थे अमेरिका के डॉ. साल कोर्बिन जो शांति एवं अहिंसा के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व 15 वर्ष तक साइकोलॉजी के प्रोफेसर रह चुके हैं और वर्तमान में बाल्टीमोर अमेरिका बिहेवियरल हेल्थ सिस्टम के ट्रेनिंग कोऑर्डिनेटर तथा डी. सी. पीस टीम के अध्यक्ष हैं, प्रिसिला पुट्जमेन जो अमेरिका की 'क्रिएटिव रेसपोन्स टु कन्फ्लिक्ट' नामक संस्था की संस्थापक और कार्यकारी निदेशक हैं, अमेरिका की ही डॉ. एस. वाई. बाउलेंड जो शिक्षक, प्रशिक्षक, आयोजक और फेसिलिटेटर हैं और जो अमेरिका की टस्कगी यूनिवर्सिटी, कोलम्बिया कॉलेज में बतौर प्रोफेसर काम कर चुकी हैं। डॉ. कात्यायानी सिंह जो राजनीति शास्त्र में पी.एचडी. हैं और वर्तमान में जागरण लेकसिटी यूनिवर्सिटी भोपाल की सहायक प्रोफेसर हैं, इसके साथ ही वह होनोलुलु स्थित सेंटर फॉर ग्लोबल नॉनकिलिंग की महासचिव भी हैं।

16 फरवरी को रात्रि 8 बजे से 10.30 बजे तक आयोजित छठे सत्र का विचारणीय विषय था - **"विश्व शांति के प्रभावी उपाय"** और इसकी मोडरेटर थीं शीला सुसमन जो बौद्ध धर्म की अनुयायी हैं तथा थेरवड़ा और महायान परम्पराओं से जुड़ी हुई हैं।

शीला गत 20 वर्षों से लोंग आइलैंड अमेरिका में रह रही हैं। डॉ. टॉमस डाफर्न इस सत्र के मुख्य वक्ता थे जो स्कॉटलैण्ड - इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक हैं और वर्तमान में इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पीस स्टडीज एण्ड ग्लोबल फिलोसॉफी के निदेशक तथा ग्लोबल ग्रीन यूनिवर्सिटी के रेक्टर हैं तथा फ्रांस में रहते हैं।

अन्य वक्ता थे - आर्मेनिया के गेवोर्क मेनोकिन जो मानवाधिकार और शांति शिक्षण के विशेषज्ञ और वर्तमान में वे 'एसीआरपीसी' के अध्यक्ष तथा लीगल सांइटिफिक रिव्यू - 'फॉर द सेक ऑफ जस्टिस' के सम्पादक हैं, डॉ. एन.एन. पत्रिकर जो 1986 से 'ततसत कॉर्पोरेशन' में स्वतंत्र चिंतक हैं, साथ ही वे ऑसन इंजीनियर एवं पर्यावरणविद् हैं।

भारती जैन जो उड़ान स्काई फाउंडेशन तथा णमोकार जिम की संस्थापक हैं, शांति योगिनी जो दुनिया भर में जानी-मानी योगा मास्टर तथा 'योगा फॉर हैप्पीनेस एकेडेमी' की संस्थापक हैं, अमेरिका की सुसान सिट्स जो प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता तथा एक ऐसे कोष की निदेशक हैं जो विभिन्न योजनाओं के लिए अनुदान देता है।

अनपेक्षित कठिनाइयों और चुनौतियों के बावजूद यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आशा से अधिक सफल रहा। भारत सहित 14 देशों के 50 से अधिक विद्वान, शांतिकर्मी एवं आध्यात्मिक नेताओं ने उद्घाटन सत्र सहित सात सत्रों में ज्ञानवर्धक व प्रज्ञापरक प्रस्तुतियां दीं जिनमें 18 भारत से थे। संयुक्त राष्ट्र संघ से दो प्रतिनिधि फिलेप कोइपे तथा अम्बेसेडर अनवरूल के जुड़ने एवं उनके द्वारा वर्तमान दौर के संदर्भ में दिये गये महत्वपूर्ण वक्तव्यों ने इस सम्मेलन को गरिमा प्रदान की। यह इस बात का संकेत है कि दुनिया में अहिंसा समर्थकों एवं चिंतकों की कमी नहीं है। अणुव्रत आज भी बहुत ही प्रासंगिक अंतरराष्ट्रीय नैतिक अभियान है।

सम्मेलन के अंतरराष्ट्रीय संयोजक के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन डॉ. सोहनलाल गांधी ने किया। इसके लिए टी.के. जैन (दिल्ली) की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय समिति में जय बोहरा को एसोसिएट इंटरनेशनल कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया गया। समिति के अन्य सदस्यों में शामिल थे संचय जैन (उदयपुर) एवं दीपक डागलिया (मुम्बई)।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर इस कोर कमेटी के पदेन अध्यक्ष और समग्र समावेशक थे। उनके दृढ़ संकल्प से ही यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हो सका। दीपक डागलिया ने अपनी व्यावसायिक व्यस्तताओं के बावजूद लॉजिस्टिक सपोर्ट दिया। टी. के. जैन तो हमेशा की तरह एक ड्राइविंग फोर्स थे ही। जय बोहरा की कर्मठता एवं समर्पण भाव प्रशंसनीय रहा। सम्मेलन को सफल बनाने में चैतन्य देव तथा किशोर कुमार जेठानन्दानी ने भी अपना दायित्व कुशलतापूर्वक निभाया।

महाराष्ट्र स्तरीय
अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी

पुणे। अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में 1 अप्रैल को पुणे के वर्धमान सांस्कृतिक भवन में महाराष्ट्र स्तरीय अणुव्रत कार्यकर्ता कार्यशाला का आयोजन किया गया। डिजिटल डिटॉक्स अभियान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री अभिजीतकुमार ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। मुनिश्री जागृत कुमार ने भी कार्यकर्ताओं का पथ दर्शन किया।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अध्यक्षीय भाषण में कार्यकर्ता कैसा हो, क्या करना चाहिए, किससे बचना चाहिए आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की। अणुविभा के सह मंत्री मनोज सिंघवी, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, खानदेश प्रभारी पुष्पा कटारिया, डिजिटल डिटॉक्स के संयोजक प्यारचंद मेहता, प्रकाश भंडारी आदि ने भी विचार रखे। कार्यशाला में जालना, बीड़, औरंगाबाद, मुंबई, लातूर, पिंपरी चिंचवड़ एवं पुणे अणुव्रत समिति के अध्यक्ष, मंत्री समेत करीब 50 प्रतिभागी शामिल हुए। जिज्ञासा समाधान सत्र में अणुविभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने संभागियों की जिज्ञासा का समाधान किया। इससे पहले अणुव्रत समिति पुणे के अध्यक्ष धर्मेन्द्र चौरड़िया ने सभी का स्वागत किया।

अणुव्रत चुनावशुद्धि अभियान
चुनाव में शुचिता के लिए देश भर में जन जागरण

संयोजक राजकरण दफ्तरी की रिपोर्ट

अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में लोकसभा चुनाव के दौरान चुनाव शुद्धि अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत देश भर की अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों के प्रतिनिधि सभाओं और कार्यक्रमों के साथ ही बैनर, पोस्टर, पैम्फलेट के माध्यम से योग्य प्रत्याशियों को चुनने की अपील कर रहे हैं।

➡ **दक्षिण तमिलनाडु के कडलूर जिले** के चुनाव आयोग की सहायक निदेशक अनंत नायगी ने श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मन्दिर में विराजित मुनिश्री दीपकुमार के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया और वर्तमान में हो रहे लोकसभा चुनावों के बारे में उन्हें अवगति दी। मुनिश्री दीपकुमार ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने भारत की स्वतंत्रता के बाद जनता में नैतिक, चारित्रिक मूल्यों के विकास को लेकर अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। आज उसके 75 वर्ष पूर्ण हो गये हैं। चुनावों में भी नैतिकता, प्रामाणिकता का विकास हो, अणुव्रत इसके लिए आह्वान करता है। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के अन्तर्गत अणुव्रत कार्यकर्ता जनप्रतिनिधियों और जनता को जागृत करने का प्रयास करते हैं। अन्य समसामयिक विषयों पर भी चर्चा हुई। इस अवसर पर शोभागमल सांड, शांतिलाल मेहता, कुशाण सांड भी उपस्थित रहे।

➡ **किशनगंज अणुव्रत समिति** द्वारा बाल मंदिर सीनियर सेकंडरी स्कूल के ट्रस्टीगण और शिक्षकों के मध्य चुनाव शुद्धि अभियान का प्रचार-प्रसार किया गया। आवश्यक रूप से मतदान करना, जाति और संप्रदाय से परे उठते हुए बिना प्रलोभन और भय के मतदान करना, चरित्रवान उम्मीदवार का चयन करना इत्यादि अनेक बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया। 100 से ज्यादा शिक्षकों को मतदाता आचार संहिता से अवगत करवाते हुए संकल्प ग्रहण करवाये गये। इस अवसर पर चुनाव शुद्धि अभियान के राष्ट्रीय संयोजक राजकरण दफ्तरी, स्कूल के डायरेक्टर त्रिलोक चंद जैन, मैनेजमेंट कमेटी सदस्य मनीष दफ्तरी, प्रिंसिपल अंकिता जैन ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष विमल दफ्तरी, महिला मंडल अध्यक्ष संतोष दुगड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष रश्मि बैद, तेयुप अध्यक्ष रोहित दफ्तरी, टीपीएफ अध्यक्ष विनीत दफ्तरी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

➡ **अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत** के प्रतिनिधियों ने सूरत कलेक्टर व जिला चुनाव अधिकारी डॉ. सौरभ पारधी और अतिरिक्त चुनाव अधिकारी कमलेश राठौर से मुलाकात की। अधिकारियों ने समिति के प्रयासों की सराहना करने के साथ ही एक एमओयू पर हस्ताक्षर करते हुए जिला प्रशासन के साथ मिलकर चुनाव शुद्धि व मतदाता जागरण का कार्य करने की स्वीकृति प्रदान की। इस दौरान अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा, मुकेश जैन बोथरा, कल्पना बछावत आदि उपस्थित थे।

➡ **अणुव्रत समिति, कोलकाता एवं हावड़ा** ने 24 मार्च को लिलुआ के संगम हॉल में चुनाव शुद्धि अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें अणुविभा के सदस्य विकास दुगड़, अणुव्रत समिति, कोलकाता के मंत्री नवीन दुगड़, सह मंत्री सुनीता बैद, कार्यसमिति सदस्य सुरेंद्र मूणोत, लिलुआ श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अध्यक्ष प्रमिल बाफना, मंत्री रोशन चोपड़ा, लिलुआ तेयुप अध्यक्ष संदीप दूधेडिया, साउथ कोलकाता श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री कमल सेठिया तथा अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

➡ **मैसूर अणुव्रत समिति** की ओर से आचार्य श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं को अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के बारे में बताने के साथ ही अनुरोध किया कि इस बार शत प्रतिशत मतदान हो। दैनिक जागरण के एमडी पूर्व सांसद महेंद्रमोहन गुप्त ने मतदाताओं को जागरूक करने के लिए अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के पोस्टर, कार्ड, पैम्फलेट का विमोचन मर्चेंट चैंबर में किया।

➡ **अणुव्रत समिति बेंगलुरु** की ओर से चुनाव शुद्धि अभियान के तहत कन्नड़ भाषा में तैयार कार्यक्रम का प्रसारण पूरे कर्नाटक में उदय टीवी चैनल द्वारा किया गया।

➡ **गाजियाबाद अणुव्रत समिति** की टीम चुनाव शुद्धि अभियान के तहत अध्यक्ष कुसुम सुराणा के नेतृत्व में गाजियाबाद के जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह से मिली। सुराणा ने उन्हें बताया कि समिति द्वारा नागरिकों को ईमानदार एवं जिम्मेदार प्रत्याशियों को वोट डालने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इस संदर्भ में जगह-जगह पोस्टर-बैनर लगाये जा रहे हैं। टीम ने जिलाधिकारी महोदय का पटका पहना कर स्वागत किया एवं अणुव्रत साहित्य व अन्य सामग्री भेंट की। जिलाधिकारी महोदय ने समिति के प्रयासों को सराहा। टीम में वरिष्ठ उपाध्यक्ष सीए शरद वार्ष्णेय, मंत्री अनिल लुनिया एवं सदस्य हेमन्त सुराणा और वीरेन्द्र शामिल थे। गेंजेज क्लब में प्रबुद्ध व्यापारियों के सम्मेलन में विधायक पंकज सिंह ने अणुव्रत चुनावशुद्धि अभियान के पोस्टर, पैंफलेट, बुकलेट का विमोचन किया।

➠ **अणुव्रत समिति, गंगाशहर** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में चुनावशुद्धि अभियान के पोस्टर का विमोचन विदेश मंत्री सुब्रमण्यम जयशंकर, केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल व सांसद प्रवेश वर्मा ने किया। इस अवसर पर राजस्थान के कैबिनेट मंत्री सुमित गोदारा, महापौर सुशीला कंवर राजपुरोहित, जिला महामंत्री मोहन सुराणा, भाजपा नेता सत्यप्रकाश आचार्य, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष और अणुव्रत समिति कार्यकारिणी सदस्य सुमन छाजेड़, अनिल भूरा, भाजपा नेता गोपाल अग्रवाल, अनिल शुक्ला, दशरथ सिंह शेखावत आदि उपस्थित रहे।

➠ **जसोल अणुव्रत समिति** ने मुनिश्री हर्षकुमार, मुनिश्री यशवंतकुमार और मुनिश्री मोक्षकुमार के सान्निध्य में पुराना ओसवाल भवन में चुनाव शुद्धि अभियान के पोस्टर का विमोचन किया गया। इस दौरान सिवांची मालानी क्षेत्र संस्थान के अध्यक्ष डुंगरचनद सालेचा, तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य गौतमकुमार सालेचा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष ऋषभराज तातेड़, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, महावीरचंद सालेचा, जवेरीलाल जी, मोहनीदेवी संखलेचा, आशादेवी गोलेच्छा, अरुणादेवी डोसी, मीना भंसाली आदि सदस्यगण उपस्थित थे।

➠ **अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी** ने सीताराम नेकिपुरिया भवन में चुनावशुद्धि अभियान के तहत बैनर का अनावरण किया गया। इस अवसर पर सिलीगुड़ी से भाजपा के विधायक शंकर घोष, अणुव्रत समिति सिलिगुड़ी के सलाहकार मेघराज सेठिया, अध्यक्ष डिम्पल बोथरा, मंत्री सुनीता बैद तथा अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

➠ **अणुव्रत समिति भीलवाड़ा** एवं **अणुव्रत मंच गंगापुर** के संयुक्त तत्त्वावधान में चुनाव शुद्धि अभियान के पोस्टर का विमोचन साध्वीश्री कीर्तिलता के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि नैतिक और चारित्रिक व्यक्ति चुनकर आएं तो देश का सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। अणुव्रत आंदोलन इस दिशा में सतत प्रयत्नशील है। कार्यक्रम में अणुविभा के राज्य प्रभारी अभिषेक कोठारी, अणुव्रत समिति भीलवाड़ा की पूर्व अध्यक्ष आनंदबाला टोडरवाल, उपाध्यक्ष राजेश चौरड़िया, सदस्य शिल्पा चौरड़िया, अणुव्रत मंच गंगापुर से अणुव्रत प्रवक्ता रमेश हिरण, संयोजिका प्रीति रांका, अंजना रांका, सपना लोढ़ा व रेखा नौलखा की उपस्थिति रही।

➠ **खारूपेटिया अणुव्रत समिति** ने टाउन गर्ल्स स्कूल में शिक्षकों व अन्य सदस्यों के बीच चुनाव शुद्धि पर प्रचार-प्रसार किया व पोस्टर लगाये। इस स्कूल को मतदान केन्द्र भी बनाया जाता है। मतदान होने वाले कमरों में भी पोस्टर लगाये गये। अध्यक्ष सरोज दूगड़ ने चुनाव शुद्धि के बारे में विस्तार से बताया। समिति सदस्यों ने हनुमान मंदिर के द्वार पर तथा जैन स्टोर प्रतिष्ठान के आगे बैनर लगाये। कुछ टोटो के पीछे भी बैनर लगाये गये ताकि लोग सजग होकर मतदान करें। कार्यक्रम में मंत्री रितु सुराना, निवर्तमान अध्यक्ष महेन्द्र छाजेड़, निर्मल चौरड़िया, शान्तिलाल सुराणा, सुरेन्द्र बैद आदि की सक्रिय भागीदारी रही।

➠ **वाराणसी** में मारवाड़ी सम्मेलन की मीटिंग में मेयर अशोक तिवारी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चुनाव प्रभारी गुजरात के विधायक जगदीश पटेल, उद्योगपति प्रदेश अध्यक्ष श्रीगोपाल तुलसियान, प्रदेश महामंत्री टीकम चंद सेठिया, प्रदेश कोषाध्यक्ष आदित्य पोद्दार आदि ने अणुव्रत के चुनावशुद्धि अभियान के पोस्टर का विमोचन किया।

➠ **कानपुर** में भाजपा सांसद प्रत्याशी रमेश अवस्थी की सभा में अणुव्रत आचार संहिता की बुकलेट व पैंफलेट प्रत्याशी और मतदाताओं को वितरित किया गया। टीकमचंद सेठिया ने मतदाताओं से नैतिक प्रत्याशी को वोट देने की अपील की।

➠ अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में **अणुव्रत समिति राजसमंद** द्वारा 12 अप्रैल को सनराइज पब्लिक माध्यमिक विद्यालय राजनगर में चुनाव शुद्धि अभियान की शुरुआत की गयी। कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष एडवोकेट अचल धर्मावत ने कहा कि आपके वोट का अधिकारी ऐसा प्रत्याशी होना चाहिए जो ईमानदार हो, चरित्रवान हो। उपाध्यक्ष रमेश मांडोत और अणुविभा के जगदीश बैरवा ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में विद्यालय के अध्यापक-अध्यापिकाओं संतोष सिसोदिया, योगिता नंदवाना, सोनम शाह, सुशीला सेन, पिंकी सेन के साथ ही बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

➠ **अणुव्रत समिति बारडोली** द्वारा चुनाव शुद्धि अभियान के तहत कार्यक्रम बारडोली पीएनजी पटेल ताजपोर कॉलेज में किया गया। डिप्लोमा इंजीनियरिंग के बच्चों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने अपने वक्तव्य में बताया कि हमें मतदान क्यों करना चाहिए, मत किसे देना चाहिए और हमारे मतदान की क्या उपयोगिता है। सेशन में बच्चों द्वारा जिज्ञासा भी व्यक्त की गयी जिसका बहुत ही सजगता के साथ समाधान दिया गया। कार्यक्रम में पीएनजी पटेल इंजीनियरिंग डिप्लोमा कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. लतेश चौधरी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा की संगठन मंत्री पायल चौरड़िया ने किया।

➠ **चेन्नई, मेलूसर, नोएडा, हनुमानगढ़, बीदासर, जयपुर, लाडनूं, दिवेर, चूरू, फरीदाबाद और अम्बिकापुर** अणुव्रत समिति की ओर से भी कार्यक्रम आयोजित किये जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

मैं
उम्मीदवार को वोट नहीं दूंगा !
आओ संकल्प लें...

કચ્છમિત્ર

મતદાન એ લોકશાહી અને લોકશુદ્ધિનો મહાયજ્ઞ

अतुल्य हिन्दुस्तान

सही उम्मीदवार का चयन कर राष्ट्र का सही निर्माण करें : मुकेश जैन बोथरा

ये आप हमारा सहयोग कर रहे हैं ऐसे एनजीओ हमें काम देखने को मिले : डॉ. सौरभ पारधी

बैनर लगाकर मतदात

ગુજરાત ગા

અણુવ્રતવિશ્વભારતીસોસા.નાનિ શુદ્ધિકરણ અભિયાનનો પ્રારંભ

પદાધિકારીઓની કલેક્ટર સાથે મુલાકાત, શહેરીજનોને મતદાન કરવા માટે જાગૃત કરવાનો આશય

मारवाड़ी समाज अपनी

सही चयन, राष्ट्र का सही निम

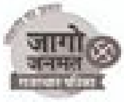

अणुव्रत संकल्प यात्रा

अणुव्रत अमृत वर्ष के तहत हुए आयोजनों में जन-जन तक पहुँची अणुव्रत की गूँज

■■ संयोजक ललित आंचलिया की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत आंदोलन का 75वां वर्ष 21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024 तक अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में व्यापक स्तर पर मनाया गया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में देश भर की अणुव्रत समितियों ने अन्य संस्थाओं के सहयोग से संकल्प यात्रा निकाली। इसके तहत पदयात्रा, साइकिल रैली, मैराथन, व्यक्तिगत संपर्क आदि के माध्यम से लोगों को अणुव्रत दर्शन के बारे में बताने के साथ ही उनसे संकल्प पत्र भी भरवाये गये। लोगों को नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

चेन्नई अणुव्रत समिति ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, चेन्नई चैप्टर के सहयोग से 28 जनवरी को संकल्प साइक्लोथन का आयोजन किया। इसमें 75 से अधिक साइकिल सवारों ने मानवता और नैतिकता से प्रेरित अणुव्रत नियमों का प्रचार-प्रसार करते हुए 75 किमी से अधिक पथ-प्रदर्शन किया। संपतराज चौरड़िया एवं मंत्री स्वरूप चन्द दाँती ने सभी साइकिल सवारों को टी-शर्ट और मेडल वितरित किये।

इससे पहले अणुविभा उपाध्यक्ष माला कातरेला, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से डॉ. कमलेश नाहर, टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्नचन्द बोथरा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ललित आंचलिया, किल्पाक तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक परमार एवं कोला सरस्वती वैष्णव सीनियर सेकंडरी स्कूल से के. के. महेश्वरी ने झंडी दिखाकर साइकिल सवारों को रवाना किया। साइकिल सवारों ने हाथ में अणुव्रत आचार संहिता की नियमावली लिखी तख्तियां ले रखी थीं। नशामुक्ति और डिजिटल डिटॉक्स आदि विषयों पर वीडियोज और रील्स बनाये गये।

6 समूहों में विभाजित साइकिल सवारों में श्रेष्ठ समूह को पुरस्कृत किया गया। आयोजन में अणुव्रत समिति के संयोजक पंकज चोपड़ा और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम संयोजक विवेक बोथरा एवं मंत्री सुधीर आंचलिया की विशेष भूमिका रही।

चिकमंगलूर अणुव्रत समिति और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की ओर से 3 फरवरी को संकल्प साइक्लोथन का आयोजन किया गया। समिति अध्यक्ष मंजू भंसाली ने हरी झंडी दिखाकर साइक्लोथन को रवाना किया। इसमें शामिल साइकिल और बाइक सवारों ने अणुव्रत नियमों का प्रचार-प्रसार करते हुए संयुक्त रूप से पथ प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में टीपीएफ के अध्यक्ष हर्षित डोसी और उनकी टीम के साथ ही अणुव्रत समिति के मंत्री गौतम आच्छा, संगीता गादिया समेत अनेक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

विजयवाड़ा अणुव्रत समिति की ओर से 4 फरवरी को साध्वीश्री शिवमाला के सान्निध्य में जैन भवन, गुंटूर से अणुव्रत संकल्प यात्रा निकाली गयी। यात्रा में शामिल अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने रास्ते में आने वाले स्कूलों के विद्यार्थियों तथा राहगीरों को अणुव्रत दर्शन के बारे में बताया एवं साहित्य व आचार संहिता का वितरण किया। करीब 40 किलोमीटर लंबी यात्रा का समापन 11 फरवरी को तेरापंथ भवन विजयवाड़ा में हुआ।

भीलवाड़ा अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत संकल्प यात्रा 4 फरवरी से शहर के मुख्य मार्गों एवं कॉलोनियों में निकाली गयी। यात्रा की शुरुआत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष एवं अणुव्रत सेवी जसराज चौरड़िया की गरिमामयी उपस्थिति में हुई। समिति ने अध्यक्ष अभिषेक कोठारी के नेतृत्व में फरवरी में 30 किलोमीटर की यात्रा पूर्ण की। तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष सुरेश चौरड़िया, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष राजेश चौरड़िया, विमला रांका, मंत्री रेणु चौरड़िया, सहमंत्री रीना बाफना, संगठन मंत्री सुनीता बोहरा सहित समिति के सदस्य यात्रा में सहभागी बने।

अजमेर अणुव्रत समिति द्वारा 11 फरवरी को अणुव्रत जनसंपर्क कार्यक्रम के दौरान पुलिस लाइन चौराहे से सिविल लाइन और कलेक्ट्रेट, सूचना केन्द्र, सदर कोतवाली पहुँच कर पृथ्वीराज मार्ग पर कोतवाली क्षेत्र के व्यवसायी बंधुओं से व्यक्तिगत संपर्क कर संकल्प पत्र भरवाये गये।

इसके बाद अणुव्रत कार्यकर्ता नया बाजार, पुरानी मंडी, पड़ाव होते हुए कैसरगंज पहुँचे, वहाँ गोल चक्कर, सीताराम बाजार के व्यापरियों से संपर्क पत्र भरवाये और इसके पश्चात् गवर्नमेंट कॉलेज से स्टेशन रोड होकर गांधी भवन पहुँच कर जनसंपर्क किया गया। कचहरी रोड, एमजी रोड होकर बस स्टैंड से वापस पुलिस लाइन जाकर जनसंपर्क अभियान सम्पन्न हुआ। कुल पाँच किलोमीटर की दूरी तय कर करीब 125 लोगों से व्यक्तिगत संपर्क किया गया। समिति अध्यक्ष बी. एल. सामरा के

नेतृत्व में सम्पन्न हुए अभियान में कार्यसमिति सदस्यों के साथ सभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और मंत्री की भी सक्रिय भागीदारी रही।

फरीदाबाद अणुव्रत समिति की ओर से 13 फरवरी को अणुव्रत संकल्प यात्रा निकाली गयी जो संत नगर, ओल्ड फरीदाबाद, राम गली से होती हुई मथुरा-दिल्ली हाईवे पर समाप्त हुई। यात्रा में लगभग 70 बहनों ने उत्साह के साथ भाग लिया। यात्रा के लिए बैनर्स सेक्टर 22 स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकंडरी स्कूल द्वारा बनवाये गये थे। पश्चिम महानगर सेवा भारती प्रकल्प भुवनेश शर्मा एवं अणुव्रत समिति अध्यक्ष लाजपत राय जैन ने सभी सहभागियों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की।

जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा 20 फरवरी को अणुव्रत संकल्प यात्रा निकाली गयी। मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा के दिशा निर्देशन तथा संयोजिका आशा नीलू टाक के संयोजन में निकाली गयी संकल्प यात्रा में शामिल प्रेम निकेतन स्कूल की कक्षा 11वीं एवं 12 वीं के 50 विद्यार्थी "बदले युग की धारा। अणुव्रतों के द्वारा।।", "संयम ही जीवन है", "निज पर शासन फिर अनुशासन" सरीखे नारे लगाते चल रहे थे। तीन किलोमीटर लंबी संकल्प यात्रा प्रेम निकेतन विद्यालय से प्रारंभ होकर दुर्गापुरा होते हुए वापस विद्यालय पहुँचकर संपन्न हुई। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका कमलेशजी तथा अन्य शिक्षिकाओं ने भी रैली में सहभागिता की।

कोलकाता अणुव्रत समिति द्वारा 21 फरवरी को मुनिश्री जिनेश कुमार के सान्निध्य में अणुव्रत संकल्प यात्रा निकाली गयी। समिति के मंत्री नवीन दुगड़ के अनुसार संकल्प यात्रा लोअर रोडन स्ट्रीट से शुरू होकर पार्क स्ट्रीट, रफी किदवई स्ट्रीट, गणेश चंद्र एवेन्यू होते हुए चितरंजन एवेन्यू मित्र परिषद् पहुँचकर संपन्न हुई। करीब 5 किलोमीटर लंबी संकल्प यात्रा में समिति अध्यक्ष प्रदीप सिंघी, साउथ कोलकाता तेरापंथ सभा के मंत्री कमल सेठिया, तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कोलकाता अध्यक्ष राकेश नाहटा, मध्य उत्तर कोलकाता अध्यक्ष शशि बैद, हावड़ा अध्यक्ष गगन दीप, कोलकाता मेन अध्यक्ष ऋषभ सुराणा, जुगराज बैद, कार्यसमिति सदस्य नवरत्न बैद, प्रकाश दुगड़, प्रवीण सुराणा, महेंद्र कोचर आदि सहभागी बने।

समिति द्वारा 22 फरवरी को लॉयन सफारी पार्क साउदर्न एवेन्यू से अणुव्रत संकल्प यात्रा निकाली गयी जो गोलपार्क होते हुए विवेकानंद पार्क पहुँचकर संपन्न हुई। यात्रा में अध्यक्ष प्रदीप सिंघी, कार्यकारिणी सदस्य कांता चौरड़िया, विजय चोपड़ा, प्रदीप चौरड़िया, सरोज देवी सिंघी एवं अन्य सदस्य सहभागी बने।

बारडोली अणुव्रत समिति द्वारा 24 फरवरी को अणुव्रत मैराथन का आयोजन किया गया। इसमें सेंसेरिटी स्कूल के 700 से अधिक विद्यार्थियों, शिक्षकों, आमजन और अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। सेंसेरिटी स्कूल के प्रिंसिपल अमर भाई, ब्रह्माकुमारी से जयश्री बेन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेश चोरड़िया व अणुविभा की राष्ट्रीय संगठन मंत्री पायल चौरड़िया ने मशाल प्रज्वलित की।

मुख्य अतिथि जीतू भाई वासिया ने हरी झंडी दिखाकर मैराथन को रवाना किया। तीन किलोमीटर की यात्रा जलाराम मंदिर से प्रारम्भ होकर बारडोली स्वराज आश्रम, वामदोत्त सर्किल, गोल्डमार्क रोड से होती हुई सेंसेरिटी स्कूल पर पहुँचकर संपन्न हुई। विद्यार्थियों ने रास्ते में स्थान-स्थान पर लघु नाटिका के द्वारा लोगों को नशा नहीं करने की प्रेरणा दी।

मैराथन में अनेक संस्थाओं के अध्यक्षों के साथ ही सभा अध्यक्ष राजेंद्र बाफना, पूर्व अध्यक्ष सुजान मेहता, सुभाष हिंगड़, मीना मेहता, संजय बडोला, अंकुर मेहता, सिद्धार्थ दक, पंकज बडोला, जीतो चेयरपर्सन आशा चौरड़िया समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

हिसार अणुव्रत समिति द्वारा 26 फरवरी को अणुव्रत संकल्प यात्रा के तहत नशामुक्ति साइकिल रैली निकाली गयी। मुनिश्री पृथ्वी राज व मुनिश्री देवेंद्र कुमार ने मंगल पाठ सुनाकर रैली का शुभारंभ किया। 60 किलोमीटर लंबी साइकिल रैली में पोस्टर-बैनर-नारों के माध्यम से आमजन को नशे से दूर रहने का संदेश दिया गया। मुख्य अतिथि डॉ. अरुण अग्रवाल व निशांत मेहता ने युवाओं से आह्वान किया कि वे नशे से दूर रहकर रचनात्मक व सकारात्मक कार्यों में अपनी ऊर्जा को लगाएं और समाज व देश के विकास में अपना योगदान दें।

समिति अध्यक्ष राजेंद अग्रवाल ने कहा कि हमारी युवा पीढ़ी सबसे अधिक नशे की ओर बढ़ रही है जो देश व समाज के लिए अच्छा संकेत नहीं है। इसलिए सभी का दायित्व है कि युवाओं में बढ़ती हुई नशे की लत को दूर करने के लिए अपना हरसंभव योगदान दें। राजेंद्र अग्रवाल ने अतिथियों को अणुव्रत पटका व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अनिल जैन, सतपाल शर्मा, अनिल गुप्ता, जगदीश गर्ग, विनोद जैन, राजकुमार सोनी, इंद्रेश पांडे तथा राइडिंग क्लब के सदस्य उपस्थित थे।

अहमदाबाद अणुव्रत समिति ने 28 फरवरी को शाहीबाग तेरापंथ भवन से रिवरफ्रंट, सुभाष ब्रिज, खोड़ियार नगर, गणेश नगर, बहेरामपुरा, पिराणा, इंदिरानगर होते हुए व कलीकुंड धोलका तक अणुव्रत संकल्प यात्रा निकाली। वापसी में दधीचि ब्रिज, गांधी ब्रिज, नेहरू ब्रिज, अंबेडकर ब्रिज होते हुए ऑर्चीड ग्रीन शाहीबाग में यात्रा का समापन किया गया। यात्रा में धोलका विद्या प्रचार मंडल, सरस्वती विद्या मंदिर से 1000 बच्चे तथा शिक्षकगण, ट्रस्टी और मंत्री सम्मिलित हुए। समिति अध्यक्ष प्रकाश धींग ने सभी का स्वागत किया। चरित्र निर्माण में अणुव्रत की भूमिका पर विचार व्यक्त किये। उपाध्यक्ष सुरेंद्र लुनिया ने कहानी एवं प्रयोग द्वारा अणुव्रत के उद्देश्य को विस्तार से बताया। कार्यसमिति सदस्य मधु डागा ने अणुव्रत जीवनशैली पर विचार

अणुव्रत समाचार

व्यक्त किये। हंस एलॉय के चेयरमेन दिनेश डागा ने भी विचार रखे। अणुव्रत दुपट्टा, साहित्य तथा अणुव्रत पट्ट से ट्रस्टी, प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों का सम्मान किया गया। बच्चों ने अणुव्रत के संकल्प लिये।

उपाध्यक्ष बाबूलाल चौपड़ा ने प्रत्येक मंगलवार को संयम दिवस के तीन नियम के संकल्प दिलवाये तथा आभार ज्ञापन किया। विद्यालय के खजांची भार्गेशभाई मोदी ने भविष्य में भी अणुव्रत के कार्यक्रम करने का आग्रह करते हुए पुस्तकालय में अणुव्रत के नियमों को पेंट करवाने की स्वीकृति प्रदान की। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की मंत्री डिम्पल श्रीमाल, सहमंत्री अंजू हिरण, कार्यसमिति सदस्य प्रकाश सोनी, मधु डागा, लक्ष्मण गोगड की भी उपस्थिति रही।

झकनावदा अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में शासकीय गर्ल्स माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं ने रैली निकाली। स्कूल परिसर से होकर तहसील कार्यालय तक निकाली गयी रैली में शामिल छात्राओं ने अणुव्रत के नारों का उद्घोष करने के साथ ही लोगों को नशामुक्ति और संयम का संदेश दिया। समिति के अध्यक्ष प्रकाश भागू ने छात्राओं को अणुव्रत का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक प्रतिभा सोलंकी, शिक्षिका आयुषी जोशी, कार्यकर्ता मुकेश मोरी, विजय कुमार बोरा तथा अणुव्रत विद्यार्थी अणुव्रत छात्र संसद की सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन जीवन विज्ञान के प्रशिक्षक अवधेश कुमार ने किया। शिक्षक राधेश्याम पाटीदार ने आभार व्यक्त किया।

दिनहाटा अणुव्रत समिति ने पहले दिन दिवानहाट से दिनहाटा तक 13 किलोमीटर लंबी अणुव्रत संकल्प यात्रा निकाली। दूसरे दिन दिनहाटा कोल्ड स्टोरेज से दिवानहाट 14 किलोमीटर लंबी यात्रा निकाली गयी। तीसरे दिन दिनहाटा से गोसानीमारी तक 13 किलोमीटर लंबी यात्रा निकाली गयी। चौथे दिन गोसानीमारी से चंदामारी तक 12 किलोमीटर लंबी यात्रा निकाली गयी। साध्वीश्री स्वर्णरेखा और मुनिश्री डॉ. प्रशांत कुमार के पावन सान्निध्य में निकाली गयी पैदल यात्रा के दौरान रास्ते में लोगों को बांग्ला भाषा में मुद्रित अणुव्रत गीत, अणुव्रत आचार संहिता तथा अणुव्रत संकल्प पत्र वितरित किये गये। इस दौरान अणुव्रत गीतिका के संगान से वातावरण अणुव्रतमय हो गया। चारों दिन की यात्रा में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार सुराणा तथा अन्य पदाधिकारियों व सदस्यों की सहभागिता रही।

अणुविभा मुख्यालय में तीन दिवसीय
बालोदय शिविर का आयोजन

■■ संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया की रिपोर्ट ■■

राजसमन्द। अणुविभा में आयोजित तीन दिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविर का समापन 3 मार्च को हुआ। समापन समारोह में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने बालोदय शिविर को बच्चों के जीवन में नये अनुभव तलाश करने वाला बताते हुए उनसे संवाद किया।

वहीं अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने शिक्षकों से यहाँ के सीखने-सिखाने के तरीकों को स्कूलों में भी लागू करने का आह्वान किया। अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने अणुव्रत को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने हेतु यहाँ के शैक्षिक प्रकल्पों से शिक्षा जगत को परिचित कराने की जरूरत बतायी। 'बच्चों का देश' पत्रिका के सह सम्पादक प्रकाश तातेड़ ने इस पत्रिका को संस्कार शिक्षण का प्रभावी स्रोत बताया। शिक्षा सेवी डॉ. राकेश तैलंग ने शिक्षा के भावनात्मक व क्रिया आधारित स्वरूप को विद्यालयी व्यवस्थाओं के बीच संजीवनी बूटी के रूप में योजित करने हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर अणुव्रत इतिहास के संयोजक प्रमोद घोड़ावत, अणुविभा के न्यासी अशोक डूंगरवाल, सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया और गणेश लाल कच्छारा भी उपस्थित थे।

शिविर के दौरान बच्चों ने जीवन विज्ञान और नेतृत्व का प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ ही प्रकृति भ्रमण का आनंद लिया तथा बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन किया। प्रजातंत्रीय मूल्यों के विकास के लिए आयोजित बाल संसद को बच्चों ने चाव से देखा। जल संरक्षण व संवर्द्धन पर आयोजित बाल संसद में पक्ष और प्रतिपक्ष के बाल सांसदों ने वाटर हार्वेस्टिंग, प्रदूषित जल के शुद्धीकरण और पारंपरिक जलस्रोतों के संरक्षण पर जोर दिया।

बच्चों ने शिविर में मौन भोजन, आवास व्यवस्था और यहाँ के प्रेरक वातावरण को बहुत सराहा। बच्चों के अनुसार यह शिविर उन्हें स्कूल से अलग माहौल देने और उन्हें स्वयं की प्रेरणा से कुछ नया करने के अनुभव देने वाला प्रतीत हुआ। अभिभावकों सहित संबंधित संस्थाओं के संस्था प्रधान व शिक्षक तथा अणुविभा परिवार के जगदीश बैरवा, देवेन्द्र आचार्य, मोनिका बापना और प्रतिभा जैन ने शिविर में सक्रिय भागीदारी निभायी।

अणुव्रत पत्रिका योगक्षेमी

श्री सुरेश कोठारी

इंदौर

पर्यावरण जागरुकता अभियान

■■ संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■

विश्व में फैला हुआ प्रदूषण आज मानवता के लिए भयानक अभिशाप बनता जा रहा है। समय रहते इस पर नियंत्रण करना होगा, अन्यथा इसके दुष्परिणामों से संपूर्ण मानवता अछूती नहीं रह पाएगी। इसे देखते हुए अणुव्रत विश्व भारती के पर्यावरण संरक्षण प्रकल्प के तहत अणुव्रत अमृत वर्ष के दौरान देश भर में फैली अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों की ओर से अणुव्रत वाटिकाओं का निर्माण किया जा रहा है।

मुम्बई अणुव्रत समिति द्वारा नेरुल क्षेत्र में स्थित आचार्य श्री तुलसी खेल मैदान में "नारी गौरव उद्यान अणुव्रत वाटिका" का निर्माण किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने

वाटिका के सामने स्थित चौक पर पधार कर महाप्रज्ञ चौक का अवलोकन किया। समिति ने अणुव्रत वाटिका में जनजागृति के लिए अणुव्रत संकल्प, नशामुक्ति हेतु स्लोगन पट्ट, पर्यावरण शुद्धि हेतु ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर लगाये हैं। महापौर जयवन्त सुतार, पूर्व शिक्षण समिति अध्यक्ष नगर सेवक अर्जुन सिंघवी, नगर सेवक संतोष शेट्टी, सुरेश शेट्टी, नगर सेविका मीरा पाटील, शिल्पा काम्बली तथा अणुव्रत समिति अध्यक्ष के प्रयास से नवी मुंबई महानगर पालिका ने वाटिका के नामकरण का प्रस्ताव पारित किया।

भीलवाड़ा अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ नगर स्थित उद्यान का नामकरण अणुव्रत वाटिका के रूप में किया गया। मंत्री रेणु चौरड़िया ने बताया कि गणतंत्र दिवस पर अणुव्रत वाटिका में

झंडारोहण किया गया और अणुव्रत समिति सदस्यों ने गुलाब के पौधे लगाये और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। वाटिका में "आओ, ईको फ्रेंडली जीवनशैली अपनाएं" के स्थायी बोर्ड लगाये गये। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अभिषेक कोठारी ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर तेरापंथ नगर अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया, वरिष्ठ श्रावक नवरतन मल झाबक, अणुव्रत सेवी लक्ष्मी लाल गांधी, अणुव्रत महासमिति के पूर्व महामंत्री संपत श्यामसुखा, तेयुप अध्यक्ष सुरेश चौरड़िया, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष विमला रांका, राजेश चौरड़िया, सह मंत्री रीना बापना, निवर्तमान अध्यक्ष आनंद बाला टोडरवाल, निर्मल गोखरू, समेत गणमान्य जन उपस्थित थे।

अम्बिकापुर अणुव्रत समिति की ओर से छत्तीसगढ़ विद्या निकेतन, सरहरी, ब्लॉक प्रतापपुर में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कई फलदार एवं फूलों के पौधों का

रोपण करने के साथ ही इनकी देखभाल का संकल्प भी अतिथियों और स्कूली छात्र-छात्राओं ने लिया। मुख्य अतिथि पश्चिमांचल क्षेत्र की पर्यावरण सहसंयोजिका ममोल कोचेटा ने कहा कि प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है, हमारा भी यह कर्त्तव्य है कि हम प्रकृति को संरक्षित करें ताकि मानव को शुद्ध हवा, पानी, पर्यावरण मिल सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता भूतपूर्व सैनिक शिवचरण नापित ने की। उप सरपंच अरविंद पटेल और सरगुजा साइंस ग्रुप के अंचल ओझा ने भी विचार रखे। अणुव्रत समिति की सदस्य ज्योत्सना पालोरकर ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक बृजमोहन सोनपाकर एवं प्रधानपाठक सुमन कुशवाहा ने किया।

जोधपुर अणुव्रत समिति द्वारा दूसरी अणुव्रत वाटिका का निर्माण शिवालय, माता का कुंड, गौर चौक, चांदपोल में हुआ। उम्मीद फाउंडेशन के सहयोग से निर्मित वाटिका का उद्घाटन अणुव्रती ओम प्रकाश लोहरा ने किया। अध्यक्षता धापी बाई ने की। मुख्य वक्ता राजू मेहता थे और अतिथियों को शॉल पहनाकर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री मितेश जैन ने किया।

दिनहाटा अणुव्रत समिति द्वारा गोधूलि बाजार स्थित शेमरॉक फ्लोरेट स्कूल में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन समाजसेवी आनंद सेठी ने किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति

के अध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार सुराणा, सचिव राजकुमार पुगलिया, सुचित जैन, पिंकू जैन, अरविंद सोमानी, एकता पाटनी, सारिका सोमानी, राजा ज्योति मालपानी समेत काफी संख्या में अणुव्रत सदस्य उपस्थित थे। अणुव्रत वाटिका के सौजन्यकर्ता आनंद कुमार व रत्न प्रभा सेठी रहे।

डाबड़ी अणुव्रत समिति की ओर से निर्मित अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ मुनिश्री अमृत कुमार व मुनिश्री उपशम कुमार के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुनिश्री ने बच्चों को

ज्ञानवर्धक बातें बतायीं। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष भवानी सिंह, उपाध्यक्ष हरि सिंह, अचीवर्स स्कूल के संचालक संदीप राव, अग्रवाल धर्मशाला के अध्यक्ष सरजीत सिंह, गौशाला के अध्यक्ष मदन गोपाल, बंसीलाल वना व अन्य सदस्य उपस्थित थे।

अणुव्रत मंच गंगापुर द्वारा आचार्य श्री कालूगणि समाधि स्थल कालू कीर्ति विहार में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन अणुविभा के ट्रस्टी अशोक डूंगरवाल ने किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण मानवता के लिए वरदान है। इस अवसर पर पौधरोपण भी किया गया। मंच की ओर से अतिथियों को गमले में लगा पौधा भेंट किया गया। अणुविभा नॉर्थ जोन के राज्य प्रभारी अभिषेक कोठारी ने अणुव्रत मंच के कार्यक्रम की प्रशंसा की। अणुव्रत प्रवक्ता रमेश हिरण ने प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। अणुव्रत मंच की सह संयोजिका सपना लोढ़ा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। सदस्य रेखा नौलखा ने आभार ज्ञापन किया।

बज्जू अणुव्रत मंच की ओर से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 961 आरडी परिसर में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ गणमान्य लोगों की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में औषधीय और फूलदार पौधे लगाये गये। वरिष्ठ अध्यापक रामचंद्र ने बताया कि इस अवसर पर विद्यालय के स्टाफ, वन विभाग के कर्मचारी, विद्यालय की संस्था एसएमसी के अध्यक्ष राजेश जानी, छात्रों के अभिभावक और विद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे। विद्यालय की छात्राओं ने वाटिका की देखभाल के लिए वाटिका को गोद लिया। अणुव्रत मंच के संयोजक रामचंद्र ने छात्राओं और अतिथियों का आभार प्रकट किया।

पीसांगन अणुव्रत मंच की ओर से डाकघर परिसर पीसांगन में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ गणमान्य लोगों की उपस्थिति में हुआ। वाटिका में महोगनी, नीम, अशोक आदि के पौधे लगाये गये। अणुव्रत समिति अजमेर के अध्यक्ष बी. एल. सामरा, पीसांगन अणुव्रत मंच के संयोजक भवानीशंकर तोसिक, पोस्ट मास्टर पदम वैष्णव, पंचायत समिति प्रधान दिनेश कुमार नायक, मंडल अध्यक्ष मुन्ना लाल कुमावत, पंचायत समिति सदस्य प्रदीप कुमावत, भामाशाह अशोक बाकलीवाल ने अणुव्रत वाटिका के होर्डिंग का अनावरण किया। पेंशनर समाज पीसांगन की ओर से नेमीचंद कुमावत, सत्यनारायण पाराशर, सलामुद्दीन, मोहनलाल हनुमंतपुरा ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

देश भर में मनाया ईको फ्रेंडली फेस्टिवल

अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल अभियान के तहत देश भर में फैली अणुव्रत समितियों ने लोगों को होली के त्योहार पर पानी का अपव्यय नहीं करने का संदेश दिया गया। साथ ही केमिकल युक्त रंगों से बचने तथा तिलक होली मनाने की अपील की गयी।

जसोल अणुव्रत समिति की ओर से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का विमोचन साध्वीश्री रतिप्रभा के सान्निध्य में नवकार माध्यमिक विद्यालय में किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री मनोज्ञ यशा ने कहा कि यदि मिट्टी का संरक्षण होता है तो हम कुछ हद तक पानी का प्रदूषण रोक सकते हैं। साध्वीश्री पावन

यशा ने कहा कि वायु प्रदूषण मानवता के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों मे से एक है। हम हवा में सांस लेते हैं। उसमें ऐसी खतरनाक गैस मिल जाती है, जो अततः सांस के माध्यम से हमारे शरीर में प्रवेश करती है और सांस संबंधी विकारों और मृत्यु का कारण बनती है।

शिवपुरी अणुव्रत मंच ने वात्सल्य गृह के बच्चों के साथ पर्यावरण संरक्षण रैली निकाली और पार्क की सफाई की। लोगों को बताया कि कचरे का निस्तारण कैसे करें। अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने पोस्टर्स के माध्यम से पेड़ लगाओ, पानी-बिजली बचाओ एवं पर्यावरण संरक्षण की सलाह दी तथा स्वयं संकल्प लिया कि हर रविवार सुबह यह कार्य करेंगे।

बालोतरा अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम में गोकुलधाम सोसायटी के सभी वर्ग के सदस्यों ने मिलकर गुलाल, संगीत, नृत्य एवं उल्लास के साथ ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाया। इसमें पानी व केमिकलयुक्त रंगों का उपयोग नहीं किया गया।

जयपुर अणुव्रत समिति ने अणुविभा जयपुर केंद्र में शासन गौरव "बहुश्रुत" साध्वीश्री कनकश्री के सान्निध्य में ईको फ्रेंडली बैनर के माध्यम से जनजागृति का कार्य किया। भिक्षु साधना केंद्र व प्रेम निकेतन हॉस्पिटल में डॉक्टरों के माध्यम से बैनर द्वारा जनजागृति का कार्य किया गया। जयपुर पब्लिक स्कूल में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन करने के साथ ही विद्यार्थियों को केमिकल रहित रंग लगाते हुए प्रेम और भाईचारे के साथ होली खेलने के लिए प्रेरित किया गया। बच्चों को पानी बचाने का संकल्प भी दिलाया गया।

अणुव्रत समिति मुंबई क्षेत्र चेंबूर की ओर से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का अनावरण साध्वीश्री मधुस्मिता व सहवर्तिनी साध्वीवृंद के सान्निध्य में हुआ। ईको फ्रेंडली बैनर द्वारा जनजागृति का कार्य आशीर्वाद क्लिनिक में भी किया गया।

जगराओं अणुव्रत समिति ने भारतीय स्टेट बैंक के चीफ मैनेजर, डॉक्टर, तेरापंथ सभा के पदाधिकारियों की उपस्थिति में विद्या मंदिर स्कूल, आरके स्कूल, स्वामी रूपचंद स्कूल, सेंट महाप्रज्ञ स्कूल, शिवालिक स्कूल, रूप वाटिका के समक्ष ईको फ्रेंडली बैनर द्वारा जन जागृति का कार्य किया।

फरीदाबाद अणुव्रत समिति की ओर से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का अनावरण साध्वीश्री अणिमाश्री के सान्निध्य में किया गया। अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने होली पर लोगों को मैत्री और सद्भावना बढ़ाने, जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण नहीं करने, केमिकल युक्त रंगों से बचने तथा प्राकृतिक रंगों का उपयोग करने की सलाह दी।

गाजियाबाद अणुव्रत समिति ने होली पर ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर के माध्यम से लोगों में सजगता लाने का प्रयास किया।

कोलकाता व हावड़ा अणुव्रत समिति द्वारा न्यू अलीपुर में मुनिश्री जिनेश कुमार के सान्निध्य में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का अनावरण किया गया। मुनिश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि होली पर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति हम सभी सजग और जागरूक रहें। पानी का अपव्यय नहीं करें। मैत्री और सद्भावना बढ़ाएं। कार्यक्रम में अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी एवं अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। **कोलकाता अणुव्रत समिति** द्वारा लिलुआ के संगम हॉल में लोगों से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का अनुरोध किया गया।

धुबड़ी अणुव्रत समिति ने लोगों से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की अपील की और कहा कि हमें होली पर केमिकल युक्त रंगों का उपयोग नहीं करना चाहिए। पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए। सभी ने इन संकल्पों का समर्थन किया और ईको फ्रेंडली होली मनाने का निर्णय लिया।

दिनहाटा अणुव्रत समिति ने अणुव्रत वाटिका में स्थायी रूप से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का बैनर लगाकर विद्यार्थियों के मध्य जागृति का कार्य किया। समिति ने तेरापंथ भवन में साध्वीश्री स्वर्णरेखा के सान्निध्य में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर लगाया।

सिलीगुड़ी अणुव्रत समिति की ओर से साध्वीश्री स्वर्णरेखा, साध्वीश्री स्वस्तिका, साध्वीश्री सुधांशु प्रभा और साध्वीश्री गौतम यशा के सान्निध्य में ईको फ्रेंडली बैनर द्वारा जनजागृति का कार्य किया गया। समिति ने तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने एवं खुशियों की होली मनाने का संदेश दिया।

किशनगंज अणुव्रत समिति ने तेरापंथ भवन में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर तले जन जागृति का कार्य किया।

इस्लामपुर अणुव्रत समिति ने गर्ल्स हाई स्कूल की छात्राओं को बताया कि ईको फ्रेंडली होली मनाकर जलवायु प्रदूषित होने से बचाएं। अणुव्रत जीवनशैली अपना कर पर्यावरण बचाएं।

अंबिकापुर अणुव्रत समिति ने सरस्वती शिशु मंदिर में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने के लिए जनजागृति का कार्य किया। समिति ने सरगुजा गाँव स्थित छत्तीसगढ़ विद्या निकेतन स्कूल में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर तले छात्रों व शिक्षकों के मध्य जागृति का कार्य किया।

वापी अणुव्रत समिति ने आराधना इंग्लिश स्कूल भिलाण के प्रांगण में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर तले कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान स्कूल के बच्चों ने सभी मेहमानों का स्वागत कुमकुम तिलक से किया।

अहमदाबाद अणुव्रत समिति द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने और पर्यावरण संरक्षण तथा प्राणी मात्र की सुरक्षा के संदेश को संप्रेषित करने हेतु कार्यक्रम रखा गया। इसके साथ

ही अणुव्रत उद्यान के पास तिलक होली का कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया।

डाबड़ी अणुव्रत समिति ने आर्य कॉलेज में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर द्वारा छात्राओं के मध्य जन जागृति का कार्य किया। एक अन्य कार्यक्रम में मुनिश्री अमृत कुमार और मुनिश्री उपशम कुमार ने बच्चों को पर्यावरण से संबद्ध कविता सुनायी।

फारबिसगंज अणुव्रत समिति ने अणुव्रत वाटिका में गणतंत्र दिवस पर तिरंगा फहराया। कन्या नर्सिंग हॉस्टल की कन्याओं ने अणुव्रत वाटिका में भारत माता की रंगोली बनायी। इनफिनिटी कोचिंग सेंटर में पर्यावरण जागरुकता अभियान की सह संयोजिका प्रभा सेठिया ने एसडीओ साहब से नगर के पार्क एवं पर्यावरण सुरक्षा हेतु मिलजुल कर कार्य करने का प्रस्ताव रखा। इस पर उन्होंने साथ देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों को फूलों युक्त गमला भेंट किया गया।

समिति ने पार्श्वनाथ जिनालय स्थापना दिवस पर जुलूस निकाल ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर द्वारा जनजागृति का कार्य किया। समिति ने सकल मारवाड़ी समाज के समक्ष ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर द्वारा जनजागृति का कार्य किया। इस दौरान राम-सीता बनकर लोगों को संदेश दिया गया कि हर फेस्टिवल को ईको फ्रेंडली तरीके से ही मनाएं।

पाली अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम में संभागीय आयुक्त प्रतिभा सिंह ने ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के पोस्टर का विमोचन किया।

गंगाशहर अणुव्रत समिति द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का लोकार्पण नैतिकता की शक्तिपीठ के पावन प्रांगण में मुनिश्री श्रेयांश कुमार और मुनिश्री चैतन्य कुमार 'अमन' के सान्निध्य में किया गया।

हिसार अणुव्रत समिति ने टाउन पार्क और जिंदल पार्क में आयोजित कार्यक्रम में लोगों को तिलक होली का संदेश देने के साथ ही ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने के लिए जागरूक किया।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

■■ संयोजक डॉ. धनपत लुनिया की रिपोर्ट ■■

जयपुर। अणुव्रत समिति की ओर से 25 फरवरी को अणुविभा जयपुर केन्द्र के महाप्रज्ञ सभागार में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया गया। शासन गौरव बहुश्रुत साध्वीश्री कनकश्री ने जीवन में अणुव्रत की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अणुव्रत व्यक्ति में दायित्व चेतना, विवेक बुद्धि एवं नियंत्रण

की शक्ति जगाता है। अणुव्रत के बिना लाइट और ब्रेक विहीन समाज की गाड़ी का भविष्य क्या होगा? साध्वीश्री समितिप्रभा ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की काव्य रचना का पाठ किया।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित योगाचार्य डॉ. नरेंद्र शर्मा "कुसुम" ने चुनाव शुद्धि विषय पर काव्य पाठ किया। साध्वीश्री संस्कृतिप्रभा ने व्यसनमुक्त जीवन पर कविता प्रस्तुत की। अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध कवि इकराम राजस्थानी ने अणुव्रत पर मुक्तक सुनाये तो सभागार 'ऊँ अर्हम्' की ध्वनि से गूँज उठा। इससे पहले काव्यधारा की शुरुआत कवयित्री डॉ. क्षिप्रा नत्थानी ने भ्रूणहत्या पर अपनी काव्य पंक्तियों "एक ही वार में सारे किस्से तमाम कर गये, बेटियां मार कर जोरों - शोरों से वे बेखौफ बेझिझक चेहरे" से की।

कवयित्री सोनू यशराज ने मानवीय एकता की बात करते हुए पढ़ा - "आदमी से आदमी का फासला बढ़ता ही गया, प्रश्न है उस फासले को पाटेगा कौन?" इस अवसर पर राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष जसबीर सिंह, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, अणुविभा जयपुर केन्द्र के अध्यक्ष एवं जय तुलसी फाउंडेशन के प्रधान न्यासी पन्नालाल बैद, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी शिक्षा समिति के अध्यक्ष नरेश मेहता, तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम की अध्यक्ष प्रज्ञा सुराणा, शहर अध्यक्ष नीरू मेहता, युवक रत्न दलपत लोढ़ा, महाप्रज्ञ इन्टरनेशल स्कूल के संयोजक गौरव मांडोत, हेमराज पुगलिया, राजेश नागौरी, प्रेमचंद छाबड़ा के साथ ही तेरापंथ युवक परिषद् और अणुव्रत समिति जयपुर के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। अणुव्रत समिति जयपुर के अध्यक्ष विमल गोलछा ने कवियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा एवं सौरभ जैन ने किया। कार्यसमिति सदस्य सुरेश बरड़िया ने आभार ज्ञापन किया।

जसोल। अणुव्रत समिति की ओर से स्थानीय नवकार माध्यमिक विद्यालय में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया गया। साध्वीश्री मनोज्ञयशा ने उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत के नियमों को अपनाकर हम एक स्वस्थ समाज व राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। साध्वीश्री पावनयशा ने कहा कि अणुव्रत व्यसनमुक्त जीना सिखाता है और बच्चों को सुसंस्कारी भी बनाता है। अणुव्रत जीवन का आधार और दर्शन है तथा जीवन को ऊँचाइयों तक पहुँचाने का माध्यम है। अणुव्रत सत्य के शोध और अभिव्यक्ति का सर्वमान्य मंच है।

अणुविभा के राष्ट्रीय सहमंत्री ओमप्रकाश बांठिया ने कहा कि अणुव्रत पूरे मानव समाज के लिए है। अणुव्रत के नियम और दर्शन को समझना ही नहीं है, इसे अपनी जीवनशैली में शामिल करना है। अणुव्रत सहप्रभारी लीलादेवी सालेचा और अध्यापक चन्द्रप्रकाश ने भी विचार व्यक्त किये। अणुव्रत समिति के मंत्री सफरु खान ने विद्यार्थियों को संयम दिवस पर प्रत्येक मंगलवार को वाणी पर, भोजन पर संयम रखने के साथ ही एक घंटा मौन रखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में स्कूली बालक-बालिकाओं से संयम के संकल्प पत्र भरवाये गये व संकल्प दिलाये गये। स्कूल के बालक-बालिकाओं को बैग देकर सम्मानित किया गया। इससे पहले समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने स्वागत भाषण दिया। उपाध्यक्ष डिम्पल श्रीश्रीमाल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति की उपाध्यक्ष रेखा डोसी ने किया।

किशनगंज। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति किशनगंज द्वारा 31 जनवरी को अणुव्रत काव्यधारा, अणुव्रत प्रदर्शनी व अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। अणुव्रत काव्यधारा में कवयित्री निधि चौहान, अनुपमा जी, एमएमबीजी डिस्ट्रिक्ट इंचार्ज लता बैद व ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका ममता बैद ने नैतिकता, पर्यावरण, भ्रूणहत्या, आत्महत्या, नशामुक्ति व अन्य विषयों पर कविताएं सुनायीं। इस अवसर पर बिहार की जीएसटी कमिश्नर वंदना वशिष्ठ द्वारा बनायी हुई पेंटिंग की प्रदर्शनी भी लगायी गयी। अणुव्रत व्याख्यानमाला की मुख्य वक्ता उपासिका शायर बाई कोठारी व निधि चौहान थीं। इससे पहले अतिथियों का स्वागत अणुव्रत समिति की अध्यक्ष रश्मि बैद ने किया। मंत्री ममता सुराणा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष सुनीता कोठारी ने किया।

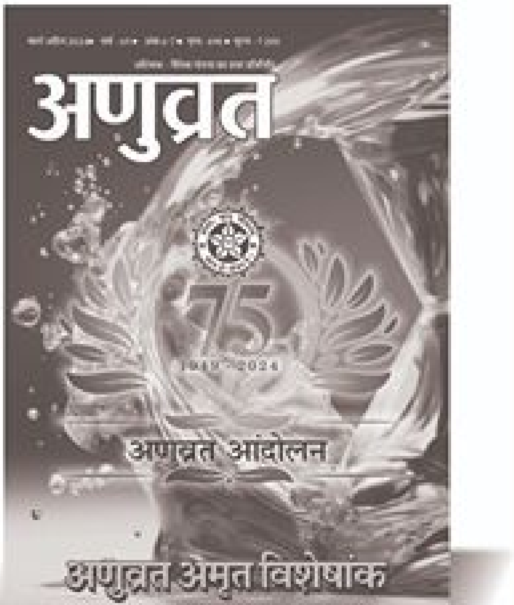

अणुव्रत अमृत विशेषांक

पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'। हमारा विनम्र प्रयास रहा कि इस विशेषांक को पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बनाया जा सके।

सुधी पाठकों से बेहतर इसकी परख और कौन कर सकता है कि हम अपने प्रयास में कितने सफल हुए! विशेषांक के सन्दर्भ में प्राप्त संवाद और प्रतिक्रियाएं एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं जो अंततः भावी प्रयासों को निखारने में योगभूत बनती हैं। अत्यल्प समय में ही हमें कुछ संदेश प्राप्त हुए हैं, हृदय से आभार! हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी अंकों में भी 'पाठक परख' प्रकाशन का यह क्रम जारी रहे।

विशद, श्रम और शिवसंकल्पजन्य पाठ्य सामग्री

अणुव्रत आंदोलन के अणुव्रत अमृत महोत्सव पर केन्द्रित 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है। नौ खंडों में सुविन्यस्त पाठ्यसामग्री के माध्यम से इसमें अणुव्रत की ऐतिहासिक विकास-यात्रा से परिचय कराया गया है। इसके साथ ही अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्षों का जीवंत इतिहास प्रस्तुत किया गया है। अणुव्रत के दर्शन को तथ्यवार, रोचक और सुग्राह्य शैली में विवेचित किया गया है। अणुव्रत को एक आदर्श जीवनशैली के रूप में पृष्ठ दर पृष्ठ उच्चालोकित करके इस अंक को न केवल पठनीय अपितु संग्रहणीय भी बनाया गया है। मूल्यवती मननीय उदात्त सुचिन्त्य सामग्री को एक विपुलकाय ग्रंथ में समाहित करना आसान कार्य नहीं था, पर विशेषांक के सुधी सम्पादक संचय जैन और उनकी अणुव्रत-समर्पित टीम ने यह दुष्कर कार्य अपने विवेक और अहर्निशि श्रम से संभव कर दिखाया है। इस हेतु वे सभी साधुवाद के पात्र हैं।

कीर्तिशेष गणाधिपति आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित, कीर्तिशेष आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रोन्नत और वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा पालित-पोषित अणुव्रत आंदोलन अब एक सार्वभौमिक जीवनशैली और एक वैश्विक आचार संहिता का पर्याय बन चुका है। व्यष्टि और समष्टि के सकारात्मक बदलाव, उसके सुधार का व्यवहार्य साधन बन चुका है। "सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा" - अणुव्रत का यह बोध-उद्घोष यत्र-तत्र-सर्वत्र दिग्-दिगन्त में अनुगूँजित हो रहा है।

इतनी विशद, श्रम और शिवसंकल्पजन्य पाठ्य सामग्री, नयनाभिराम सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति - ये विशेषांक को एक विशेष भास्वरता प्रदान करते हैं। एक 'कम्पैन्डियम' के रूप में यह विशेषांक अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण प्रकल्प उपक्रम है। बस, अणुव्रत को एक अनुकरणीय जीवनशैली के रूप में प्रत्येक व्यक्ति, महिला-पुरुष, बाल-वृद्ध, मनसा-वाचा-कर्मणा अपनाये, 'संयमः खलु जीवनम्' को आत्मसात् कर आचरण में लाये, तभी लोक मंगल के पथ पर हम सब प्रशस्त हो सकेंगे।

-डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', जयपुर

अणुव्रत दर्शन का संग्रहणीय विशेषांक

आचार्य तुलसी ने चरित्र निर्माण की प्रक्रिया के रूप में 'अणुव्रत' आंदोलन शुरू किया था जिसमें उन्होंने नैतिक उन्नति का आधार नैतिक विचार माना था। 75 वर्ष बाद आज भी यह सामयिक बना हुआ है। पिछले कुछ समय से अणुव्रत के लिए समाज में एक नया उत्साह बना है जिसको बढ़ावा देने में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी 'अणुविभा' की पत्रिका 'अणुव्रत' का भी बड़ा योगदान है।

'अणुव्रत' पत्रिका का मार्च-अप्रैल 2024 का अत्यंत सुंदर भारी-भरकम 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' हमारे हाथ में है। जब विषय-वस्तु ऊँचे दर्जे की हो और उसी के अनुरूप उसकी साज-सज्जा वाली छपाई हो तो किसी भी पत्रिका के स्वरूप में चार चाँद लगना स्वाभाविक ही है। ऐसा इस पत्रिका के इस विशेषांक के साथ भी हुआ है। लगभग 500 पेजों की पठनीय

सामग्री जुटाना आसान काम नहीं है, मगर इसके संपादक संचय जैन ने सह संपादक मोहन मंगलम के साथ मिल कर यह कर दिखाया है।

यह विशेषांक एक प्रकार से अणुव्रत आंदोलन का संदर्भ ग्रंथ बन गया है जो समुदाय के पाठकों से बाहर के अध्येताओं के लिए भी रुचिकर और उपयोगी ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत करता है। चिंतनपूर्ण, मगर सहज और प्रखर आलेखों ने इसे समृद्ध बनाया है जिससे निश्चय ही अणुव्रत आंदोलन को निरंतरता और गति मिलेगी।

अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता आचार्य तुलसी ने शुरू से ही स्पष्ट कर दिया था कि अणुव्रत किसी सम्प्रदाय विशेष का आग्रह नहीं है, वह मानव मात्र के लिए है। उसे किसी भी धर्म, जाति, वर्ग का व्यक्ति अपनी नैतिक बेहतरी के लिए अपना सकता है। यह एक मानव धर्म है जो सभी को अपने में समेटे हैं। यह संग्रहणीय अंक इसी अवधारणा की पुष्टि करता है।

-राजेन्द्र बोड़ा, जयपुर

अणुव्रत आंदोलन अणुव्रत की 75 साल की यात्रा को समर्पित

एक पत्रिका जो पिछले सात दशक से हिंदी साहित्य में एक खास सोच को लेकर निकल रही है, वह है 'अणुव्रत' जो अहिंसक नैतिक चेतना का प्रबल प्रतिनिधित्व करती है। कभी आचार्य तुलसी तथा आचार्य महाप्रज्ञ जी के नेतृत्व में 'अणुव्रत' आंदोलन सारे देश में घूमता था। उसके 75 वर्ष पूरे होने पर पत्रिका का 500 पृष्ठ का एक विशेष ग्रंथनुमा अंक प्रकाशित किया गया है - अणुव्रत अमृत विशेषांक।

इसके संपादक श्री संचय जैन हैं जिनकी मेहनत से इतनी रंगदार भव्य पत्रिका प्रकाशित हुई है। पत्रिका की डिजाइन, इसमें प्रस्तुत सामग्री तथा साहित्य-संस्कृति के साथ-साथ अणुव्रत की 75 साल की यात्रा को समर्पित यह ग्रंथनुमा प्रस्तुति मन को छू लेती है। इसमें आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी तथा आचार्य महाश्रमणजी के प्रेरणा पाथेय को प्रकाशित किया गया है। इसके साथ-साथ ही हिंदी के वरिष्ठ लेखकों के साथ-साथ उन लेखकों को भी समाहित किया गया है जिन्होंने अणुव्रत के साथ-साथ अपना सफर भी तय किया है।

इनमें राजस्थान पत्रिका के संपादक श्री गुलाब कोठारी, डॉ. सोहनलाल गांधी तथा मेरे स्वयं के अतिरिक्त अन्य लेखक भी शामिल हैं जिन्होंने समय-समय पर अणुव्रत के साथ कार्य किया है।

खूब-खूब अनुमोदना। Great work...

-हीरालाल मालू, बेंगलुरु

हिंदी साहित्य के लिए ऐसी पत्रिकाओं की एक खास पहचान रही है तथा इस पहचान के अंतर्गत यह पत्रिका आज एक पहल इस अर्थ में भी करती है कि अणुव्रत जैसा आंदोलन भारतीय समाज को बदल सकता है क्योंकि यह छोटे-छोटे प्रयोग का आंदोलन है। इसने शांति, समाज सुधार तथा आपसी भाईचारे के लिए आचार्य महाप्रज्ञ जी की शख्सियत के साथ जुड़कर एक नया रास्ता 'अहिंसा यात्रा' का तय किया था।

देश के हर कोने में धवल सेना ने जिस तरह से शांति का मार्च किया, वह अद्भुत है। अब 75 वर्षों का पूरा का पूरा विवरण इस पत्रिका के रंगीन पन्नों पर प्रस्तुत हुआ है। इसके लिए अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर तथा संपादक श्री संचय जैन के साथ पूरी टीम बधाई की पात्र है।

इस अद्भुत विशेषांक पर मैं बधाई प्रेषित करता हूँ। हालाँकि मैं भी इस आंदोलन के साथ पिछले 35 वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ परंतु अणुव्रत आंदोलन पर यह अमृत विशेषांक अपनी पहचान आप रखता है तथा इसका हिंदी साहित्य जगत में स्वागत होना ही चाहिए। यह एक अद्भुत सुरक्षित रखी जाने वाली पत्रिका है जो हमें सिखाती है कि जिंदगी में अहिंसा के साथ अणुव्रत की फिलोसॉफी के साथ जिया जा सकता है।

-डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू, जयपुर

शिक्षक की तरह है विशेषांक

हर माह की तरह इस माह भी मुझे 'अणुव्रत' पत्रिका प्राप्त हुई। मैं बड़ा प्रसन्न हुआ कि अणुव्रत विशेषांक की कड़ी में यह अणुव्रत अमृत विशेषांक भी मेरे पास है। 'अणुव्रत' पत्रिका के इस विशेषांक में अणुव्रत आंदोलन का रोचक इतिहास समाहित है और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के प्रकल्पों का वर्णन भी है। जिस प्रकार एक अच्छा साहित्य कई अच्छे मित्रों के बराबर होता है, उसी प्रकार यह विशेषांक अणुव्रत दर्शन, अणुव्रत आंदोलन एवं उसकी गतिविधियों को समझने के लिए एक शिक्षक और अणुव्रत प्रचारक की भूमिका निभाएगा।

यह विशेषांक हमारे पास होना हमारे लिए गौरव की बात है। मैं विशेष धन्यवाद इस पत्रिका के संपादक और सह संपादक महोदय का करना चाहूँगा जो हमें सदैव प्रेरित करते रहते हैं।

-अभिषेक कोठारी, भीलवाड़ा

अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद। अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम का आयोजन शाहपुर उर्दूशाला में किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री प्रकाश धींग ने स्वागत भाषण किया।

परामर्शक जवेरीलाल संकलेचा ने मेमोरी पावर के प्रयोग करवाये। उपाध्यक्ष सुरेंद्र लुनिया ने अणुव्रत के उद्देश्यों को विस्तार से बताया। मंत्री डिम्पल श्रीमाल ने अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स की जानकारी देते हुए निर्धारित समय से अधिक मोबाइल स्क्रॉल नहीं करने का संकल्प दिलाया। संगठन मंत्री मुकेश पोखरणा ने प्रत्येक मंगलवार को संयम दिवस के तीन नियम के संकल्प करवाये। विद्यालय के आचार्य अकरम भाई ने अणुव्रत के नियमों की सराहना करते हुए अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने की भावना व्यक्त की। आचार्य अस्माबेन ने कहा कि अणुव्रत के नियम किसी भी धर्म-संप्रदाय के लिए नहीं बल्कि मानवीयता के लिए हैं। इन नियमों का पालन हम कर सकते हैं। आभार ज्ञापन शर्मिला बोराणा ने किया।

चेन्नई बुक फेयर में अणुव्रत का स्टॉल

चेन्नई। अणुव्रत समिति की ओर से चेन्नई बुक फेयर में अणुव्रत एवं मानवीय मूल्यों से संबंधित साहित्य की प्रदर्शनी और

बिक्री के लिए बुक स्टॉल लगाया गया। तमिलनाडु सरकार के खेल मंत्री उदयनिधि स्टालिन ने 917 बुक स्टॉलों से सजे बुक फेयर का उद्घाटन 3 जनवरी को किया। विशिष्ट अतिथि तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य प्यारेलाल पितलिया, नक्षी कुपुस्वामी एवं विशिष्ट जनों की उपस्थिति में फीता खोलकर स्टॉल का शुभारम्भ हुआ। महेन्द्रकुमार चडेरा प्रथम क्रेता बने। इस स्टॉल में हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल भाषा में जीवनोपयोगी पुस्तकों के साथ आगमों का प्रदर्शन किया गया। प्रथम दिन जैन विश्व भारती अध्यक्ष अमरचन्द लूंकड़, अणुविभा उपाध्यक्ष माला कातरेला, अणुव्रतसेवी सम्पतराज चोरड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया, मंत्री स्वरूप चन्द दाँती, सहमंत्री अशोक छल्लाणी, संगठन मंत्री कुशल बांठिया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड, तनसुख नाहर, महिला मण्डल अध्यक्ष लता पारख, मंत्री हेमलता नाहर, सुभद्रा लुणावत, उषा आंचलिया समेत अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। 21 जनवरी तक चले बुक फेयर में अनेक व्यक्तियों ने पुस्तकें खरीदीं तथा अणुव्रत समिति की इस पहल की सराहना की।

जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम

गाजियाबाद। अणुव्रत समिति ने 1 अप्रैल को जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम का आयोजन निपुण सैफरॉन वैली सोसायटी के क्लब हाउस में किया। समिति की अध्यक्ष कुसुम

सुराणा ने कहा कि जीवन हमें दुबारा नहीं मिलता। इसे उत्कृष्ट और सर्वश्रेष्ठ बनाने के कई घटक हैं। जैसे भाषा, श्वास, इंद्रियां, आसन, प्राणायाम, सूक्ष्म यौगिक क्रियाएं, ध्यान, कायोत्सर्ग और शरीर विज्ञान। प्रेक्षाध्यान के बारे में ममता बांठिया ने बताया। राज गुनेचा ने महाप्राण ध्वनि के साथ ध्यान का प्रयोग करवाया।

विद्यालय परिसर में अणुव्रत प्रदर्शनी

अजमेर। सागर जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय के 96वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर विद्यालय परिसर में तीन दिनों तक अणुव्रत प्रदर्शनी लगायी गयी। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अजमेर के निवर्तमान प्राचार्य तथा बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. बी. एस. कर्णावट ने की। अजमेर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बी. एल. सामरा विशिष्ट अतिथि थे। विद्यालय में प्राचार्य अनीता जैन एवं संस्था के मंत्री रविन्द्र महनोत ने अतिथियों का स्वागत किया। गणमान्य अतिथियों, स्थानीय नागरिकों के साथ ही विद्यालय के

सैकड़ों छात्र-छात्राओं और स्टाफ ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा अणुव्रत गीत का संगान किया। इस दौरान छात्रों को विद्यार्थी वर्गीय अणुव्रत की जानकारी दी गयी।

20 फरवरी को निम्बार्क पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीजयकृष्णजी देवाचार्य ने अणुव्रत प्रदर्शनी का अवलोकन किया और अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ और आचार्य श्री महाश्रमण के अहिंसा एवं विश्व शांति के क्षेत्र में अमूल्य योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि समूची दुनिया तथा संपूर्ण मानवता के प्रति उनका योगदान अविस्मरणीय है। निम्बार्क पीठाधीश्वर के सान्निध्य में अजमेर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बी. एल. सामरा का नागरिक अभिनंदन भी किया गया।

नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित

हिसार। अणुव्रत समिति की ओर से 10 मार्च को गाँव मंगाली में पाँचवां नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर लगाया गया। इसमें 265 लोगों की आँखों की जाँच की गयी तथा इनमें से 50 रोगियों का चयन ऑपरेशन के लिए किया गया। 80 मरीजों को चश्मे के नंबर दिये गये। शिविर में मरीजों को आँखों की दवा नि:शुल्क दी गयी। शिविर का शुभारंभ श्री बालाजी गौशाला के वेदप्रकाश सिंघल ने किया। समिति अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल ने गीतांजलि अस्पताल की वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. मंजुला और डॉ. दीपक गुप्ता तथा गाँव के गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। शिविर के आयोजन में समाजसेवी प्रधान नरेश सिंघल का विशेष सहयोग रहा।

सूर्य नमस्कार के साथ जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये

राजसमन्द। अणुविभा की स्कूल विद ए डिफरेंस प्रायोजना का एक विशेष कार्यक्रम जीवन विज्ञान विद्यालयों में "भावात्मक शिक्षा" हेतु संचालित किया जा रहा है। प्रायोजना के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने बताया कि इस शृंखला में 15 फरवरी को राजसमन्द जिले व जिला मुख्यालय के सबसे बड़े राजकीय सीनियर सेकण्डरी स्कूल, कांकरोली में प्रातःकाल सूर्योदय के साथ राजस्थान सरकार के निर्देशानुसार "सूर्य ससमी" पर आयोजित सूर्य नमस्कार सत्र में लगभग 1300 विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों ने सूर्य नमस्कार किया। इस दौरान अणुव्रत विश्व भारती, राजसमन्द मुख्यालय द्वारा बच्चों को जीवन विज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग प्रशिक्षक जगदीश बैरवा ने कराये। उन्होंने स्वस्थ व संतुलित जीवन सहित स्वभाव परिवर्तन व आदतों के परिष्कार की अवधारणा को समझाते हुए सम पादासन, कोणासन, पाद हस्तासन, महाप्राण ध्वनि व स्मृति विकास जैसे प्रयोगों से बालकों को परिचित कराया। इस अवसर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी रवीन्द्र कुमार तोमर, सहायक निदेशक शिक्षा बजरंगलाल, जिला शिक्षा अधिकारी राजेंद्र गग्गड़ तथा प्रधानाचार्य प्रमोद पालीवाल की उपस्थिति प्रेरक रही।

मंत्रियों व विधायकों को 'अणुव्रत' पत्रिका भेंट

अणुविभा के पर्यावरण जागरुकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन ने केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, राजस्थान सरकार में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा, बीकानेर पश्चिम के विधायक जेठानंद व्यास तथा डूंगरगढ़ के विधायक ताराचंद सारस्वत को अणुव्रत पत्रिका भेंट की।

'नैतिक मूल्यों का अवतरण' पर सेमिनार

उधना। मुनिश्री उदित कुमार की सन्निधि में 'नैतिक मूल्यों का अवतरण' विषयक सेमिनार का आयोजन हुआ। सेमिनार के मुख्य अतिथि असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि नैतिक मूल्यों के अवतरण हेतु आचार्य श्री तुलसी रचित अणुव्रत गीत काफी है। लोग प्रतिदिन प्रातः अणुव्रत गीत के एक-एक शब्द पर गहराई से विमर्श करें तो उनके जीवन में नैतिकता का अवतरण अपने आप हो जाएगा।

मुनिश्री उदित कुमार ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से 'संयमः खलु जीवनम्' का सूत्र दिया। वस्तुतः संयम से ही नैतिक मूल्य जीवन में अवतरित हो सकते हैं। नैतिक मूल्यों के अवतरण हेतु भीतर में श्रद्धा आवश्यक है। उधना तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने स्वागत वक्तव्य दिया। अनुराग कोठारी ने राज्यपाल का परिचय दिया। संचालन सभा के मंत्री सुरेश चपलोत ने किया। राज्यपाल का मोमेंटो और साहित्य आदि से सम्मान किया गया।

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai • Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

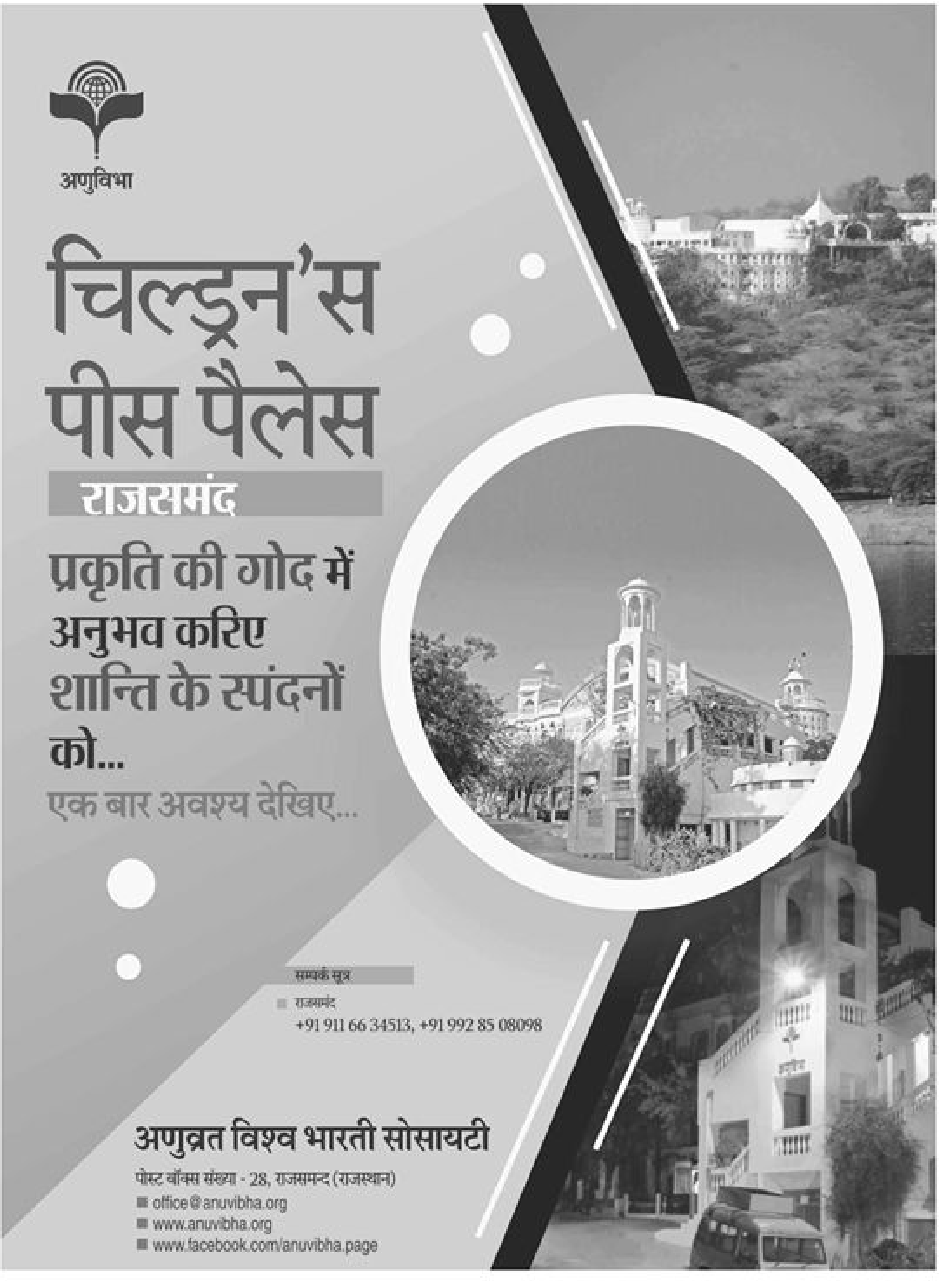
अणुविभा
चिल्ड्रन'स
पीस पैलेस
राजसमंद
प्रकृति की गोद में
अनुभव करिए
शान्ति के स्पंदनों
को...
एक बार अवश्य देखिए...
सम्पर्क सूत्र
राजसमंद
+91 911 66 34513, +91 992 85 08098
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
पोस्ट बॉक्स संख्या - 28, राजसमन्द (राजस्थान)
office@anuvibha.org
www.anuvibha.org
www.facebook.com/anuvibha.page

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
May, 2024

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2024-26
Licence No. U(C)-215/2024-26
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/04/2024
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - संचय जैन